२१८
कहानी

श्री मुक्तिहर नागरी भण्डार
क्रमांक ७०५६

२१८
महात्मा

नागरी
क्रमांक ७०९६

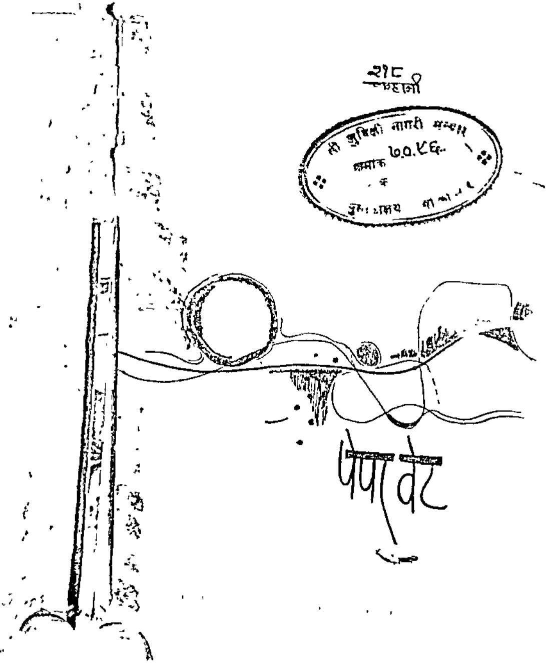

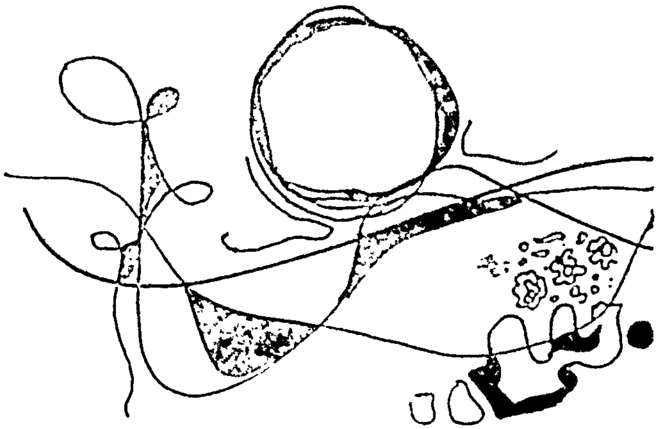

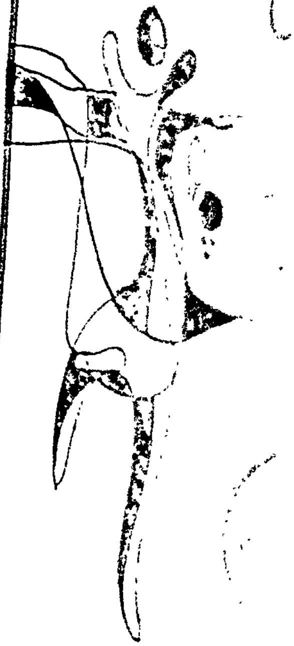

राजकमल प्रकाशन

दिल्ली-६ पटना-६

२१८
कहानी

गिरिराज किशोर

# पेपरवेट

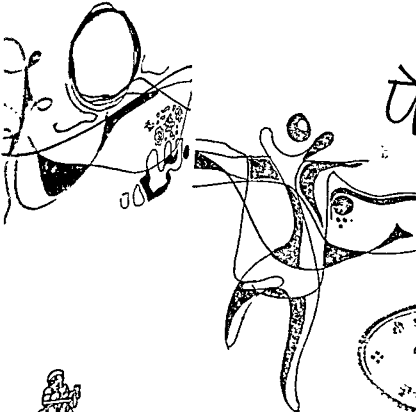

श्री जुबिली नागरी भण्डार
क्रमांक ६०.९६

मल प्रकाशन
पटना-६

© १९६७, गिरिराज किशोर, कानपुर
प्रथम संस्करण : १९६७

प्रकाशक :
राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड
८, फ़ैज़ बाज़ार, दिल्ली-६

मूल्य : ३.५०

मुद्रक :
नवीन प्रेस
नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली-६

'पेपरवेट' में १९६४ और १९६६ के बीच की ही कहानियां हैं। १९६६ के उत्तरार्ध के बाद की कहानियां अगले कहानी संग्रह में देने की मान है।

१९६६ के उत्तरार्ध के बाद जो कहानियां लिखी गई हैं उनको लिखते समय मैं बराबर महसूस करता रहा हूँ कि कहानियाँ लिखना धीरे-धीरे कठिनतर होता जा रहा है। इसका कारण जीवन के उलझाव और कुंठाएँ तो हैं ही, साथ ही अपनी दृष्टि भी है जो अपनी ही अन्वेषक बनती जाती है और निर्ममता के साथ सदा चीरफाड़ करती रहती है। जब व्यक्ति यह जानता रहता है कि उसके अपने ही अन्दर एक ऐसा कांटा लगा हुआ है, जो कुछ भी वह करता है उसका लेखा-जोखा उस काँटे पर आता रहता है, तो समस्याओं का कोई ओर-छोर नहीं रहता।

इस संग्रह की कहानियों के बारे में कुछ कहना उचित नहीं लगता क्योंकि जब कहानियां ही सामने हैं तो उनके बारे में लेखक का कुछ कहना कितना निरर्थक होगा।

कानपुर विश्वविद्यालय,
कानपुर

*गिरिराज किशोर*

100४६४

मीरा को

## क्रम


| | |
|---|---|
| चूहे | ९ |
| पगडंडियाँ | २५ |
| नया चश्मा | ३७ |
| अलग-अलग कद के दो आदमी | ४५ |
| परछाइयाँ | ५८ |
| तिलिस्म | ६९ |
| संगत | ७६ |
| निमंत्रण | ८४ |
| फ्रॉक वाला घोड़ा, निकर वाला साईस | ९५ |
| पेपरवेट | १०४ |

# चूहे

आभा शीशे में थी। सविता कमरे के दरवाज़े से हटकर कुरसी पर जा बैठी। घुटने मोड़कर पेट में दबा लिए। हिल-हिलकर गुनगुनी आवाज़ में पढ़ने लगी, "भविष्यवाणी का मत है कि [illegible] काली कोलाहली…" लगने लगी खिड़की का दरवाज़ा थोड़ा-सा खिसका कमरे अन्दर [illegible]। आभा उसी के कमरे की ओर आ रही थी। उसने आवाज़ और तेज़ कर दी……कन्या-[illegible] भगवान का अभिशाप एक पारम्परिक आदर्शों का [illegible] है…" कहीं वन्दना उसके होंठों पर [illegible] होगी। [illegible] [illegible] होती गई थी।

आभा हॉस्टल में थी। [illegible] [illegible] नहीं थी। [illegible] [illegible] को कुछ नहीं थी — [illegible] [illegible] हुए [illegible] [illegible] हैं [illegible] नहीं, [illegible] [illegible] [illegible]

चूहे
पगडंडियाँ
नया चश्मा
अलग-अलग कद के दो आदमी
परछाइयाँ
तिलिस्म
संगत
निमंत्रण
फ्रॉक वाला घोड़ा, निकर वाल
पेपरवेट

लिए किसने कहा, जाइए यहाँ से।' लेकिन उसने कुछ धीमी आवाज में कहा, "किसने कहा था इतने पैदा करने के लिए?"

अम्मा उसकी बात का जवाब देने के बजाय सविता की कुरसी के पास आ खड़ी हुईं। क्षण-भर के लिए सविता का चेहरा हिले हुए पानी की सतह-सा हो गया। अम्मा ने उसकी ओर एक नजर देखा और फिर बोलीं, "चल, ऊपर चल! पढ़ना ही है तो ऊपर चलकर पढ़ना। इस समय यहाँ नहीं बैठने दूँगी। यहाँ अकेली···" बोलती-बोलती वे रुक गईं।

उसकी नाक की टुस्सी सुर्ख हो गई थी। ठुड्डी के नीचे का भाग काँप रहा था। रुककर बोली, "अम्मा, जिस तरह की बातें आप कर रही हैं, इस सबका क्या उन छोटी-छोटी पर अच्छा असर पड़ेगा? पूरे साल तो घर का ही काम किया है, फरवरी का महीना आ गया···पढ़ूँ या न पढ़ूँ! कहिए किताबों में आग लगा दूँ···" अम्मा का पारा चढ़ता जा रहा था। सविता बिना रुके बोलती रही, "मैं तो बुरी हूँ ही, इन छोटियों को देखिएगा, क्या आसमान के तारे तोड़-तोड़कर लाती हैं। वह बेचारा रंजी नोट्स-वोट्स लाकर दे देता है, वही आँखों में खटकता है!"

"अच्छा, ज्यादा चबड़-चबड़ मत कर, बड़ा आया बेचारा! शुरू में सब बेचारे ही होते हैं। मैं सब जानती हूँ, तुम दोनों कैसे बेचारे हो! हमने भी दुनिया देखी है।"

सविता जोर से हँस दी। हँसती हुई ही बोली, "अच्छा बाबा, हम सबसे बुरे हैं, अब तो पीछा छोड़िए।"

अम्मा के चेहरे पर कुछ ऐसा भाव आ गया था कि सविता के गाल पर बिना थपड़ जड़े नहीं मानेंगी। बड़े जोर से दाँत किचकिचाए। सविता ने तुरन्त गम्भीर होकर कहा, "मैंने कब कहा था, मुझे कॉलेज में पढ़ने भेजिए, अपने-आप ही तो पढ़ने भेजा। मुझे कुछ करना होगा तो कॉलेज में नहीं कर सकती, पता भी नहीं चलेगा।"

"वहाँ चाहे जो करती घूम, यहाँ नहीं हो सकता। यहाँ मैं जैसा

आठ चलते-फिरते नज़र आते हैं। सबको पलंग पर ही बैठे-बैठे पानी का गिलास चाहिए, मैं ही नौकरानी की तरह घूमती रहती हूं···" उन्होंने ज़ोर से रानी को पुकारा—"ऐ रानीऽऽ, तू ही मर जा आकर···" कमरे की ओर तिरछी नजरों से देखकर कहा, "तुझे तो इसी समय एम्मए पास नहीं करना—जब एम्मए करेगी तभी इतने नखरे दिखाइयो।"

सविता दांत भींचकर हल्के-से मुसकरा दी।

पन्ना पलटकर उसने 'ग्रुप्स' पढ़ने शुरू किए—"ग्रुप्स या समूह दो तरह के होते हैं, एक वे जो सीधे सम्बन्ध यानी 'डाइरेक्ट कॉण्टेक्ट' के आधार पर बनते हैं, जैसे परिवार, पड़ोसी···।" पढ़कर उसने फिर बाहर की ओर झांका, अम्मा शायद उसके कमरे से बिल्कुल सटी खड़ी थीं। किसी से बात करने का प्रभाव उत्पन्न करते हुए धीमे से कहा, "जैसे प्रेमी-प्रेमिका अम्मा-बाबूजी।" होंठ ज़रूरत से ज्यादा फैल गए।

आगे पढ़ना शुरू किया—"दूसरी तरह का ग्रुप वह होता है जिसका आधार परोक्ष-सम्बन्ध या इन-डाइरेक्ट कॉण्टेक्ट होता है, जैसे नगर, राष्ट्र आदि।" अन्तिम वाक्य कहते-कहते वह फुसफुसाने लगी थी।

अम्मा ने ढुके हुए दरवाज़े को ढकेलते हुए पूछा, "ए सविता, कौन है? रंजी?" सविता ने झुंझलाने के स्वर में कहा, "यहां कहां है रंजी, हर वक़्त मेरे ही पास बैठा रहता है न।"

"नाक पर मक्खी नहीं बैठने देती, पूछा ही तो था। मां-बाप हैं तो पूछेंगे ही, हमारा भी तो फरज़ है बेटा-बेटी को ऊंच-नीच से रोकें···"

सविता ने अपनी गम्भीरता बनाए रखते हुए कहा, "अच्छा, मुझे लेक्चर न पिलाइये, पढ़ने दीजिए।"

"ऐ बेटी, पढ़ना ही पढ़ना तो है नहीं। घर का काम-काज भी देखना है···तू कमबख़्तों के घर में पैदा नहीं हुई, छोटे बहन-भाई भी तुझे ही देखकर रंग बदलेंगे। शाम का समय हो गया, चलकर ऊपर बैठ। तू अकेली होती तो कुछ करती-घूमती, मैं रोकती तो कहती।"

सविता के चेहरे से लगा, चिल्लाकर कहेगी—'आपको यहां आने के

लिए किसने कहा, जाइए यहाँ से।' लेकिन उसने कुछ धीमी आवाज में कहा, "किसने कहा था इतने पैदा करने के लिए ?"

अम्मा उसकी बात का जवाब देने के बजाय सविता की कुरसी के पास आ खड़ी हुईं। क्षण-भर के लिए सविता का चेहरा हिले हुए पानी की सतह-सा हो गया। अम्मा ने उसकी ओर एक नजर देखा और फिर बोलीं, "चल, ऊपर चल ! पढ़ना ही है तो ऊपर चलकर पढ़ना। इस समय यहाँ नहीं बैठने दूँगी। यहाँ अकेली···" बोलती-बोलती वे रुक गईं।

उसकी नाक की टुस्सी सुर्ख हो गई थी। ठुड्डी के नीचे का भाग काँप रहा था। रुककर बोली, "अम्मा, जिस तरह की बातें आप कर रही हैं, इस सबका क्या उन छोटी-छोटी पर अच्छा असर पड़ेगा ? पूरे साल तो घर का ही काम किया है, फ़रवरी का महीना आ गया···पढ़ूँ या न पढ़ूँ ! कहिए किताबों में आग लगा दूँ···" अम्मा का पारा चढ़ता जा रहा था। सविता बिना रुके बोलती रही, "मैं तो बुरी हूँ ही, इन छोरियों को देखिएगा, क्या आसमान के तारे तोड़-तोड़कर लाती हैं। वह बेचारा रंजी नोट्स-वोट्स लाकर दे देता है, वही आँखों में खटकता है !"

"अच्छा, ज्यादा चवड़-चवड़ मत कर, बड़ा आया बेचारा ! शुरू में सब बेचारे ही होते हैं। मैं सब जानती हूँ, तुम दोनों कैसे बेचारे हो ! हमने भी दुनिया देखी है।"

सविता ज़ोर से हँस दी। हँसती हुई ही बोली, "अच्छा बाबा, हम सबसे बुरे हैं, अब तो पीछा छोड़िए।"

अम्मा के चेहरे पर कुछ ऐसा भाव आ गया था कि सविता के गाल पर बिना थपत जड़े नहीं मानेंगी। बड़े ज़ोर से दाँत किचकिचाए। सविता ने तुरन्त गम्भीर होकर कहा, "मैंने कब कहा था, मुझे कॉलेज में पढ़ने भेजिए, अपने-आप ही तो पढ़ने भेजा। मुझे कुछ करना होगा तो कॉलेज में नहीं कर सकती, पता भी नहीं चलेगा।"

"यहाँ चाहे जो करती घूम, यहाँ नहीं हो सकता। यहाँ मैं बैठ

चाहूँगी वैसा ही होगा, यह बतलाए देती हूँ। अपनी और बच्चों की ज़िन्दगी ख़राब नहीं होने दूँगी।" सविता फिर हँसने को हुई, लेकिन अपने-आपको गम्भीर बनाए रखते हुए कहा, "आपके बच्चों को क्या हुआ जा रहा है, मुझसे ऐसा ही खतरा है तो मेरा गला घोंट दीजिए।" उसने अपनी गरदन अम्मा के सामने झुका दी। कनखियों से उनकी ओर देखती रही।

अम्मा स्तब्ध-सी खड़ी रह गई थीं। फिर रोनी आवाज में बोलीं, "तू क्या कहती है बेटी, मेरा भाग ही ख़राब है। मुझे गला ही घोंटना होता तो पैदा करते ही अँगूठा रख देती। पैदा किया है तो घर-बाहर सबकी सुनूंगी। मैं तेरे बीच में बोलूँ तो सौ जूते मारना···" वे बड़बड़ाती हुई बाहर निकल गई।

सविता फिर अपनी कुरसी पर जा बैठी। पलकें बन्द करके दिमाग़ को आराम देने का प्रयत्न किया। आँखें बन्द किए-ही-किए, उसके चेहरे पर उलझन का-सा भाव आ गया। अम्मा बाहर सहन में ही मौजूद थीं। इधर-से-उधर चक्कर काट रही थीं। सविता चुपचाप बैठी रही, खुली किताब बन्द कर दी। कुछ देर बाद अम्मा ने पुकारकर कहा, "मैं चल रही हूँ, कुछ शर्म-लिहाज़ हो तो ऊपर आ जाना।" जीने तक जाकर वे लौट आई और कमरे की खिड़की के सामने खड़े होकर बोलीं, "किसी दिन तेरे उस चहेते को घर से बाहर न कर दिया तो मेरा भी नाम नहीं··· फिर कहती फिरेगी, मेरी बेइज्ज़ती कर दी।" अम्मा फिर धम्म-धम्म करती जीने पर चढ़ गई।

सविता ने खिड़की का दरवाज़ा और खोल दिया। अपने तनाव को कुछ कम करने के लिए वह बार-बार आँखें बन्द कर लेती थी। कभी-कभी पलकों के कस जाने पर, छोटी-छोटी लहरें उभर आती थीं। थोड़ी देर बाद पुस्तक पढ़ने का प्रयत्न किया। उसका वह प्रयत्न बनावट-सा लगा। लाचार होकर किताब एक ओर रख दी। दोनों हाथ खड़े करके, हथेलियों पर ठुड्डी रख ली और दरवाज़े की ओर देखने लगी। उसके

चेहरे की ऊब और अन्दर का तनाव, दोनों ही काफ़ी स्पष्ट थे।

दस-पन्द्रह मिनट तक उसी तरह बैठे रहने के बाद वह उठ खड़ी हुई। दरवाज़ा खोलकर ऊपर-नीचे, इधर-उधर झाँका, और बाहर वाले दरवाज़े पर जा खड़ी हुई। सड़क पर काफी लोग आ-जा रहे थे। हर राहगीर की नज़र उस पर पड़ती थी। कुछ लोग उसे दूर ही से देखते हुए आते थे, कुछ की नज़र उसके सामने से गुज़रते समय पड़ती थी और कुछ लोग काफ़ी आगे तक जाकर भी मुड़-मुड़कर देखते रहते थे। वह ढीठ बनी खड़ी रही। दो-तीन छोकरों ने दूर से ही देखकर सीटी बजाई। सीटी की आवाज़ से उसका तनाव कुछ कम हुआ। वह होंठों-ही-होंठों में मुसकरा दी। लड़के उसके सामने से गुज़रे तो वह बड़े गौर से उनकी ओर देखती रही। पहले तो उनमें से एक लड़का भोंडी तरह से मुसकराया फिर अपने-आप ही गम्भीर होकर तेज़ी से चलने लगा। दोनों साथियों ने भी अपनी चाल तेज़ कर दी। थोड़ी दूर तक जाने के बाद उन्होंने मुड़कर देखा, वह बराबर उनकी ओर देख रही थी। तीनों लड़कों के आँखों से ओझल हो जाने पर वह हल्का-सा मुसकराई। धीरे से कहा—"बेचारे!"

अम्मा ने उसे कमरे से निकलते हुए देख लिया था। छज्जे पर खड़ी कुछ देर तक इन्तज़ार करती रही। शायद ऊपर ही आ रही हो। वे नीचे उतर आईं। पहले तो आहट सुनकर सविता मुड़ी, लेकिन तुरन्त ही अपनी जगह पर जा खड़ी हुई। उसके कान अम्मा की ओर लगे थे। वह कनखियों से पीठ-पीछे की हर हरकत के साथ जुड़ी हुई थी। नीचे आकर अम्मा ने ज़ोर से पुकारा, "ऐ सविताऽऽ, सविताऽऽ! वहाँ खड़ी क्या कर रही है? क्यों मेरा जनम खराब करने पर लगी है, चल इधर!"

सविता हल्का-सा मुसकराई। उसी मुसकराहट को चेहरे पर और अधिक फैलाकर अम्मा की ओर देखा। क्षण-भर के लिए अम्मा को समझ नहीं आया, वे क्या करें। सविता धीमे-धीमे उनकी ओर बढ़ती रही। अम्मा की साँस फूलती-सी लगी। चिल्लाकर बोलीं, "वहाँ खड़ी क्या कर

रही थी ?" सविता खामोश रही। अम्मा के क्रोध का ठिकाना न रहा, उनके चेहरे से लग रहा था, वे उसका चेहरा नोंच लेंगी।

"पता है, इस तरह शाम को दरवाज़े पर कौन खड़ी होती हैं, तूने मेरी कुली उजाल दी। सारे महल्लेवाले कहेंगे···" अम्मा की बात का तुरन्त जवाब न देकर सविता ने सहज भाव से उनकी ओर देखा। आवाज को सहज बनाये हुए कहा, "मैं कहीं भाग थोड़े ही गई थी ?"

"भागने का मन है तो भाग जा, हमें तो दिखलाई दे रहा है, तू भागे विना थोड़े ही मानेगी। सबके चेहरों पर कालिख पोतकर जाएगी।"

सविता का चेहरा तमतमा आया। लेकिन अपने-आपको शान्त बनाए रखने का प्रयत्न करते हुए कहा, "रंजी का इन्तजार ही तो कर रही थी···" अम्मा के चेहरे पर एक नज़र डालकर फिर कहा, "उससे नोट्स दे जाने के लिए कहा था, अभी तक नहीं लाया। बड़ा ही लापरवाह लड़का है···!" उसके चेहरे से लगा, 'लापरवाह' कहते समय सविता की आँखों का भाव बदल गया है।

अम्मा बदहवास-सी हो रही थीं—"किसी और को चलाना, मैं सब जानती हूँ, नोट्स-वोट्स के बहाने क्या होता है···सही शाम से नीचे आकर बैठ जाती है। ऊपर बैठकर नहीं पढ़ा जाता, आने दे आज उसे।"

"क्या करेंगी आप उसका ! आप हमेशा यही समझती हैं, लड़का-लड़की मिलते ही वही सब-कुछ करने लगते हैं।" आवाज़ को थोड़ा और धीमा करते हुए कहा, "लड़के-लड़कियों के पास सिवाय उस सबके कुछ और होता ही नहीं।"

अम्मा ने सुन लिया था। दाँत भींचकर चिल्लाईं, "अरी बेशर्म, कुछ तो ज़बान को लगाम लगा। कैंची-सी चलाए जा रही है। तुझे इसीलिए पढ़ाया था, माँ से ऐसी-वैसी बातें करे···"

"आपने भी तो मुझे सब-कुछ कह लिया···" दूसरी ओर मुँह करके कहा, "रण्डी-वण्डी···!" उसके होंठ फैल गए थे।

अम्मा शायद थक गई थीं। दुहाई-सी देती हुई बोलीं, "हाय राम,

मेरी ज़बान कटकर गिर जाए, जो मैंने ऐसी बात कही हो। माँ पर ऐसे-ऐसे लाछन लगाएगी! आने दे अपने बाबूजी को, आज साफ़-साफ़ कह दूँगी। घर में या तो आपकी बेटी रहेगी या···। अपने-आप तो साहब-बहादुर दफ़्तर मे जाकर बैठ जाते हैं। मुझे इन कमबख़्तों के जूते खाने को छोड़ जाते हैं।"

सविता ने अपने कमरे मे घुसते हुए कहा, "तो साथ ही चली जाया करिए।"

उसने दरवाज़ा बन्द कर लिया। अम्मा दरवाज़े को घूरती रही। कमरे की खिड़की के पास जाकर बोली, "हाँ, हाँ, मैं भी चली जाया करूँगी। ये सब बातें उनसे ही कहूँगी···आज फ़ैसला होकर रहेगा, तेरी ज़बान न कतरवाई। इस घर मे रहेगी तो मेरी मर्ज़ी से रहना पड़ेगा, नहीं तो चली जा अपने रजी-मंजी के पास।"

सविता अन्दर जाकर अम्मा की बातों के प्रति एकदम ठण्डी हो गई थी।

●

अम्मा ऊपर नहीं गई थीं। वहीं सहन में खटर-पटर करती घूम रही थीं। रंजी आ गया।

"नमस्कार माताजी!"

अम्मा ने रजी की ओर देखने के लिए गरदन और आँखें दोनो एक साथ घुमाईं। खीचकर कहा, "नमस्कार!" तुरन्त ही उसकी तरफ़ से गरदन घुमाकर दूसरी ओर देखने लगी। रंजी एक कदम पीछे हट गया था। लड़का, लड़की के घर में वैसे ही सहमा रहता है। माताजी का मूड देखकर वह और अधिक सहम गया।

अम्मा ने ज़ोर से कहा, "अब तो दरवाज़ा खोलो···" दरवाज़ा खोलने की बात कहने के साथ ही उन्होंने रंजी पर भी नज़र डाली। रंजी के माथे पर पसीने की बूँदें थीं। वह अपनी टाई की नॉट हिला रहा था। अपनी तरफ़ देखने पर उसने खँखारते हुए अम्मा से पूछा, "क्या

बात है माताजी ?"

"उसी से पूछना···" सरसरी तौर पर जवाब देकर, दरवाज़ा खट-खटाती रहीं।

सविता ने झटके के साथ दरवाज़ा खोला। बिना अम्मा की ओर देखे मुसकराते हुए रंजी से कहा, "आओ···"

"आप शायद सो गईं थीं, माताजी काफ़ी देर से खटखटा रही हैं।" रंजी कनखियों से अम्मा की ओर देख रहा था।

अम्मा बीच ही में बोलीं, "बस, माता-वाताजी को रहने दो, अपना काम करो।"

सविता का चेहरा तन आया। लेकिन तुरन्त ही रंजी से हँसकर कहा, "अन्दर तो आओ, मैं तो बहुत देर से तुम्हारा इन्तज़ार कर रही हूँ, ज़रा जल्दी आना चाहिए था।"

अम्मा खड़ी-खड़ी घूम गईं। ज़ीने के पास जाकर ज़ोर से कहा, "जल्दी से ऊपर आ जाना। काम पड़ा है। कभी दरवाज़ा बन्द करके···" कुछ रुककर बोलीं, "बातें मिलाने लगे।"

सविता ने रंजी का हाथ पकड़कर अन्दर खींच लिया। अम्मा पांव पटकती हुई ज़ीने पर चढ़ गईं।

सविता के एकाएक हाथ पकड़कर खींच लेने के कारण मिनट-भर तो रंजी के मुँह से एक भी शब्द नहीं निकला, फिर कहा, "लीजिए नोट्स···"

सविता ने मुसकराते हुए माफ़ी माँगने की मुद्रा में कहा, "मैंने आपका हाथ पकड़कर अन्दर खींच लिया था, आपने बुरा तो नहीं माना ?"

"अरे नहीं, नहीं, कोई बात नहीं।" रंजी का चेहरा थोड़ा फैल गया।

छोटा मुन्ना हाथ में स्लेट लिए उसके कमरे में आ गया था। सविता ने उसकी ओर देखकर पूछा, "कहिए !" गुस्से से आँखें ऊपर चढ़ गईं।

"जीज्जी, हम तो तुम्हारे कमरे में बैठकर पढ़ेंगे।"

सविता ने अपना चेहरा और सख्त बनाते हुए कहा, "क्यों···ऊपर जगह नहीं है ?" वह बेचारा सहम-सा गया।

छोटा मुन्ना वहीं खड़ा रहा। सविता ने बाहर झांककर देखा, अम्मा छज्जे पर झुकी हुई थीं।

रंजी ने फिर कहा, "अच्छा मैं अब चलूं। नोट्स कॉलिज में लेती आइए, वहीं ले लूँगा।"

अम्मा घूमकर उस कमरे के सामने वाले कटहरे पर आ गई थीं। सविता ने ज़ोर से कहा, "कुछ देर तो बैठो, कॉलिज में तो बात ही नहीं होती···" इस बार रंजी ने भी गरदन झुकाकर छज्जे की ओर देखा। अम्मा पीछे की ओर हट गईं।

"मुझे भी जाकर पढ़ना है," रंजी का गला खरखरा आया था। उसने धीमे से कहा, "आपको माताजी बुला रही हैं।" मुन्ना आँखें गोल किए अपनी जीजी की ओर देख रहा था।

शायद अम्मा छज्जे पर से चली गई थीं। सविता ने हाथ जोड़कर रंजी से क्षमा-याचना की मुद्रा में कहा, "थैंक्यू, आपको बहुत तकलीफ हुई। बट यू डोण्ट माइण्ड ऑल दैट···"

रंजी ने जाते-जाते रुककर कहा, "आप कॉलिज में ही नोट्स ले लिया करें।"

सविता ने थोड़ा मुँह बनाया, "नहीं, लड़के बड़े बदतमीज़ होते हैं।" 'बदतमीज़' कहते हुए वह उसकी तरफ़ देखकर मुसकरा दी। बन्द होंठों के कारण रंजी के गाल फूल आए। आँखों में हल्का-सा शैतानी का भाव आ गया। सविता उसके चेहरे को उत्सुकता से देखने लगी।

वह बिना कुछ कहे जाने लगा तो सविता ने आग्रह से पूछा, "आप कुछ कह रहे थे ?" उसने टालना चाहा। लेकिन सविता के बार-बार कहने पर उसने धीमे से कहा, "जो बात आप लड़कों के बारे में कह रही थीं···मैं लड़कियों के घरवालों के बारे में सोच रहा था।" सविता को एकाएक झटका-सा लगा। फिर ज़ोर से हँस दी। रंजी क्षमा माँगकर

चला गया। अम्मा ज़ीने से उतर रही थीं। सविता ने जोर से पुकारकर कहा, "कल आना···"

वह दरवाज़े से बाहर निकल गया था।

अम्मा नीचे आकर बोलीं, "जाने ही क्यों दिया···?"

सविता ने तुरन्त जवाब दिया, "इतने पर तो यह हाल है, रख लेती तो···"

अम्मा बीच में ही बोलीं, "ओफ़्फ़ो, जबान है या हनुमानजी की पूंछ···मैं हारी, तुम जीती ! अब तो चलो ऊपर या अभी···कोई क्या मेरे जनम-करम में थूकेगा ! पढ़ाई हमारे जमाने में भी होती थी, लौण्डे-लपाड़ों को बुला-बुलाकर कोई घरों में नहीं बैठाता था···इन कमबख्तों को भी तो शरम नहीं आती, ऊँट की तरह मुंह उठाए लड़कियों के घर में घुसे चले आते हैं। बदतमीज कहीं के।"

सविता की आँखें फैल गईं। उसने अपनी मुसकराहट दबाकर कहा, "लड़कियों के घर वाले भी तो···।"

अम्मा की दोनों मुट्ठियां भिच गईं। उनकी समझ में नहीं आया, क्या जवाब दें। कुछ देर बाद बोलीं, "खड़ी क्या मुसकरा रही हो देवी, अब तो छाती जुड़ा गई···भेंट-मुलाकात हो गई···" अम्मा बुरी तरह से बौखला गई थीं।

"चलो, ऊपर चलकर मेरा अचार डालना !" मुड़कर सविता ने छोटे मुन्ने से कहा, "चलिए दूत महाराज, अब तो ड्यूटी खत्म हो गई।" अम्मा ने आँखें तरेरकर उसकी ओर देखा। सविता दूसरी ओर देखने लगी।

कमरे के बाहर वाली छत पर रानी, मुन्नी, राजू, बड़ा मुन्ना और नीता सहमे-से खड़े थे। बबलू पलंग पर लटा था। अम्मा को देखकर राजू, बड़ा मुन्ना और नीता सहमे-से पीछे को हट गए। रानी, मुन्नी ढीठ बनी खड़ी रहीं। अम्मा ने तुरन्त ललकारा—"यहाँ क्या तमाशा हो रहा है, गोल बाँधकर खड़ी हो गई···जाओ काम करो।"

सविता बबलू के गाल पर उँगली लगाकर उसे हिलाने लगी—"मेरा राजा बेटा कँउँ-कँउँ हँसता है···दुदुदु-दुदुदु, मीना-मीना किया।" बबलू मुँह से गूँ-गूँ करने लगा। सविता दबी नजरों से अम्मा की तरफ देख रही थी। अम्मा के चेहरे का भाव कुछ हलका होता-सा नजर आया। सविता ने बबलू को गोद में उठा लिया और 'मेरा राजा बेटा, मेरा राजा बेटा!' कहकर चूमने लगी। अम्मा हलके मूड में बोली, "कैसा जमाना आ गया, भाई को बेटा कहती है। हमारे जमाने में माँ-बाप के सामने अपने बेटे को भी बेटा नहीं कहते थे।"

सविता थोड़ा-सा मुसकराई और पूरी तरह से अम्मा की तरफ देखकर कहा, "इससे तेईस साल बड़ी हूँ, इतना छोटा भाई बेटे के बराबर ही होता है।"

अम्मा के चेहरे से लगा, हर बात की तरतीब उलट-पुलट हो गई है। सविता की बात का जवाब उनकी समझ में नहीं आया। क्षण-भर रुककर उनके मुँह से निकला—"हे राम, ऐसी बेशर्मी!"

सविता ने देखा, अम्मा गम्भीर हो गई हैं। खुशामदाना ढंग से बोली, "आप तो ज़रा-सा मज़ाक भी नहीं समझतीं, नाराज़ हो जाती हैं।"

"मुझे नहीं पसन्द मज़ाक-वज़ाक···" अम्मा ने बबलू को सविता की गोद से ले लिया और बड़बड़ाती हुई चली गईं, "उन्हीं अपने लगते-सगनों से मज़ाक किया कर।"

बबलू सविता की तरफ देखकर हँस रहा था। उसने जीभ निकाल दी। बाबूजी ज़ीने पर चढ़ रहे थे। अम्मा बबलू को कपड़े से ढँककर दूध पिला रही थी। सविता कमरे में चली गई।

•

रात को सविता बराबर वाले कमरे में पढ़ रही थी। मेज़ पर टाँगें फैलाकर घुटनों पर पुस्तक रखी हुई थी, कान बातों की तरफ थे।

बाबूजी समझाने के अन्दाज़ में कह रहे थे, "यह तुम्हारी कैसी

आदत होती जा रही है, हर वक्त सविता से नाराज रहती हो ! बराबर की लड़की है। कॉलेज में पढ़ती है। यह कैसे हो सकता है, मैं लोगों के कहने से उसका गला घोट दूं। बिना खुद देखे मैं कुछ नहीं कह सकता।"

अम्मा की आवाज तेज हो गई, "तुम तो तभी विश्वास करोगे, जब गली-महल्ले में कपड़े सूखेंगे···तब डुगडुगी बजाते घूमना।"

"ठीक है, मुझे डुगडुगी बजानी पड़ेगी तो बजा लूंगा।"

"मैं कहती हूँ, अगर अपनी इस लाड़ली को नहीं रोका तो सिर पर चढ़कर नंगी नाचेगी।"

सविता का चेहरा तमतमा आया। उसने पुस्तक उठाकर मेज पर रख दी। पांव नीचे उतार लिए, कुरसी के हत्थों पर हाथ टिकाकर उठने की मुद्रा में बैठ गई थी।

बाबूजी को गुस्सा आ गया था, "क्यों चक-चक कर रही हो, जो मुंह में आता है बकती जा रही हो।" उसने पुनः अपनी पीठ कुरसी से टिका ली।

बाबूजी ने बड़बड़ाने के स्वर में कहा, "उसे कुछ करना होगा तो न मैं रोक सकता हूँ न तुम।"

अम्मा ने कुछ देर तक जवाब नहीं दिया, फिर बोलीं, "देखिए जी, मैं कहे देती हूँ, या तो इसके हाथ पीले करके घर से धक्का दीजिए, नहीं तो मैं कुएँ में कूदकर प्राण दे दूंगी। कच्ची पाल है, इसकी मौज के वास्ते मैं उनका गला नहीं घोट सकती···मैं पूछती हूँ, कमरा बन्द कर-करके उस रंजी से ऐसी क्या बात होती है, जो हमारे सामने नहीं हो सकती ? भले घरों की लड़कियाँ लड़कों का हाथ पकड़ती हैं ? कुछ कह देता तो क्या होता ···?"

सविता फिर सीधी हो गई। उसके पाँव की उँगलियाँ ऊपर-नीचे होने लगीं। आँखों से लगा, वह बाबूजी की प्रतिक्रिया जानने के लिए उत्सुक है।

बाबूजी उठते हुए बोले, "नहीं समझ में आता तो दे दो कुएँ में कूद-

कर प्राण, मैं क्या कर सकता हूँ !"

अम्मा बड़बड़ाने लगी, "मैं मर जाऊँगी, तुम बाप-बेटी का तो पाप कटेगा। ये कमबख्त बच्चे ही धक्के खाते फिरेंगे।"

सविता को लगा, अम्मा सिसकने लगी हैं। बाबूजी उठकर सोने वाले कमरे मे चले गए। सविता आँखें बन्द करके पुन. कुरसी पर लेट-सी गई। कुछ देर तक तो अम्मा बड़बड़ाती रही। फिर घर सधवाने मे लग गईं। दो-तीन बार सविता के कमरे में भी आईं। सविता की ओर बड़ी नाराज़गी के साथ देखती हुई गुज़र गईं। बाबूजी के सोने वाले कमरे मे गईं। दराज खोलकर बिस्तर की चादर निकाली। जोर से दराज़ बन्द किया। नौकर को पुकारा। नौकर नही था। बाबूजी से तटस्थता बनाए रखने का प्रयत्न करते हुए कहा, "शाम कोई आया था !"

"कौन ?"

"उसीसे पूछ लो, बिना पूछे थोड़े ही बताएगी।"

सविता उठकर बाबूजी के कमरे मे चली गई। बाबूजी पीठ के नीचे चार तकिये लगाकर अखबार पढ रहे थे। मुँह में बुझा हुआ सिगार था। उन्होने सविता की तरफ देखकर पूछा, "कौन आया था बेटी ?"

सविता के चेहरे का भाव बदल गया। उसने दबी नजर अम्मा की तरफ देखा। उन्होंने पीठ घुमा ली।

"वही अकल आए थे, उस दिन रामा साहब के यहाँ पार्टी में मिले थे न,···आपके क्लास-फेलो···!"

"अच्छा, वोऽऽ, तुमने रोका नही ?"

"कल सुबह आएँगे।"

बाबूजी पुनः अखबार पढ़ने लगे। सविता कुछ देर तक खड़ी रहकर चलने लगी। अम्मा ने उसकी ओर पीठ किये हुए ही कहा, "उसके लिए भी इन्ही से पूछ लें, मैं कुछ नही जानती।"

बाबूजी ने अखबार की ओर से नजर हटाकर सविता की ओर देखा। सविता चुपचाप खड़ी थी।

अम्मा ने अपने-आप ही कहना शुरू कर दिया, "इतवार को कॉलिज के लड़कों के साथ बड़ी नहर पर···क्या कहते हैं उसको···पिकनिक के लिए जाने की कह रही है, आप जानें।"

वावूजी ने पूछा, "क्या बात है सविता ?"

"कुछ नहीं वावूजी ! हमारे 'सोशियोलोजी-एसोसिएशन' की तरफ़ से दो दिन का टूर जा रहा है, मैं उसकी सोशल सेक्रेटरी हूं।"

वावूजी ने क्षण-भर रुककर कहा, "तुम्हारी अम्मा तो पिकनिक कह रही थी।"

"वो तो मैंने 'जस्ट टु मेक हर अण्डरस्टेण्ड' कह दिया था।"

वावूजी ने अम्मा की तरफ़ देखते हुए कहा, "तुम्हारी अम्मा ने क्या कहा ?"

"मैं हूं ही कौन कहने वाली !" अम्मा ने बड़ी नाराज़गी के साथ उत्तर दिया। वावूजी पुन: अखवार पढ़ने लगे। सविता अपने कमरे में जाने के लिए घूम गई। अखवार की ओर मुंह किए बावूजी ने धीमे से कहा, "चली जाना।"

सविता ने घूमकर वावूजी की ओर देखा। अखबार वावूजी के चेहरे के काफ़ी पास आ गया था। अम्मा की ओर देखने की हिम्मत नहीं हुई। झपटकर दूसरे कमरे में चली गई।

अपने कमरे में जाकर काफ़ी देर तक सविता के कान उधर ही लगे रहे। उसे वार-वार लगता रहा, अम्मा वावूजी से कुछ कह रही हैं।

थोड़ी देर वाद अम्मा ने बावूजी से पूछा, "वत्ती वन्द कर दूं ?" वावूजी ने 'हूं' कर दिया।

वत्ती बन्द हो गई। सविता ने भी अपने कमरे की वत्ती वन्द कर दी और सोने के कमरे में जाने लगी। उसका सोनेवाला कमरा अम्मा-वावूजी के कमरे की दूसरी तरफ़ था। उसे उनके कमरे के वीच से गुज़रना पड़ा। नीता अम्मा के बराबर विछे [illegible] पर सो रही थी। बबलू अम्मा के बिस्तर पर ही [illegible] गोल

श्री दुर्गादास नागरी मण्डार
क्रमांक 40086

तकिया लगा था, बबलू अम्मा की पीठ के नीचे न लुढ़क जाए। अम्मा ने अपना पलंग बाबूजी के पास खिसका लिया था। बाबूजी का मुंह दूसरी ओर था। वह तेजी से निकल गई।

उसके कमरे मे रानी, मुन्नी, राजू, बडा मुन्ना, छोटा मुन्ना सबके बिस्तर लगे हुए थे। मुन्नी ने अपने दोनों पांव रानी के ऊपर रख दिए थे। राजू 'सिंगल' था। बडा और छोटा मुन्ना एक बिस्तर पर थे। उनकी मुद्रा कुछ ऐसी थी कि दोनों बॉक्सिंग कर रहे हैं। सविता मुसकराई। मुन्नी के पांव रानी के ऊपर से हटा दिए। डांटते हुए कहा, "क्या पिल्लों की तरह लिपटी पड़ी हो ?" वे दोनों कुलमुलाकर फिर सट गईं। दोनों मुन्नों को सीधा किया। वे भी ऊँ-ऊँ करके फिर एक-दूसरे के पास आ गए। सविता ने सबको कपडा उढ़ाकर बत्ती बुझा दी और ज़ीरो बल्ब जला दिया। बीच का दरवाज़ा बन्द करने गई। बिना चटखनी लगाए, केवल उढ़काकर चली आई। वह हल्का-सा मुसकरा रही थी। पलंग पर बैठकर उसने अपने को थोड़ा 'लूज़' किया। छाती से नीचे तक रजाई ओढ़कर लेट गई। उसका मुंह दीवार की तरफ़ था। ज़ीरो बल्ब का हलका-हलका प्रकाश दीवार पर ठहरा हुआ था। उसने अपनी उँगली से एक खड़ी रेखा खींच दी। दीवार पर धूल होने के कारण उँगली फिसलने का हलका-सा निशान बन गया। वह उसे देखती रही। पहले निशान के बराबर में ही उसने एक घेरा और बना दिया। वे दोनों निशान बहुत हलके थे। उन निशानों को मिटाने के लिए उसने हथेली उठाई, बिना मिटाए ही करवट बदल ली और आँखें बन्द करके लेट गई। आँखें बन्द कर लेने वाले उस भाव में भी उसकी व्यस्तता नज़र आ रही थी।

●

अम्मा कह रही थी, "चूहे दौड़ रहे हैं···सविता ने आज बीच का दर-वाज़ा बन्द नहीं किया।"

"आपकी नींद भी खूब है, चूहों की खटर-पटर में भी सोए जा रहे हैं।"

बाबूजी ने शायद करवट बदलते हुए अलसाई आवाज़ में कहा, "होंऽ, तुम मुझे परेशान नहीं करो।"

अम्मा चुप हो गईं। थोड़ी देर बाद बोलीं, "कहो तो बीच का दरवाज़ा बन्द कर दूं?"

"कर भी दो, भई···" बाबूजी की आवाज़ फिर डूब गई। सविता के होंठों पर हँसी फैल गई। अम्मा ने दरवाज़ा बन्द करके चटखनी चढ़ा ली। सविता पलंग पर उठकर बैठ गई। वह आप-ही-आप मुसकराती रही।

थोड़ी देर बाद वह फिर लेट गई। दीवार पर उसके बनाये हुए दोनों निशान थे। हथेली से साफ़ कर दिए। उन निशानों के स्थान पर हथेली के घस्से का निशान बाक़ी रह गया। उधर कुछ बातें हो रही थीं। वह कोहनियों के बल अधउठी-सी हो गई। बाबूजी कुछ कह रहे थे, "हाथ तो रखने दो।"

सविता ने कसकर आँखें बन्द कर लीं।

थोड़ी देर बाद अम्मा ने घुलती-सी आवाज़ में फिर कहा, "यह ठीक नहीं है, जवान लड़की को इस तरह भेजना···" 'भेजना' के बाद शब्द सुनाई नहीं पड़े। सविता ने उचककर बत्ती जला दी।

वह बत्ती जलते ही चिल्लाई—"उईऽऽ, चूहे···!" चिल्लाकर दो-चार क्षण टोह लेती रही। दूसरे कमरे में एकदम सन्नाटा था। उसने फिर हल्के-से मुसकराकर बत्ती बन्द कर दी और लेट गई। बत्ती बन्द हो जाने पर भी उसके दाँत काफ़ी देर तक खुले रहे।

# पगडंडियाँ

मि० सेन ने मुँह से सिगार निकालकर हाथ में ले लिया। कुछ याद करने की मुद्रा में आँखें बन्द करके पुकारा, "राजीव!" सिगार का धुआँ बार-बार उनकी गर्दन के ऊपरी भाग को घेर लेता था, उसके छँटते-छँटते वे फिर उतना ही धुआँ छोड़ देते थे। दो बार कश लगा लेने के बाद मि० सेन ने आँखें खोलीं और सिगार को राखदानी पर रखकर चारों ओर नज़र डाली। उन्होंने एक बार और पुकारा "राजीव, राजीव बेटे!"

बराबर वाले कमरे में नौकर था। मि० सेन की आवाज़ सुनकर बाहर निकल आया, "भैया दूसरी तरफ बरामदे में पढ़ रहे हैं, बुला लाऊँ?" बड़े अनमनेपन से मि० सेन ने दोहराया—"पढ़ रहे हैं!" उसी अनमनेपन को बनाए रखते हुए कहा, "अच्छा तो ठीक है, पढ़ने दो। इम्तहान नज़दीक

है। इन फ़ाइनल, नो डिस्टरबैन्स···! इज इट इट ?" गर्दन घुमाकर देखा, नौकर चला गया था।

राखदानी पर रखे सिगार को उठाकर उन्होंने फिर मुंह में लगा लिया। दम लगाने पर जरा-सा भी धुआं मुंह में नहीं आया। आधे से ज्यादा बचे सिगार को इतनी जोर से फेंका कि पूरा लॉन पार करके सामने वाली चहारदीवारी से टकराकर गिर पड़ा। उसी झटके के साथ मि० सेन भी उठ खड़े हुए और लॉन की तरफ़ चल दिए।

लॉन के किनारे-किनारे माली थांवले खोद रहा था। खुदी हुई मिट्टी नई-नकोर, नम और मुलायम थी। कुछ ढेले थे जो हाथ लगाते भुर जाते थे। बीच-बीच में माली का फावड़ा कंकड़ या टूटे हुए ठीकरे से टकरा जाता था। माली उसे उठाकर दूर 'वगा' (फेंक) देता था। थोड़ी देर मिट्टी खोदने की क्रिया देखते रहे। फिर मिट्टी का ढेला उठाकर उसे भुरभुराते हुए वरांडे की ओर लौट पड़े। कुछ दूर तक हरी-हरी घास पर पीली मिट्टी की पतली-सी रेखा बन गई।

मि० सेन वरांडे में पड़ी कुर्सी के पास फिर आ खड़े हुए। खड़े-खड़े ही उन्होंने डिब्बे से एक सिगार निकाला, दियासलाई उठाई। व्यस्तता के अन्दाज में दोनों को अलग-अलग हाथों में ही लिए अन्दर की ओर चल दिए। धुला-पुंछा ड्राइंग-रूम सुस्ता रहा था। बाहर चढ़ती हुई धूप के हल्के-हल्के बिम्ब दीवारों पर कांपते हुए-से टिके थे। मि० सेन के चलते रहने से वे सब उनके शरीर पर आ-आकर टिकते, फिसलते और पुनः दीवारों पर अपनी-अपनी जगहों पर चिपक जाते थे।

दूसरे वरांडे में राजीव 'थमले' से पांव टिकाए, कुर्सी को पीछे की ओर झुकाए, आंखें बन्द किए बैठा था। घुटनों पर किताब उल्टी रखी हुई थी। मि० सेन ने पास जाकर पूछा, "पढ़ चुके ?"

"यस पापा !"

"रिलेक्सिंग !"

राजीव ने गर्दन हिला दी। मि० सेन कुर्सी खिसकाकर बैठ गए। कुछ

सोचते हुए बोले, "तुम्हारी 'प्रिपेरान्स' पूरी हो गई ?"

"हूँऽ, लेकिन पापा, नीना इज वेरी मच तैयार।"

मि० सेन ने हँसकर पूछा, "तो इसीलिए तुम परसों से उसके साथ पढ़ने नहीं गए···डर गए हो !"

"व्हाट डरना···अब तो 'एग्ज़ाम्स' ही बताएँगे कौन किसके सिर पर से फाँद जाता है।"

मि० सेन ने मुस्कराते हुए पूछा, "कहीं ऐसा न हो दूर से दौड़ते हुए आओ···आमने-सामने आते ही, हॉल्ट।" देखते-देखते एक छोटा-सा बिम्ब राजीव के चेहरे पर से फिसल गया।

"नो पापा, आई विल क्रॉस हर।"

मि० सेन की नज़रों में एक चमक उभरकर डूब गई। उन्होंने अपने को गम्भीर बनाने का प्रयत्न करते हुए प्रतिवाद किया, "नीना एक्सट्रा आर्डीनरी ब्रिलियन्ट माँ की बेटी है, जानते हो।"

राजीव ने किलककर सपाक से उत्तर दिया, "हूँऽ, आप जानते हैं, राजीव इज सन ऑफ रेकर्ड ब्रेकर।" उसने अपना सीना ऊपर को उचकाया।

मि० सेन प्यार से झिड़कते हुए बोले, "तुम बहुत शैतान हो गए।" चेहरे पर मुस्कराहट हँसने की सीमा तक फैल गई।

"पापा, यू नो, आन्टी को आपकी रोटरी-क्लब वाली स्पीच बहुत पसन्द आई।"

मि० सेन खामोश हो गए। उनके व्यवहार ने ऐसा आभास दिया कि इस बात में उनकी विशेष दिलचस्पी नहीं। लेकिन कनखी आँखों से राजीव की तरफ देखते रहे। राजीव बताता रहा, "लौटने पर मम्मी से पूछवा दूंगा, मैंने उनको बताया था। आन्टी इतना पढ़-लिखकर भी एकदम 'आरथोडोक्स' हैं। दट इज थोनली ब्यूटू यू कि वे मुझे अपनी बेटी के साथ 'कम्बाइन्ड-स्टडी' के लिए एलाऊ कर देती हैं। शी ऑलवेज कीप्स ऐन आई।" अन्तिम वाक्य उसने बड़े धीरे से कहा।

"इसका मतलब भी इज ए गुड मदर।" मि० सेन एकाएक अनमने हो गए। लेकिन तुरन्त सँभलकर बोले, "मैं खुद तुम्हें फ़ाइनल में किसी और लड़की के साथ पढ़ने की इजाजत न देता। मुझे अपनी बात याद है—आ' वाज़ जस्ट टु लूज़ माई पोजीशन इन एम० ए०, बाल-बाल बच गया, ख़ैर वह सब तो था ही! जब तुमने मुझसे कहा था—मैं मिसेज जोशी से सलाह करने गया था। अब भी पूछ-ताछ रखता हूँ।"

"यू आर डेन्जरस पापा! आपको क्या पता चलता है···" क्षण-भर को राजीव का चेहरा तन गया, उसकी आँखें आशंका से भर गईं।

"पढ़ते कम हो, बातें ज्यादा करते हो।" कहकर मि० सेन हँस दिए। राजीव के चेहरे पर फिर खुलापन आ गया। उसने गर्दन को झटका देते हुए प्रतिवाद किया, "नो पापा, आप मजाक कर रहे हैं—वी आर टू सीरियस।" 'टू' को ज़रा खींचकर बोला।

"प्रूव इट।"

"ठीक है, आई विल···"

राजीव उठ खड़ा हुआ। मि० सेन ने एक बार उसे उठते हुए देखा, फिर अपनी घड़ी की ओर देखकर कहा, "अब तो लंच के बाद ही पढ़ोगे?"

राजीव ने गर्दन हिला दी।

"तो बैठो!"

राजीव पुनः बैठ गया। मि० सेन की नज़र अपनी उँगलियों में दबे सिगार पर चली गई। उन्होंने तुरन्त जलाकर जोर का एक कश लगाया।

धूप सहन से सरककर बरांडे में आ गई थी और उन दोनों के पाँव धूप की उस चादर के नीचे दब गए थे।

राजीव ने मि० सेन की ओर देखकर पूछा, "पापा, डोन्ट यू थिंक—हिन्दुस्तानी औरतें कितनी भी 'एडवान्स' हों, पर अपनी ग्रोन-अप लड़कियों के बारे में भी एक्सट्रा-काँशस रहती हैं, एज़ इफ़ दे आर शुगर क्यूब्स।"

मि० सेन ने राजीव की ओर बड़े ग़ौर से देखा, 'हूँ' करके रह गए। बात आते-आते होंठों से लौट गई। फिर मूड बदलकर बोले, "इसमें क्या

वान है, मदर्स लव देयर डॉटर्स मोर।"

राजीव के चेहरे पर शैतानी-भरा भाव चमका। गर्दन नीची करके हल्का-सा मुस्कराया। बेटे को मुस्कराता हुआ देख मि० सेन थोड़ा गंभीर हो गए।

"तुम समझते हो मिसेज जोशी बैकवर्ड हैं—शी इज डेफिनेटली डिगनिफ़ाइड एण्ड रिफ़ाइंड लेडी। तुम्हारे क्लास में इतने लड़के थे, बट शी एलाउड यू ओनली टू स्टडी विद हर डाटर—उनमें आदमी को पहचानने की अद्भुत शक्ति है।"

पिता के एकाएक गम्भीर हो जाने से राजीव के चेहरे पर असन्तुलन आ गया। सफ़ाई देने की मुद्रा में बोला, "पापा, मैं आन्टी को ब्लेम थोड़े ही कर रहा हूँ। वे मुझे भी उतना ही मानती हैं, कई लोगों ने हम दोनों को लेकर उनसे कुछ कहा-सुना भी, उन्होंने उन लोगों को बहुत सही जवाब दिया। राजीव इज ए सन ऑफ़ ए वेरी डिसिप्लिण्ड फादर।"

आख़िरी वाक्य सुनकर मि० सेन मुस्करा दिए। अपने पापा की मुस्कराहट देखकर राजीव का चेहरा भी निखर आया।

मि० सेन उठ खड़े हुए और धुआँ छोड़ते हुए उसके बीच से चहलक़दमी करने लगे।

राजीव ने धीरे से कहा, "पापा, फाइन्ड टाइम टु कॉल ऑन नीनाज़ फ़ादर।" वे अवदीच में ही राजीव की ओर घूमकर उसके चेहरे का भाव आँकने का प्रयत्न करने लगे। फिर बोले, "कई बार मैं तुम्हें ड्रॉप करने गया हूँ, लेकिन ही इज आल्वेज़ आउट। इस बार मैं उनसे टाइम लेकर मिलने जाऊँगा।"

"आप देखेंगे, ही ओनली स्माइल्स।" सुनकर सेन साहब भी मुस्कराए।

"एक रोज़ आन्टी चाय पर आपकी बड़ी तारीफ़ कर रही थीं, वो भी अंकल मुस्करा रहे थे।"

"मुस्करा रहे थे!" मि० सेन ने झटके के साथ पूछा।

"हाँ, दरअसल उनकी दो आदतें हैं—मुस्कराते रहना और हिन्दी में बोलना।" अंतिम शब्दों के साथ उसके चेहरे पर हँसी भी आ गई।

मि० सेन ने प्रतिवाद के रूप में कहा, "मुस्कराता तो मैं भी हूँ··· तुम मेरे बारे में भी इसी तरह की बातें करते होगे ?"

"नो पापा, मुस्कराती तो आन्टी भी हैं, बट शी इज़ मच मोर फ़ारवर्ड। ऐसे ही आप भी—आप स्मोक करते हैं, हाई सोसाइटीज़ में मूव करते हैं। अंकल दफ़्तर से लौटते हैं और बस···। आन्टी इज़ सो स्मार्ट कि उनका लेज़ी होना अखर जाता है। आन्टी आपकी मिसाल दे-देकर अंकल को हमेशा प्रोवोक करती हैं, ही इज़ इम्यून।" मि० सेन के चेहरे पर खिला-खिलापन आ गया था।

थोड़ा सोचने की मुद्रा बनाकर उन्होंने कहा "इसमें कोई शक नहीं, लेडीज़ हैव इम्मेन्स पावर ऑफ़ एडजेस्टमेंट विद मेन···" तुरन्त अपनी बात बीच में तोड़कर बोले, "हाँ, तुम्हें शाम-वाम को तो उधर नहीं जाना ?" यह पूछते समय उनके चेहरे से लगा, अब वे गम्भीर बात करना चाहते हैं।

राजीव ने भी सोचते हुए जवाब दिया, "एक-दो टॉपिक्स डिसकस तो करना चाहता हूँ, लेकिन···।"

"लेकिन क्या ? अगर करने हैं तो कर लेने चाहिए, फिर क्या इम्तहान के दिनों में करोगे ? शाम को जाना है, तो जाकर अब नहा-धो लो, लंच लेकर थोड़ा आराम करना, फिर पढ़-पढ़ाकर शाम को वहीं चले जाना।" रुककर फिर बोले, "हो सका तो मैं भी चला चलूँगा, नीना के फ़ादर से मिलना हो जाएगा।" राजीव ने तिरछी नज़र से पापा को देखा। धीमा-सा मुस्करा दिया।

मि० सेन के चेहरे पर काफ़ी खुलापन था। उठते समय उन्होंने अधपिए सिगार को ऐसा उछाला कि दूर जाकर गिरा। उनके कमरे में चले जाने पर राजीव किताबें इकट्ठी करने लगा था। साथ-साथ हल्की-सी सीटी भी बजाता जा रहा था। किताबें इकट्ठी करके क्षण-भर के

लिए उसने कुछ सोचा, फिर मि० सेन के दफ्तर में फोन करने के लिए चला गया।

*"इट इज टू, मन, फ़ाइव, थ्री—राजीव हियर ?"*

............

"हैलो आन्टीजी, नीना है ?"

............

"नहा रही है।"

............

"मैं तो बहुत नरवस हूँ, दिमाग से सब-कुछ उड़ गया, आप ही बताइए *क्या करूँ ? पापा कहते रहते हैं, नीना इज डॉटर-ऑफ-ए-ब्रिलियन्ट मदर।"*

............

"हँसी की बात नहीं आन्टी ! मैं भी पापा से यही कहता हूँ, आई एम ऑल्सो ए सन ऑफ ए टॉपर, रिकार्ड तोड़ने वाले का बेटा हूँ। बट पापा हैज डेवलप्ड इन्फीरियारिटी।"

............

"कम-से-कम आप उस पर अपनी 'ब्रिलियन्सी' का और पापा के रेकार्ड ब्रेक करने का रोब ग़ालिब तो नहीं करतीं।"

............

"मम्मी तो अपनी फ्रेन्ड की डॉक्टर की शादी में गई हैं।"

............

"कल लौटेंगी।"

............

"खाना तो नौकर बनाएगा ही।"

............

"आप पापा से बात कर लीजिए, ही इज वेरी पर्टीकुलर एबाउट ऑल दैट।"

............

"होल्ड कीजिए, मैं बुलाता हूँ।"

राजीव ने वहीं से चिल्लाकर कहा, "पापा, योर फ़ोन।"

मि० सेन आधे चेहरे पर साबुन लगाए चले आए। थोड़ा झुंझलाते हुए पूछा, "किसका फ़ोन है ?"

"आन्टीज फ़ोन···मैं दे रहा हूँ।"

मि० सेन ने रिसीवर हाथ में ले लिया "सेन स्पीकिंग, कहिए क्या आज्ञा है ?"

............

"अरे आप किस तकल्लुफ़ में पड़ गईं, नौकर तो बनाएगा ही, कल वाइफ़ आ जाएँगी।"

............

"अच्छा, भाई साहब भी नहीं हैं। इट इज़ काल्ड लक मिसेज जोशी, मैं राजीव से कह रहा था शाम को जोशी साहब से मिलने मैं भी चलूँगा। किसी ऐसे रोज़ रखिए जब भाई साहब भी हों।"

............

'हा, हा, हा···' कुछ देर तक मि० सेन हँसते रहे फिर बोले, "यह अच्छा कहा, मेरी 'वाइफ़' नहीं, आपके 'हस्बेंड' नहीं, आप भी खूब 'विटी' हैं !"

............

"ऑल राइट, जैसा आपका हुक्म ! बच्चों का थोड़ा नुकसान होगा।"

............

'हा हा हा' मि० सेन फिर हँसने लगे।

............

"अच्छा तो शाम को मुलाकात होगी, चियर्स।"

मि० सेन रिसीवर रखने लगे तो राजीव ने उनके हाथ से रिसीवर ले लिया।

"आन्टी, जरा नीना को बुला दीजिए, 'टॉपिक' के बारे में पूछना है।

............

"हलो नीना, क्या हाल है, घोट डाला ?"

............

"ह्वाट ! मैंने फोन नहीं किया, तुम तो कर सकती थी। उस रोज आन्टी ने कुछ कहा तो नहीं।"

............

"मैं तो डर रहा था, इसीलिए फ़ोन नहीं किया था।"

............

"बोलती क्यों नहीं ?"

............

"पढ़ लिया ! क्या पढ़ लिया ? मैं पूछ कुछ रहा हूँ, तुम जवाब कुछ दे रही हो। आन्टी खड़ी हैं। ओह, यौर ममी हैज इनवाइटेड माई पापा ! आज शाम को मजा रहेगा।" अन्तिम वाक्य उसने आवाज़ को धीमा करके कहा।

............

"शेक्सपियर भी।" दोहराकर वह ज़ोर से हँसा। 'डरपोक' कहकर रिसीवर रख दिया। मुँह चिढ़ाकर सीटी बजाता हुआ अपने कमरे में चला गया।

●

मि० सेन काला सूट पहने ड्राइंग-रूम में चहलकदमी कर रहे थे। रोशनी का प्रत्येक उपकरण दीवार के अन्दर था, आभास-स्वरूप हल्का-हल्का प्रकाश कमरे में फैला था। शायद सर्दी के कारण सिगार का धुआँ धीरे-धीरे ऊपर उठ रहा था, रंग भी अधिक सफ़ेद था।

टहलते-टहलते उन्होंने पुकारा, "राजीव मेक हेस्ट, आठ बज रहे हैं। मिसेज जोशी का फ़ोन भी एक बार आ चुका है।"

राजीव कोट की ऊपर वाली जेब में रूमाल लगाता हुआ

निकल आया "रेडी पापा, लाइए 'की', मोटर निकाल दूं।"

मि० सेन ने राजीव को ऊपर से नीचे तक देखा। चेहरे पर आया ठहराव हिल गया। हँसते हुए बोले, "लुकिंग स्मार्ट···"

राजीव ने थोड़े बचपने के साथ हँसकर तुरन्त कहा, "बट नाट मोर दैन यू।"

मि० सेन क्षण-भर को अस्थिर हो गए, पर तुरन्त ही हँसने लगे। "आई एम ओल्ड मैन नाउ।" उनके चेहरे का पालिशपन उभर आया।

राजीव कार चला रहा था। मि० सेन सिगार पी रहे थे। धुआं शीशे के अन्दर से गुज़र रहा था।

नीना के घर पहुँचकर राजीव ने ज़ोर से हॉर्न बजाया। मिसेज़ जोशी और नीना बाहर निकल आईं। राजीव ने उतरते ही कहा, "आन्टी जी! योर गैस्ट इज़ हियर।" और नीना की ओर पकड़ती नजरों से देखा। चारों ड्राइंग-रूम में जाकर बैठ गए।

मि० सेन ने कहा, "देखिए मिसेज़ जोशी, भाई साहब की कमी कितनी अखर रही है, आज भी नहीं हैं···"

"अरे तो क्या हुआ—भाई साहब के आने पर दोबारा सही। मैंने तो आपको फ़ोन पर सब समझा दिया था।" सेन साहब और मिसेज़ जोशी दोनों एक साथ हँस दिए। राजीव नीची गर्दन करके मुस्कराता रहा।

"आप जानते नहीं, माई हस्बेंड इज़ आफ़ुली लेज़ी लाइक सरपेंट, वे हिलना-डुलना पसन्द नहीं करते।" इस बात पर सब लोगों ने कहकहा लगाया।

नीना तुरन्त बोली, "मम्मी, आप पिताजी के लिए ऐसी ही बातें करती हैं। आखिर दिन-भर काम करने के बाद, ही इज़ टायर्ड।"

मिसेज़ जोशी हँसी, "देखा आपने, अपने पापा की कैसी तरफ़दारी करती है। अंकल दफ़्तर नहीं जाते, फिर भी इतने क्लब्स के मेम्बर हैं—पब्लिक वर्क करते हैं। तुम्हारे पिताजी···" कहकर मिसेज़ जोशी ने होंठ

दिए।

मि० सेन ने नीना की तरफ देखा, वह भी मुस्करा रही थी। सब लोग खाने के लिए उठ गए।

खाना खाने के बाद ड्राइंग रूम में लौटने पर राजीव ने दबी नजर से नीना की तरफ देखा। नीना के होंठ हल्के-से फैल गए। लेकिन उन्हें पुनः बैठने देख मिसेज जोशी ने टोक दिया, "उस वक्त तो फोन पर ही शेक्सपियर, मिल्टन बचाने जा रहे थे···" मि० सेन की ओर देखकर बोली, "बोथ आर फॉन्ड ऑफ टॉक्स।"

राजीव के चेहरे पर खिचाव आ गया। मि० सेन ने भी मिसेज जोशी की हाँ-में-हाँ मिला दी, "आन्टी ठीक तो कह रही हैं—जो कुछ डिसकस करना हो, कर लो। लौटना भी तो है।" बाहर निकलते समय मिसेज जोशी को कहते हुए सुना, "राजीव इज टू सेन्सिटिव—बट ए गुड ब्वॉय।" दोनों एक-दूसरे की तरफ़ देखकर मुस्करा दिए और कमरे में जाकर ज़ोर-ज़ोर से हँसते रहे।

कुछ देर शान्ति का खासा वातावरण रहा। मि० सेन अपने दोनों हाथों की मुट्ठियों को एक के आगे एक रखकर फूँक मारने लगे। उनकी नजर मिसेज जोशी के कंधों पर से फिसलकर जमीन में लोप हो गई। कुर्सी पर रखे मिसेज जोशी के हाथों की उँगलियाँ बारी-बारी से हिल्कर वातावरण में छोटी-छोटी लकीरें खींच रही थी।

मिसेज जोशी एकाएक उठ खड़ी हुईं, "यहाँ काफ़ी ठंड है—आइए 'बेड-रूम' में बैठें, वहाँ हीटर भी है।"

मि० सेन के चेहरे पर झिझक का हल्का-सा भाव आया, पर वे उनके पीछे-पीछे चल दिए। उन दोनों के उठकर चलने से कमरे में व्याप्त प्रकाश का पूरा सम्मोहन छिन्न-भिन्न हो गया। दूसरे कमरे की ओर बढ़ते हुए मि० सेन ने गौर किया, मिसेज जोशी की परछाईं उनकी परछाईं से लम्बी और अधिक गाढ़ी है।

मि० सेन पलंग के बराबर पड़ी आरामकुर्सी पर बैठ गए। मिसेज जोशी ने पलंग के तकिये का सहारा ले लिया। सेन का चेहरा नरम था।

दो-तीन अलग-अलग भाव आंखों के कोनों, होंठों की कोर और माथे की सलवटों में थे। मिसेज जोशी ने उनके चेहरे पर से नजर हटानी चाही।

●

राजीव एकाएक कमरे में दाखिल हुआ। सेन साहब के अधफैले पांव एकाएक सिमट गए और मिसेज जोशी की तकिये से टिकी पीठ सीधी हो गई। वे जेब से सिगार निकालकर जलाने लगे। राजीव जल्दी से बोल गया, "पापा, अभी आप बैठेंगे या चलेंगे—बैठें तो मैं एक टॉपिक और निबटा लूं।"

मि० सेन हकला-से गए। मिसेज जोशी ने उनके चेहरे पर नजर डालते हुए कहा, "पापा से तो जब तुम कहोगे, चल देंगे—मगर डिसकस करना हो तो कर डालो। इम्तहान की रात तक तुम लोग इसी तरह भागते-दौड़ते रहोगे, हाई टाइम नाउ।"

"इट विल टेक एट लीस्ट हाफ़ एन आवर मोर···"

"ठीक है," सुनकर राजीव उसी झटके के साथ बाहर हो गया।

नीना के कमरे में पहुँचकर उसने जोर से कहा, "अपनी किताब निकालो—आधा घण्टा है। पापा इज़ वेटिंग, हम लोग जल्दी-जल्दी डिसकस कर डालें।" कहते समय वह मुस्करा रहा था।

"मैंने तो अभी ठीक तरह पढ़ा भी नहीं।" नीना ने भी ज़रा ज़ोर से जवाब दिया। वह होंठ दबाकर मुस्करा रही थी।

"अच्छा तो लाओ मैं प्वाइंट नोट किए देता हूँ—फिर डिसक्स कर दूंगा।" राजीव दांत भींचकर हँसता, बिना आवाज़ किए लम्बे-लम्बे क़दम रखता, नीना के पास जा खड़ा हुआ।

राजीव की आँख की पुतलियाँ पिघलती गईं। वह नीना को अपने बहुत निकट ले आया।

वह फुसफुसाई, "मम्मी!"

होंठों में हल्के-से कम्पन के साथ, राजीव ने कहा, "दे ट्र आर बिज़ी···!"

# नया चश्मा

सीढ़ियों पर चढ़ते हुए शिवजी भाई ने अपनी जेबें टटोलीं।

"ओह!" अनायास मुँह से निकला।

"अगर किसी ने टोक दिया?"

पौने आठ बज चुके थे। आठ बजे मुख्य मंत्री ने चाय पर बुलाया था। टैक्सी द्वारा भी विधायक-निवास तक जाने और फिर लेकर आने में आधे घण्टे से कम लगने वाला नहीं था। वे सीढ़ियों पर चढ़ते गए। बरामदे में जितनी कुर्सियाँ थीं, सब भरी हुई थीं। उतने ही लोग खड़े हुए नजर आ रहे थे। अधिकतर बड़े लोगों के बड़े-बड़े अधिकारी थे। बैठे हुए विधायक या अन्य लोग, कलाकारों और सेठ थे। वे लोग मुख्य मंत्री के बरामदे में बैठकर अपने को भाग्यशाली और हैसियतवाले सर्वशक्तियों के बीच स्थान पाये थे।

शिवजी भाई ने एक नजर इधर-उधर डाली और अपने को एक

अजीब-सी घबराहट की स्थिति में महसूस किया। निट न लेकर आने की बात अपनी सबसे बड़ी भूल नजर आने लगी। मुख्यमंत्री का पी० ए०, जो कई बार मुख्यमंत्री से मिलने में बाधक बन चुका था (बल्कि उनके साथ अशिष्टतापूर्ण बरताव किया था) उनकी ही दिशा में आ रहा था। क्षण-भर के लिए वे सोच गए—मुख्यमंत्री से मिलने पर अवश्य ही वह उसकी शिकायत करेंगे। लेकिन एक दूसरे विचार ने उन्हें तुरन्त ही समझा दिया, यह पी० ए० नाम का जीव आज भी उन्हें अन्दर जाने से रोक देगा।

उन्होंने अपने कान कमजोर कुत्ते की तरह दबा लेना उचित समझा, लेकिन उनके जनता द्वारा चुने गए 'विधायक' ने उन्हें उसी क्षण फटकार दिया। उन्हें अपने ऊपर आश्चर्य हुआ—जो आदमी विधान सभा में बड़े-बड़े नेताओं की सिट्टी-पिट्टी गुम कर सकता है वह एक अदना पी० ए० से क्यों दब रहा है? पी० ए० के निकट आ जाने पर शिवजी भाई अपनी गरदन ज़रा सीधी करके खड़े हो गए और कनखियों से देखने लगे—'वह क्या करता है!' पी० ए० बड़ी नम्रता और आज्ञाकारिता का भाव लिए उन्हीं के पास आ रहा था। पी० ए० के चेहरे पर इस अपरिचित भाव को देखकर शिवजी भाई आश्चर्यचकित थे। अनन्त चेहरे···! पी० ए० ने निकट आकर बड़े विनीत स्वर में कहा, "मुख्य मंत्रीजी आपका ही इन्तजार कर रहे हैं।"

शिवजी भाई ने बड़ी उदासीन दृष्टि से उसकी ओर देखा और बिना कुछ कहे उसके साथ चल दिए। हालांकि शिवजी भाई इस बार भी यही सोचना चाहते थे कि वे उस पी० ए० की जरूर शिकायत करेंगे।

एक और विचार भी उन्हें अपनी ओर खींच रहा था। वे मुख्यमंत्री के पास जाने से पहले इस बात का अन्दाज़ लगा लेना चाहते थे, आखिर शिवजी भाई को चाय पर क्यों बुलाया गया है। इससे पहले मुख्यमंत्री ने उन्हें ज़रा भी 'लिफ़्ट' नहीं दी थी। जहाँ तक वे सोच पा रहे थे, मुख्यमंत्री ने सरकारी प्रस्ताव के विरुद्ध दिए गए भाषण पर फटकारने के लिए

बुलाया है, कहेंगे 'बेहतर हो, आप पार्टी छोड़ दें !' इस बात का उत्तर उन्होंने सोच लिया था।

बरामदे के बाद गैलरी थी। गैलरी में कार्पेट बिछा था। चलते समय उनके और पी० ए० के क़दमों की आवाज़ बिलकुल नहीं हो रही थी। यह बात उन्हें पसन्द आई थी। दरअसल विधायक-निवास में उनका कमरा ऐसी जगह था, जब भी कोई आता-जाता था तो उनके कमरे के सामने जरूर ताल ठोंकी जाती थी। बहुत व्यवधान होता था। उन्होंने सोचा, 'विधायक-निवास' के बरामदे और गैलरियों में भी अगर कार्पेट नहीं तो टाट ही बिछवा दिए जाने चाहिए। वे गैलरी पार कर ड्राइंग-रूम में आ गए थे। इससे पूर्व उन्हें कभी ड्राइंग-रूम में आने का मौक़ा नहीं मिला था। एक-दो बार कभी आए भी तो ऑफ़िस से ही लौट गए थे। उन्होंने ड्राइंग-रूम पर खुलकर नजर डाली। सामने दो बड़े-बड़े नेताओं के 'पेंटेड' चित्र थे। नए डिज़ाइन वाले हरे रंग के सोफ़े थे। मुख्यमंत्री के बृहद् व्यक्तित्व के अनुकूल एक कालीन सारे फ़र्श को ढके हुए था। एक कोने में रखी छोटी-सी मेज पर सूखे नारियल पर बना हुआ एक 'साहब' था। उसके मुँह में वजूद से भी लम्बी सिगरेट दबी थी। उसको देखकर शिवजी भाई के चेहरे पर मुसकराहट आ गई। "अच्छा साहब यहाँ बैठा है⋯" कमरा कोने में खड़े पेपर शेडों के लैम्प की मद्धिम रोशनी में पूरी तरह डूबा हुआ था। एक बरामदा था। उसमें हरे मखमल से मढ़ा एक दीवान रखा था। उस पर मुख्यमंत्री के घर की कोई महिला बैठी कुछ काम कर रही थी। बिला वजह उन्हें अपनी पत्नी का ख़याल हो आया। उसके बाद कुछ सीढ़ियाँ उतरकर एक लॉन था। लॉन के बीचों-बीच एक कुर्सी पर मुख्यमंत्री बैठे धूप ले रहे थे। एक व्यक्ति उनके पाँव छूकर विदा हो रहा था। शिवजी भाई ने पैर छूते हुए आदमी को देखकर कड़वा-सा मुँह बनाया।

पी० ए० ने दो डग आगे बढ़कर मुख्यमंत्री के कान के पास मुँह ले जाकर धीरे से कुछ कहा। मुख्यमंत्री खड़े हो गए, 'आइए, आइए' कहते

हुए एक कदम आगे बढ़े। हाथ मिलाते हुए बोले, "मैं आप ही का इन्तज़ार कर रहा था। आपकी कल वाली स्पीच सुनकर बड़ी प्रसन्नता हुई। कोई तो मिला स्पष्ट कहने वाला ! बाकी सब तो हाथ उठाने वाले हैं।"

शिवजी भाई ने अपनी आँखों को छोटी करके, नजर को नुकीली बनाने की कोशिश करते हुए, उनकी तरफ़ देखा। मुख्यमंत्री की सफेद और घनी मूंछों के नीचे बड़ी सरल और निश्छल मुसकान दिखलाई पड़ी। वे उत्तर में 'धन्यवाद' ही कर पाए। उन्होंने एक बार फिर सोचना चाहा, 'कल वाली बात की तो मुख्यमंत्री तारीफ़ ही कर रहे हैं, इसके अतिरिक्त और क्या बात हो सकती है ?' लेकिन उस बात की गहराई तक पहुँचने का उन्हें अवसर नहीं मिला। चलते-चलते मुख्यमंत्री कह रहे थे, "मैंने अपने आठ वर्षों के मुख्यमंत्री-काल में देखा है ज्यादातर विधायक, विधान-भवन में स्वप्न लेकर आते हैं। आप तो जानते ही हैं, स्वप्न सँजोने वाला आदमी बड़ा ही कायर होता है। सत्यता से अधिक अपने स्वप्नों से मोह होता है न ! आप जैसे व्यक्ति को न कोई लालच है न स्वप्न है, आप सचाई के अधिक निकट हैं।" और हें-हें करके जोर से हँस दिए।

"मैंने कभी आपको किसी काम के लिए कहते हुए नहीं सुना। और लोग मेरी जान खाए रहते हैं। ये परमिट, वो एजेन्सी···और न जाने क्या-क्या ! रात मैं यही सोच रहा था कि आप कितने सच्चे व्यक्ति हैं।"

डाइनिंग रूम आ गया था। वर्दी से लैस बैरे ने दरवाज़ा खोल दिया। शिवजी भाई की नज़र उस समय डाइनिंग रूम की मेज़, कुर्सियों और सजावट की ओर नहीं थी। फ्रिज का दरवाज़ा बन्द होने की आवाज़ से वे चौंक गए। न जाने उन्हें कैसे ख़याल हुआ—कमरे में कार आ गई है।

मुख्यमंत्री के बीच वाली कुर्सी पर बैठ जाने पर शिवजी भाई दो-तीन कुर्सी छोड़कर बैठे। बड़ी बेतकल्लुफी से मुख्यमंत्री ने कहा, 'एसेम्बली में तो आप हमसे दूर रहते ही हैं, यहाँ तो नज़दीक आकर

बैठिए।" शिवजी भाई और निकट सरक आए।

बैरे ने चाय बनाने के लिए केतली उठाई तो मुख्यमंत्री ने उसके हाथ से ले ली, स्वयं शिवजी भाई के प्याले में उँडेलने लगे। शिवजी भाई ने यह कहकर विरोध करना चाहा, "आप इतना शर्मिन्दा क्यों कर रहे हैं?" मुख्यमंत्री की मुस्कराहट में वह सब-कुछ डूब गया। वे सब चीजें अपने हाथ से उठा-उठाकर शिवजी भाई की प्लेट में रख रहे थे। शिवजी भाई को लग रहा था, उनके हाथ-पाँव जम गए हैं। एक नया विश्वास और उनके मन में जन्म ले रहा था, मुख्यमंत्री अपने प्रति सच्चे और ईमानदार हैं। जो कुछ भी उनके बारे में भला-बुरा बाहर है, वह अच्छे का मोल है।

मुख्यमंत्री ने अपने लिए दूसरा प्याला बनाते हुए कहा, "मैं आपसे कुछ जरूरी बातें भी करना चाहता था।" शिवजी भाई की आँखों में एक प्रश्नसूचक उतर आया। उन्होंने मन-ही-मन एक बार और उस बात का अन्दाज लगाने का प्रयत्न किया जो न जाने किस रूप में उनके सामने आने वाली थी। मुख्यमंत्री ने 'साल्टो' बिस्कुट मुँह में रखा और चाय का घूँट भर लिया। उसी समय उनकी दृष्टि शिवजी भाई की प्लेट पर गई। शिवजी भाई ने अभी तक बहुत कम खाया था। वे तुरन्त बोले, "अरे, आप तो कुछ ले ही नहीं रहे हैं।"

"जी नहीं, मैं तो बराबर ले रहा हूँ।"

मुख्यमंत्री ने शिवजी भाई की बात की बिना परवाह किए बहुत-सी गरम पकौड़ियाँ उनकी प्लेट में और डाल दीं। शिवजी भाई बराबर उनके चेहरे की ओर उत्सुकतापूर्वक देख जा रहे थे। मुख्यमंत्री ने अपने मुँह में भी एक पकौड़ी रखते हुए उनकी ओर देखकर गम्भीरतापूर्वक कहा, "कैबिनेट में एक-दो लोग और लेना चाहता हूँ।"

शिवजी भाई ने खुले शब्दों में इस बात का समर्थन किया, "यह तो आपने ठीक ही सोचा। आप पर काफी जोर पड़ रहा है—कई विभाग देखने पड़ते हैं।" उस बात का बिना कोई उत्तर दिए

काटने लगे और शिवजी भाई चुप होकर उनके उत्तर की प्रतीक्षा करने लगे। एक फांक उनको देकर और दूसरी अपने मुंह में रखते हुए बोले, "आप ही किसीका नाम बताइए। मैं चाहता हूं, कोई स्वतंत्र आदमी हो। 'हां' में 'हां' मिलाने वाले तो बहुत हैं।"

शिवजी भाई इस बात की सलाह देने के लिए तैयार होकर नहीं आए थे। वैसे भी इस सवाल ने उन्हें ऐसा कर दिया था, चौराहे पर पहुँचकर जैसे रास्ता भूल गए हों। क्षण-भर में वह सोच गए—मुख्यमंत्री के विश्वास को वह ठेस पहुँचाना ठीक नहीं। उन्होंने दो ऐसे व्यक्तियों के नाम तुरन्त ले दिये जो मुख्यमंत्री की 'गुड-बुक्स' में थे। उनके इस प्रस्ताव से मुख्यमंत्री कुछ इस तरह गम्भीर हो गए, जैसे शिवजी भाई के मुंह से यह सब सुनने की आशा न हो। शिवजी भाई को लगा किसीकी नई कार का दरवाजा खोलते हुए उनके हाथ से हैंडल टूट गया है। एक बार उन्होंने उस परिस्थिति से समझौता करने की कोशिश की, लेकिन मुख्यमंत्री की इस हल्की-सी प्रतिक्रिया ने उनके दिमाग़ को अव्यवस्थित-सा कर दिया—"मैं आपसे यह आशा नहीं रखता था कि आप मुझे ये नाम गिना देंगे। आप जैसे व्यक्ति से तो मुझे यही आशा थी कि मेरे सहयोग के लिए आप स्वयं आगे आएँगे। आप अपने को दूसरे से हीन क्यों समझते हैं?"

फिर बोले, "अच्छा, अगर मैं आपसे ही अनुरोध करूँ तो···"

शिवजी भाई को लगा, वे एक ऐसी कुर्सी पर आ बैठे हैं जो उनके बैठते ही तेजी से गोलाकार घूमने लगी है। क्षण-भर के लिए रुककर उन्होंने मुख्यमंत्री के सम्बन्ध में सोचना चाहा, 'महान् से भी कुछ अधिक है।' लेकिन मुख्यमंत्री के इस प्रश्न ने—'आपने जवाब नहीं दिया'—उनके विचारों की शृंखला को बीच ही में रोक दिया।

"जी, मैं क्या कह सकता हूँ!" उनके मुंह से एकाएक निकल पड़ा। मुख्यमंत्री ने मुस्कराते हुए कहा, "तो ठीक है···फिर कुछ न कहिए। आप स्वतंत्र प्रकार के व्यक्ति हैं, कभी बाद में कहें, मैं मिनिस्ट्री वगैरह

के चक्कर में नहीं पड़ना चाहता। मेरे ही ऊपर बात आएगी।"

शिवजी भाई तत्क्षण् उठ खड़े हुए। उन्होंने सोचना चाहा, 'मुख्यमंत्री के चरण छूना ठीक होगा।' लेकिन कुछ भी सोच पाने के पहले ही वे झुक गए। मुख्यमंत्री ने उन्हें ऊपर ही रोक लिया, मुस्करा दिए। फिर मुख्यमंत्री शिवजी भाई को ड्राइंग-रूम के दरवाजे तक छोड़ने आए।

विदा देते हुए मुख्यमंत्री ने शिवजी भाई के कन्धे पर हाथ रखकर बड़ी गम्भीरतापूर्वक कहा, "आज श्रममंत्री के विरुद्ध जो 'मेमोरेण्डम' आ रहा है... समय लगेगा, जैसे मैं जानता हूँ, आप जैसे सत्यनिष्ठ व्यक्ति के लिए तटस्थ रहना कठिन होगा। लेकिन..." आखिरी शब्द कहकर वे क्षण-भर के लिए रुक गए, फिर बोले, "मेरे लिए भी पार्टी को समझाना कठिन हो जाएगा।"

शिवजी भाई ड्राइंग-रूम से मुड़े तो उन्होंने ड्राइंग-रूम को बड़े गौर से देखा। उसका रंग उन्हें बहुत पसन्द आया। अपने ड्राइंग-रूम में उन्होंने ऐसा ही रंग कराने का निश्चय किया।

कालीन और सोफे, श्रममंत्री के ड्राइंग-रूम से अधिक सुन्दर थे। किसीने बताया था, स्विट्ज़रलैंड से बनकर आए हैं। सोचकर हल्का-सा मुस्करा दिए।

रोशनी का इन्तज़ाम मुख्यमंत्री के ड्राइंग-रूम में अच्छा नहीं था। उनको ऐसा 'लाइटिंग-अरेंजमेंट' ज़्यादा पसन्द था, जिसमें एक भी बल्ब या ट्यूब बाहर नहीं दिखाई पड़ता...सब दीवार के अन्दर छिपे रहते हैं।

बाहर बरामदे में और लोग भी आ गए थे। क्षण-भर के लिए ठिठककर एक नज़र डाली। उन्हें महसूस हुआ, सब लोग उनकी तरफ उत्सुकतापूर्वक देख रहे हैं। कुछ ने उन्हें नमस्कार भी किया। शिवजी भाई को सन्देह हुआ, 'कहीं इन लोगों को मालूम तो नहीं हो गया?' वे जल्दी-जल्दी सीढ़ियों से उतरने लगे।

पोर्टिको में मुख्यमंत्री की गाड़ी खड़ी थी। पूरी वर्दी में सुसज्जित उनका शोफ़र कार पोंछ रहा था। शिवजी भाई के चेहरे पर हल्की-सी हँसी आ गई। अक्सर सदन में जब वे मन्त्रियों को ललकारा करते थे तो इस बात की ओर भी संकेत किया करते थे कि 'ये लोग चौंतीस फीट लम्बी गाड़ी पर चढ़े घूमते हैं।'

वे स्वयं बाहरवाले दरवाजे की ओर बढ़ रहे थे और उनका मन मुख्यमंत्री की कोठी के अन्दर लौटा जा रहा था। बरामदों के लोगों में सेक्रेटरिएट के अफसर, हाथों में मालाएँ लिए प्रतीक्षा करती हुई जनता, चौराहों पर ठकाठक लगते हुए सैल्यूट, अपनी जान पर खेलकर उनकी रक्षा करने वाले 'शैडोज़', पी० ए०, स्टेनो और न जाने क्या-क्या…!

विधायक भवन में गरजता हुआ उनका ही एक और प्रतिरूप! उनके गले में कुछ अटक गया।

पीछे से एक कार धूल उड़ाती हुई आगे निकल गई। आँखों में कार का इस तरह धूल डाल जाना उन्हें अच्छा नहीं लगा। उनका हाथ तुरन्त अपनी जेब पर गया, लेकिन धूप का चश्मा जेब से नदारद था। आगे बढ़ते हुए उनके क़दम तुरन्त रुक गये। उन्हें ख़याल आया, 'झुकते ही शायद उनका चश्मा गिर गया था।'

'चश्मे के लिए लौटकर जाना ठीक होगा?'

लेकिन वे लौट पड़े। सड़क पर चलती मोटरों का इस तरह उनकी आँखों पर धूल उड़ाना उन्हें एकदम सहन नहीं था।

शिवजी भाई जब ड्राइंग-रूम के दरवाज़े पर पहुँचे तो मुख्यमंत्री शायद किसी से टेलीफोन पर कह रहे थे—"एक डोज़ काफी है, अब छः महीने तक नहीं बोलेगा…"

वे बाहर ही ठिठक गए, लेकिन पुराने चश्मे के लिए मुख्यमंत्री को तकलीफ देने की बात सोचकर उन्हें अपने ऊपर हँसी आने लगी।

नया चश्मा खरीदने की बात सोचकर वे दरवाज़े ही से लौट पड़े।

# अलग-अलग कद के दो आदमी

लम्बा व्यक्ति बाहर से लौटकर आया था। उसका चेहरा अपने कद की ही तरह लम्बा लग रहा था। चुपचाप कुर्सी पर बैठकर अपनी दोनो हथेलियों को अपने चेहरे पर ऊपर-नीचे फेरने लगा। पहले से इन्तजार करते हुए छोटे व्यक्ति ने उसे गौर से देखते हुए पूछा, "लौट आए ?"

लम्बे व्यक्ति ने कोई जवाब नहीं दिया। चेहरे पर हथेलियाँ फेरना जारी रखा। उसने दोबारा पूछा, "क्या हुआ ?"

लम्बे ने चेहरे पर से हथेलियाँ हटाई नही, नीचे खिसका लीं। उँगलियों के बीच की झिरियाँ उसकी आँखों पर आ गई थी। वह झिरियों से देखता रहा, कुछ बोला नहीं। छोटे की आवाज में कुछ तेजी आ गई, "कुछ बोलोगे या मनहूसो की तरह बैठे रहोगे ?"

लम्बा व्यक्ति एकाएक उठ खड़ा हुआ और तेज आवाज में बोला, "तुम्हें मेरे साथ चलना है।"

छोटे व्यक्ति के चेहरे से लगा वह एकदम झुंझला पड़ेगा। लेकिन बड़े संयत ढंग से पूछा, "कहाँ ?"

"कहीं भी।"

"जगह का नाम तो बताओ ?"

"इसका मतलब तुम्हें नहीं चलना है, तो फिर मैं जाता हूँ।"

छोटा व्यक्ति कुर्सी से उठ खड़ा हुआ और हाथ ऊँचा करके लम्बे व्यक्ति के कंधे पर रख दिया। धीरे से पूछा, "आखिर बात क्या है, डाइरेक्टर माना नहीं ?"

उसने बड़ी अजीब टोन में उत्तर दिया, "मैं कह रहा हूँ चलो, तुम जिरह किए जा रहे हो !"

छोटे ने उसके चेहरे की ओर देखा और गर्दन को झटका देकर बोला, "अच्छा चलो, कहाँ चलते हो ?"

दोनों कमरे से बाहर निकले। लम्बा व्यक्ति आगे-आगे, छोटा पीछे। सड़क पर चलते हुए वे दोनों आपस में कुछ नहीं बोल रहे थे। अँधेरी गलियों से भी चुपचाप निकले चले गए। सामने से कोई आता था तो लम्बा व्यक्ति एक तरफ़ हो जाता था। कभी-कभी गली सँकरी होने की वजह से दीवार से भी चिपक जाना पड़ता था। छोटा उसका अनुकरण करता हुआ आगे बढ़ रहा था। शाम का वक़्त था, लोग सड़क पर टहलते चले जा रहे थे। लेकिन ये दोनों झपटकर चल रहे थे।

काफ़ी दूर चल लेने के बाद छोटे ने फिर पूछा, "आखिर कहाँ जा रहे हो, कुछ बताओगे या यों ही चलते रहोगे ?"

लम्बा खामोश रहा। आगे जाकर एकाएक रुक गया और उँगली से दिखाकर बोला, "यहाँ।"

"बॉर में ?" छोटा थोड़ा चमक गया था।

"हूँ।"

"तुम जानते हो मैं पीता नहीं।"

"हूँ।"

"फिर?"

"मैं तो पीता हूँ।"

"तो मुझे क्यों लाए?" छोटे व्यक्ति को गुस्सा आ गया।

लम्बे ने बड़े इत्मीनान के साथ कहा, "मैं पिऊँगा, तुम बैठे रहना।"

•

वे दोनों अन्दर साथ-साथ घुसे। लम्बे व्यक्ति का चेहरा काफी खामोश था। छोटा कुछ डरा हुआ था और पसोपेश में पड़ गया था। पूरे हॉल में खाली कुर्सियाँ-ही-कुर्सियाँ थीं। मैनेजर काउंटर पर बैठा हिसाब-किताब कर रहा था। बैरा बावर्चीखाने (पेन्ट्री) के दरवाजे में एक दीवार से पीठ टिकाए, दूसरी दीवार से टाँगें अड़ाकर आड़ा खड़ा, छत की ओर सिगरेट का धुआँ छोड़ रहा था। हॉल का अन्दर किसी बड़े रोड का कमरे जैसा-सा लगता था। सड़क की तरफ लगे 'कम्पार्टमेन्टों' के पर्दे अभी खींचे नहीं गए थे।

लम्बे मित्र ने खामोशी बनाए रखने का प्रयत्न करते हुए पूछा, "कहाँ का केबिन है?"

"जहाँ चाहो।"

वह केबिन की ओर बढ़ गया। पीछे-पीछे छोटे वाला भी। छोटे को कुर्सी और मेज़ के बीच से निकलने के लिए घुटनों को थोड़ा घुमाना पड़ा। लम्बा व्यक्ति 'कुशन' के एक कोने पर बैठकर दोनों को सामने रख और कहने लगा, "मैं बाहर भी बैठ सकता था, मुझे यहाँ और अच्छा है..."

छोटा थोड़ी देर चुप रहा फिर बोला, "हाँ तुम्हें ही बस पीने की सूझ रही है।"

इस बात से लम्बे व्यक्ति के चेहरे की झुर्रियाँ कस गईं और चेहरा तन गया। कुछ पलों बाद सब झुर्रियाँ अपनी-अपनी जगह पर

आने लगी । वह दोबारा उतना ही गम्भीर हो गया था । हालांकि उसके इस क्षणिक परिवर्तन ने खामोशी का सन्दर्भ बदलकर दूसरा कर दिया था ।

लम्बे ने बैरे को बुलन्द आवाज में पुकारा । छोटे के चेहरे पर मुस्कराहट आ गई । बैरा कुछ देर बाद रिपीट करने के अन्दाज में आकर खड़ा हो गया । लम्बे व्यक्ति ने बैरे पर एक नजर डाली, एक पांव को थोड़ा मुड़ा और समगाई पीठ देखकर पूछा, "तुम्हारे पैर में तकलीफ़ है ?"

बैरा सीधा खड़ा हो गया । लेकिन उसके चेहरे पर झुंझलाहट आ गई । लम्बे ने दूसरे से पूछा, "क्या लोगे ?"

उसके जवाब देने से पहले ही लम्बे वाले ने खुद ही कहा, "तुम तो कॉफ़ी लोगे, अच्छा इनके लिए कॉफ़ी लाओ ।"

"आप ?"

"क्या है ?"

बैरे ने सामने वाली मेज पर रखा 'मीनू' उठाकर उसकी ओर बढ़ा दिया । उसने बिना मीनू देखे कहा, "रम डबल पैग, सोडा खोलकर न लाना ।"

"खाने के लिए ?"

"खाने के लिए···" लम्बे व्यक्ति ने दोहराया ।

"क्या है ?"

बैरा फिर मीनू के सफ़े पलटने लगा । लेकिन लम्बे व्यक्ति ने जल्दी से बता दिया, "दो अंडों का आमलेट···प्याज़ ज़रा ज़्यादा ।"

"आमलेट में देर लगती है···"

लम्बे वाला चिल्लाने को हुआ, लेकिन बैरा के चेहरे पर नज़र डालकर फिसफिसाते हुए कहा, "ठीक है, ले आओ ।"

बैरा चला गया ।

●

छोटा, लम्बे व्यक्ति की ओर देख रहा था । उसके हाव-भाव बिछी हुई

सफेद चादर के नीचे रेंगते हुए कीड़ों की तरह लग रहे थे। आखिर उसने पूछा ही, "डाइरेक्टर से बात हुई ?"

"हूँ" कहकर वह चुप लगा गया। कुछ देर बाद उसने दोबारा कहा, "एक्सपर्ट तो वही है न ?"

लम्बे ने फिर लम्बी "हूँ ऽ" कर दी। छोटे के होंठ मुस्कराने की स्थिति में आते-आते रह गए, "तुम्हारा लिया जाना (सिलेक्शन) तो निश्चित (श्योर) है, तुम्हारे ही डाइरेक्टर तो एक्सपर्ट हैं और क्या चाहिए।"

इस बार लम्बे व्यक्ति के होंठों पर ये शब्द लौटते हुए-से लगे। दूसरे ने फिर बात को तोड़ा, "तुमसे डाइरेक्टर तो खुश हैं ही, तुम्हारे पिता के दोस्त ठहरे। तुम ही तो बता रहे थे न सुबह !"

लम्बे व्यक्ति ने जाँचने वाली दृष्टि से उसकी ओर देखा। छोटे के चेहरे पर कोई ऐसा-वैसा भाव नहीं था। लेकिन लम्बे के चेहरे से लगा, एक-आध चोट खाकर वह बिखर जाएगा।

दूसरे ने बात को घुमाकर कहा, "कमीशन का रुख तो ज्यादातर 'एक्सपर्ट' की राय पर निर्भर करता है। इस बार तुम्हें रिजेक्ट नहीं करेगा।"

लम्बा वाला एकाएक बोला, "उस डाइरेक्टर की माँ की···" फिर एक-दम रुक गया। लम्बे पॉज के बाद फिर कहा, "होना होगा तो नहीं होने देगा।"

बैरा रंगीन गिलास में दो पैग बराबर रम और सोडे की बोतल लेकर आ गया था। गिलास मेज पर रखकर उसने सोडे की बोतल खोली। उस लम्बे आदमी ने आधे से कम सोडा अपने गिलास में उँडेल लिया और मिक्स होते हुए देखने लगा।

"आमलेट ?"

बैरा थोड़ी दूर चला गया। उसे बुलन्द आवाज के साथ कहना पड़ा, "प्याज ज्यादा लाना···नमक-मिर्च भी।" बैरा सीधा चला गया था।

लम्बे व्यक्ति ने गिलास उठाकर घूंट भरा। जबान को थोड़ी पतली करके होंठों पर फेरते हुए सिगरेट सुलगाने लगा। दियासलाई की रोशनी में उसका सिगरेट जलाता हुआ चेहरा थोड़ा और बिगड़ गया। सिगरेट में दम लगा लेने के बाद उसके चेहरे पर छनी हुई मुस्कराहट आ गई थी। उसने छोटे से कहा, "तुम तो सिगरेट भी नहीं पीते···" और मुस्करा दिया।

छोटे ने भी अपनी हंसी को संयत करते हुए कहा, "तुमने डाइरेक्टर वाली बात फिर गोल कर दी।"

वैरा आमलेट, प्याज, नमक, मिर्च ले आया। लम्बे व्यक्ति ने प्याज का टुकड़ा मुंह में रखते हुए पूछा, "और कॉफ़ी···"

"लाता हूँ सा'ब। इस समय कॉफ़ी बनने में थोड़ी देर लगती है··· काम का वक्त है।"

लम्बे वाला बड़ी सुरुचि से आमलेट को बराबर-बराबर टुकड़ों में काट रहा था। आमलेट के कटे हुए टुकड़ों पर सॉस लगाकर एक-एक टुकड़ा मुंह में रखता जा रहा था।

छोटा अपनी बात उकेरने के चक्कर में था। अपनी बात को घुमा-फिराकर फिर लाइन पर लाया—"लगता है डाइरेक्टर से तुम्हारी मुलाकात नहीं हुई।" लम्बे मित्र का पूरा चेहरा एक उत्तर नज़र आने लगा। छोटे की आँखों में शैतानी आ गई, लेकिन बहुत धीमे और सहानुभूतिपूर्ण स्वर में बोला, "तुम ऐसे क्यों हो गए, कोई ख़ास बात ?"

"वह स्साला···" कहकर आमलेट का टुकड़ा मुंह में रखा और एक बड़ा घूंट भरकर नाराज़गी के साथ बोला, "पूछता था···मैं नैनीताल गया था, तुम कहाँ थे···उस हरामजादे की लुगाई के पास···उस स्साले को यह बताता मैं कहाँ था !"

अन्तिम घूंट भरकर उसने ज़ोर से पुकारा, "वैराए् !"

बराबर के केबिन से बातें करने की आवाज़ आने लगी थी। सामने की मेज़ पर भी एक सज्जन आ गए थे। बियर का गिलास सुड़क रहे

थे। लम्बे व्यक्ति के चिल्लाने से सामने वाले सज्जन ने झुककर उन लोगों की ओर देखा। उन सज्जन के चेहरे से लगा, उसके जवाब में वे चिल्लाकर कहेंगे 'चौप्प···बे'। लेकिन उन्होंने कुछ कहने के बजाय अपनी बियर और ज़ोर से मुड़क ली। बराबर वाले केबिन में कुछ क्षणों तक चुप्पी रही, फिर बड़ी ज़ोर से कहकहा लगा।

बैरा आ गया था। लम्बे व्यक्ति ने एक पैग और लाने के लिए कहा, "जल्दी से।"

मटन कटलेट भी मँगाए। कॉफी अभी तक नहीं आई थी। इस बार छोटे वाले ने ही बैरा को याद दिलाया, "कॉफी भी।"

"हाँ, हाँ कॉफी भी आती है," कहता हुआ बैरा चला गया।

लम्बा व्यक्ति अपनी बात पूरी करता हुआ बोला, "हालांकि मैंने उसे बता दिया कि छुट्टी लेकर लखनऊ गया था, पर वह पागलों की तरह गर्दन हिला रहा था जो ··तो···बैठने तक के लिए नहीं कहा!"

छोटे ने गम्भीरतापूर्वक अपनी राय जाहिर की, "तो कोई खास बात नहीं हो सकी।"

"बात! मैं उस साले से बात करता। वो बात करने लायक़ आदमी है···हुँह। मैं थोड़ी देर खड़ा रहकर चला आया, सिलेक्शन नहीं होने देगा तो न होने दे। मैं परवाह करता हूँ।" उसके चेहरे पर सिमटन उभर आई। आँखें छोटी-छोटी और ताज़ी नज़र आने लगीं।

पैग आ गया था। इस बार बचे हुए सोडे में से भी आधा मिलाया। प्लेट में बचे आमलेट के एक-दो टुकड़ों के सहारे पूरा पैग गटागट पी गया।

•

बराबर वाले केबिन के लोग ज़ोर-ज़ोर से बातें कर रहे थे। किसीका सरकार के विरुद्ध 'रिट' मंज़ूर हुआ था। उसीकी ओर से पार्टी थी। वह आदमी आवेश में था, "सरकार क्या समझती है अपने को···बाबू शिवमोहन के साथ साबका पड़ा है···ठंडा कर देंगे···इस साले मिनिस्टर

लम्बे व्यक्ति ने गिलास उठाकर घूंट भरा। जबान को थोड़ी पतली करके होंठों पर फेरते हुए सिगरेट सुलगाने लगा। दियासलाई की रोशनी में उसका सिगरेट जलाता हुआ चेहरा थोड़ा और बिगड़ गया। सिगरेट में दम लगा लेने के बाद उसके चेहरे पर छनी हुई मुस्कराहट आ गई थी। उसने छोटे से कहा, "तुम तो सिगरेट भी नहीं पीते···" और मुस्करा दिया।

छोटे ने भी अपनी हँसी को संयत करते हुए कहा, "तुमने डाइरेक्टर वाली बात फिर गोल कर दी।"

बैरा आमलेट, प्याज, नमक, मिर्च ले आया। लम्बे व्यक्ति ने प्याज का टुकड़ा मुंह में रखते हुए पूछा, "और कॉफ़ी···"

"लाता हूँ सा'ब। इस समय कॉफ़ी बनने में थोड़ी देर लगती है··· काम का वक्त है।"

लम्बे वाला बड़ी सुरुचि से आमलेट को बराबर-बराबर टुकड़ों में काट रहा था। आमलेट के कटे हुए टुकड़ों पर सॉस लगाकर एक-एक टुकड़ा मुंह में रखता जा रहा था।

छोटा अपनी बात उकेरने के चक्कर में था। अपनी बात को घुमा-फिराकर फिर लाइन पर लाया—"लगता है डाइरेक्टर से तुम्हारी मुलाकात नहीं हुई।" लम्बे मित्र का पूरा चेहरा एक उत्तर नजर आने लगा। छोटे की आँखों में शैतानी आ गई, लेकिन बहुत धीमे और सहानुभूतिपूर्ण स्वर में बोला, "तुम ऐसे क्यों हो गए, कोई खास बात ?"

"वह स्साला···" कहकर आमलेट का टुकड़ा मुंह में रखा और एक बड़ा घूंट भरकर नाराजगी के साथ बोला, "पूछता था···मैं नैनीताल गया था, तुम कहाँ थे···उस हरामजादे की लुगाई के पास···उस स्साले को यह बताता मैं कहाँ था !"

अन्तिम घूंट भरकर उसने ज़ोर से पुकारा, "बैराए !"

बराबर के केबिन से बातें करने की आवाज़ आने लगी थी। सामने की मेज़ पर भी एक सज्जन आ गए थे। बियर का गिलास सुड़क रहे

थे। लम्बे व्यक्ति के चिल्लाने से सामने वाले सज्जन ने झुककर उन लोगों की ओर देखा। उन सज्जन के चेहरे से लगा, उसके जवाब में वे चिल्लाकर कहेंगे 'चौप्प···ब्वे'। लेकिन उन्होंने कुछ कहने के बजाय अपनी बियर और जोर से सुड़क ली। बराबर वाले केबिन में कुछ क्षणों तक चुप्पी रही, फिर बड़ी जोर से कहकहा लगा।

बैरा आ गया था। लम्बे व्यक्ति ने एक पैग और लाने के लिए कहा, "जल्दी से।"

मटन कटलेट भी मँगाए। कॉफी अभी तक नहीं आई थी। इस बार छोटे वाले ने ही बैरा को याद दिलाया, "कॉफी भी।"

"हाँ, हाँ कॉफी भी आती है," कहता हुआ बैरा चला गया।

लम्बा व्यक्ति अपनी बात पूरी करता हुआ बोला, "हालाँकि मैंने उसे बता दिया कि छुट्टी लेकर लखनऊ गया था, पर वह पागलों की तरह गर्दन हिला रहा था नो ··नो···बैठने तक के लिए नहीं कहा!"

छोटे ने गम्भीरतापूर्वक अपनी राय जाहिर की, "तो कोई खास बात नहीं हो सकी।"

"बात! मैं उस साले से बात करता। वो बात करने लायक आदमी है···हुँह। मैं थोड़ी देर खड़ा रहकर चला आया, मिलेक्शन नहीं होने देगा तो न होने दे। मैं परवाह करता हूँ।" उसके चेहरे पर सिमटन उभर आई। आँखें छोटी-छोटी और ताजी नजर आने लगीं।

पैग आ गया था। इस बार बचे हुए सोडे में से भी आधा मिलाया। प्लेट में बचे आमलेट के एक-दो टुकड़ों के सहारे पूरा पैग गटागट पी गया।

●

बराबर वाले केबिन के लोग जोर-जोर से बातें कर रहे थे। किसीका सरकार के विरुद्ध 'रिट' मंजूर हुआ था। उसीकी ओर से पार्टी थी। वह आदमी आवेश में था, "सरकार क्या समझती है अपने को···बाबू शिवमोहन के साथ साबका पड़ा है···ठंडा कर देंगे···इस साले मिनिस्टर

की ऐसी की तैसी मारूँ। साले हमें ही मोअत्तल करेंगे।"

"क़ानून साथ देगा, कभी-कभी पैसा का पैसा गर्क हो और वेवकूफ वनो।" शायद यह वात कहने वाला आदमी उसका क़ानूनी दोस्त नहीं था।

"अवे तुम मुझे 'तिया समझते हो। साले अफसरी की है···घास नहीं खोदी। जितनी इन मिनिस्टरों को तनख्वाह मिलती है मेरा वाप हाली ग्वालों में वाँट देता है। माऽऽदर···।"

लम्वा व्यक्ति चुप हो गया था, छोटे से वोला, "ठीक कहता है··· मेरा वाप भी इन सालों की···" वह कुछ वोल नहीं पाया, गर्दन झुक-सी गई।

वैरा कटलेट ले आया था। लम्वे वाले ने झटके के साथ गर्दन उठाकर उसे देखा "अवेऽ पेग नहीं लाया ?"

"जी, अभी लाता हूँ, डवल पैग साहव ?"

"अवे हमने कभी सिंगल पिया है ?"

वैरे के चेहरे पर प्रसन्नता नजर आ रही थी।

उसने धीरे से पूछा, "सोडा भी ?"

"नोव् सोडा।"

वैरे के जाने पर वह छोटे व्यक्ति के नजदीक मुँह ले जाकर वोला, "सोचता था कुछ दिन और रह जाता···" वदवू के कारण छोटे वाले ने मुँह घुमा लिया था। लेकिन उसे लगा लम्वे वाला पिघलता जा रहा है।

"वच्चे···वीवी, सव कहाँ···" वोलते-वोलते वह एकाएक रुक गया। चेहरा सख्त होने लगा और तमतमा आया, "साले नहीं सिलेक्शन करेंगे तो कद्दू से···मैं कौन सालों से नौकरी माँगने जाता हूँ ?"

छोटा थोड़ा सहमा-सहमा हो गया था। उसने तपाक से कहा, "ठीक तो है, तुम नौकरी क्यों करोगे।"

लम्वे व्यक्ति ने लम्वी 'हूँऽऽ' भरी। 'हूँ' के माध्यम से शायद उसने वरावर के केविन में वैठे उस मोअत्तल अफसर की वात दोहरानी चाही

थी, "मेरा बाप तो इतना रुपया डाली प्यालों में और [illegible]"

टबल पैग भी आ गया था, काँउी भी। बैरा ने [illegible] फिर केतली, प्याला, चीनी, पानी वगैरह [illegible]

बैरा के चले जाने के बाद लम्बे व्यक्ति ने [illegible] देखा। थोड़ा मुस्कराते हुए कहा, "पियो, पियो। [illegible] पीता हूँ···इस समय तुम ही पियो।"

वह बिना उसकी ओर देखे अपना प्याला [illegible] व्यक्ति ने बोतल में बचा लगभग चौथाई [illegible] था और आँखें मिचमिची करके पैग को देख रहा [illegible] के साथ खाली बोतल हिलाता हुआ [illegible] प्याला जल्दी खाली कर दो···" [illegible] लगी थी।

बगावर के केबिन में वह [illegible] था, लेकिन उसकी बात [illegible] था···रिट वापस ले लो, [illegible] चोरी है, अबे नहीं लेते, [illegible]!" [illegible] चिल्लाया।

किसी दूसरे ने [illegible] देता है?"

इस बार रिट [illegible] "मेरी बात सुन [illegible]

कोई सुन्न [illegible] पास!" किसी [illegible] सी दई थी।

[illegible]

मत करा वह [illegible]

सामने
में कहना
[illegible] जल्दी दो
[illegible] लगी
[illegible] इधर-उधर
[illegible] मन बैठा
[illegible] दिया था।
[illegible] की तैयारी
[illegible] बना रहा
[illegible] और गौर से
[illegible]?"
[illegible] बिना परि-
[illegible]। [illegible] की
[illegible] वाले केबिन के
[illegible] जाने या [illegible]-
[illegible] पर रही थी।
[illegible]-[illegible]
[illegible] नजर आ रहा
आँखों में सुरती
[illegible]

लोगों को भी अपने साथ मिलाऊँगा···" एक लम्बा घूंट भरा, थोड़ा-सा आगे झुककर छोटे वाले के कान के पास मुंह ले जाने का प्रयत्न करते हुए बोला, "मैंने तैयारी कर ली है···सिर्फ तुम्हें ही बता रहा हूँ··· किसीसे···कहना मत। ये आडरेवटरवा जेल काटेगा।" और हो-हो करके हँसने लगा।

एक घूंट और भरा और अपने साथी की ओर टकटकी बांधकर देखता रहा। पहले छोटे व्यक्ति ने हँसना चाहा, फिर चेहरे पर असुविधा-सी दिखलाई पड़ने लगी।

एकाएक बिजली चली गई। लम्बा व्यक्ति चिल्लाया, "जलाओप्" और एक गंदी-सी गाली दे दी। बराबर वाले केबिन से एक क़हक़हा सुनाई दिया। फिर वे लोग भी गालियां देने लगे, "अबे, बिजली बन्द की है तो अपनी बहन को ले आ।"

लम्बा व्यक्ति दुखी हो उठा था। बड़ी मुश्किल से कह पाया, "···फूहड़ हैं!"

सड़क की तरफ़ वाले शीशों पर जो पर्दे खिंच गए थे, बिजली चली जाने के कारण हटा दिये गए। सड़क की रोशनी के गोले, त्रिकोण, चतुर्भुज अनेक ज्यामितीय आकार हॉल में बिखर गए।

एक गोले का चौथाई भाग उनकी मेज़ पर भी था। वह घूंट भरकर अपना गिलास उस कटे हुए गोले के बीचोंबीच रख देता था। गिलास में रोशनी घुल जाने के कारण शराब का रंग थोड़ा खुल गया था।

लम्बे व्यक्ति ने अपने साथी को गिलास दिखाकर कहा, "देखाऽऽ, हमने रोशनी को गिलास में भर लिया···हम रोशनी पीते हैं, तुम भी पियो।" वह अपना गिलास उसके मुंह से लगाने लगा।

छोटे ने उसका हाथ अलग हटाते हुए पूछा, "तुम अभी किस तैयारी की बात कर रहे थे?"

बैरा मोम टपकाकर मोमबत्ती का टुकड़ा मेज़ पर जमा रहा था। लम्बे व्यक्ति ने उसकी बात को नज़र-अन्दाज़ करके बैरा से कहा, "इसे

यहाँ क्यों टपकाते हो···कहीं और ले जाओ। भले आदमियों के सामने ऐसा मजाक नहीं करना चाहिए। गन्दी बात···" बैरा ने धीरे से कहना चाहा, "सा'ब रोशनी···।"

छोटा व्यक्ति बीच ही में बोला, "ठीक है, लगा दो।"

*लम्बा मात्र उसे देखता रहा। दूसरी मेजों पर मोमबत्तियाँ जला दी* गईं। मोमबत्तियों की लौ के काँपने से चारों दीवारें भी काँपने लगती थीं। मेजों पर रखी मोमबत्तियों के नीचे अँधेरे के गोले इधर-उधर लुढ़कने लगे थे। लम्बे व्यक्ति ने इधर-उधर देखकर पूछा, "यह सब कैसा लग रहा है?" उसने अपना गिलास मोमबत्ती के आगे रख दिया था।

दूसरे ने अपने सवाल को फिर दोहराया, "तो जिस तरह की तैयारी का तुम जिक्र कर रहे थे, पूरी हो गई?"

"तुम जानते हो। उँहु, ना ऽ ही जानते—मैं कुमायूँ लैंड बना रहा हूँ।" कहकर वह फिर डूब-सा गया। छोटे वाला उसकी ओर ग़ौर से देखता रहा। जब उसने गर्दन उठाई तो फिर पूछा, "अकेले हो?"

"नाऽ ही, बड़े बाबू—दफ्तर के साऽब लोग! अतरिम जिला परिषद् वालों से भी बात हो गई—वहाँ भी साब तैयार हैं। अध्यक्ष को राष्ट्रपति के लिए कह दिया है।"

हॉल में आवाज़ें डूबती-सी जा रही थीं। बराबर वाले केबिन के लोग भी एकदम खामोश थे। गिलासों के मेजों पर रखे जाने या काँटा-छुरी के प्लेटों से टकराने की आवाज़ें समयान्तर से सुनाई पड़ रही थीं। मेजों पर जलती मोमबत्तियों के कारण सामने की दीवार पर ढापू-ढापू-सी आकृतियाँ बन गई थीं। उनमें से एक के चश्मे में *सुराख नज़र आ रहा* था। उस परछाईं का वही प्रकाशबिन्दु था।

बाहर बियरवाला आदमी बिल चुका रहा था। आँखों से सुइयाँ उभर आई थीं। उसका झुका हुआ सिर दीवार पर कई गुना दिखलाई पड़ रहा था। छोटे व्यक्ति को दिखाकर उसने कहा, "ये, हमारे राष्ट्रपति का सिर है।"

छोटे ने पूछा, "तुम देश को टुकड़ों में क्यों बाँटना चाहते हो ?"

लम्बे व्यक्ति ने बड़ी मुश्किल से उसकी ओर देखकर फूहड़-सी गाली दी, " 'निया की घोड़ी—तुम नाऽहीं समझोगे । मैं उसको वेन—बनाना चा'ता हूँ ।" अन्तिम बात उसने गोपनीयता बनाये रखते हुए कही थी ।

कुछ रुककर बोला था, "दैट इज पालिटिक्स···यू आर चाइल्ड ।"

"किसीसे कहना मत—तुम्हा'रा भी ख़याल रखूँगा···।"

बची हुई मुँह में उँड़ेलकर छोटे वाले की ओर देखता हुआ बुदबुदाया । "अगर सिलेक्शन नहीं हुआ···तो···तुम सरकार के पास जाकर कह देना···मुझे पकड़कर ले जाएगी···मिनिस्टर···बना देगी ।" उसके चेहरे पर कई रेखाएँ एक साथ इकट्ठी हो गईं । होंठ सिकुड़ गए ।

धीरे-धीरे चेहरे की रेखाओं को कम करता हुआ बोला, "मेरी कुंडली में डिक्टेटर का योग है,—हिटलर—मुसोलिनी···। इन सालों को तो बान्द कर दूँगा—हाथ जोड़ेंगे, माफी माँगेंगे ।" हा-हा···हँसने लगा ।

"तब इनका बाप सिलेक्शन करेगा—नईं तो सालों को डिसमिस—डिसमिस—डिस···।" छोटा उसके हर व्यवहार को बड़े ग़ौर से देख रहा था ।

उसने अपनी केतली का ढक्कन उठाकर देखा । कॉफ़ी बाकी थी । वह एक प्याला और बनाकर पीने लगा ।

लम्बे व्यक्ति की गर्दन एक ओर लुढ़की हुई थी । कुछ देर बाद फिर उसने आँखें खोलीं । उसे कॉफ़ी पीते हुए देखकर बोला, "देखो, मजा आया—। हाँऽ, प्याले में ही पियो—किसीको शक नाईं होगा—।"

"आऽब, तुम मेरी केबिनेट में लिये जा सकते हो—माई मिनिस्टर," उसने पीठ पीछे टिका ली ।

बराबर वाले केबिन में बैठे हुए लोग उठने लगे थे । खटपट की आवाज हो रही थी । छोटे व्यक्ति ने धीरे से कहा, "चलो दस बज गए ।"

"नाऽहीं, मुझे इंटरव्यू में बैठना है—आई विल सी—दैट बगर

डाइरेक्टर इज नाट मिलेक्टेड।" लम्बा व्यक्ति एकाएक नाराज हो गया था।

बिजली आ गई। दीवार पर बनी ढापू-ढापू आकृतियाँ गायब हो गईं। लम्बे ने चारों तरफ देखा और धीरे से बोला, "चलोऽऽ।"

रास्ते में लम्बा व्यक्ति धीरे से बोला, "शायद मैं बहुत पी गया हूँ—अब इंटरव्यू कैसे दूँगा—तुम साथ चलना।"

थोड़ी देर बाद फिर कहा, "मेरी तरफ़ से माफी माँग लेना—डाइरेक्टर कहता था तुम इर्रेसपोंसिबल हो—"

छोटे व्यक्ति के कंधे से सिर टिकाकर लम्बा व्यक्ति सिसकने लगा।

# परछाइयाँ

वह बाजार गई हुई थी। आंगन में बैठकर मैं उसकी प्रतीक्षा कर रहा था।

हमेशा की तरह आज भी लग रहा था मेरा घर किसी पहाड़ी पर है। ऊँट की काठी-सी सामने वाले होटल की छत के सिवाय बाकी सब-कुछ अन-हुआ-सा था।

अँधेरा भगोड़े विद्यार्थियों की तरह पीछे के दरवाजे से दबे-पांव क्लास में घुस जाने का प्रयत्न कर रहा था। उसके लौटने में अभी आधा घण्टा शेष था। सात बजे तक लौट आने के लिए कह गई थी।

मैंने आकाश की ओर देखा। शाम अब अपने असली रंगों में प्रकट होने लगी थी। इस बीच 'उसका' आना मुझे इस तरह महसूस होता रहा था, कोई पन्द्रह-सोलह साल का लड़का पहली बार बन्दूक चलाने के बहुत पहले से ही उसका धड़का महसूस

करता है। कुंडी का खटक जाना, पदचाप और हुमकती साँसें, जाते समय वह इन सबको मेरे पास छोड़ गई थी।

सुबह गाड़ी से उतरकर जब वह आई थी, मैं बाहर आँगन में ही बैठा सुबह के आने और रात के जाने का मिलान कर रहा था। पीपल का एक नया पत्ता किरण के साथ खेलने में बेख़बर था, कभी-कभी उसका अक्स मेरी आँखों में भी गड़ जाता था। उस समय भी मेरे दिमाग़ में उसके आने की बात थी।

●

उसके आने में देर होती जा रही थी। सूने में बैठे-बैठे मुझे ठंड लगने लगी थी। मैं कुर्सी से उठा और नंगे तलवों को मोड़कर हिलता-डुलता अन्दर कमरे में चला आया। कमरे में अभी भी अँधेरा था। वहाँ पर रखे शीशे, पीतल और चाँदी के 'शो-पीस' इक्के-दुक्के प्रतिक्रियावादियों की तरह अँधेरे की सत्ता का विरोध कर रहे थे। बत्ती जला दी। कमरे में रखी अन्धकारमयी वस्तुएँ तो खिल ही उठीं, उन शो-पीसों को भी प्रकाश के थोड़े-थोड़े कण मिल गए। सबसे अधिक वे ही चमकने लगे। मैं बड़ी कुर्सी पर बैठ गया और पाँव फैलाकर दिमाग़ को आराम देने की कोशिश करने लगा। दिमाग़ पूरी बर्थ खाली छोड़कर कोने में सिकुड़कर बैठा यही सोचने में लगा था—'सफ़र में आराम कहाँ!'

'क्या उसका रात में यहाँ रहना ठीक होगा?' इस प्रश्न ने मेरे हृदय को छू दिया। मुझे डर था, कहीं सब भावावेगों को इकट्ठा करके वह मुझसे झगड़ना न शुरू कर दे। लेकिन यह जानकर आश्चर्य हुआ, कभी-कभी हृदय भी दिमाग़ की तरह ही व्यवहार करता है।

मैंने दिमाग़ के इस बचकाने सवाल को अनसुना कर दिया था। दस रोज़ पहले जब उसका ख़त आया था, अमुक तारीख़ को पहुँच रही हूँ, तो दिमाग़ ने इस सवाल पर बहुत ठण्डी तरह सोचा था। जैसे वह सवाल सड़क पर पड़ी लावारिस लाश हो। लेकिन अब उसके आ जाने पर इस तरह के सवाल उठाए जाने को मैंने अव्यवस्था उत्पन्न करने

दुर्भावनापूर्ण प्रयत्न ही समझा ।

●

दरवाजे पर खटका हुआ । खटके का झटका मेरे पूरे शरीर को महसूस हुआ । ज़ीने से उतरते हुए उसकी पिंडलियाँ ट्यूब-लाइट्स-सी दिखाई पड़ती हैं । मुझे लगा जैसे भूली हुई समीकरण का सूत्र मिल गया है । लेकिन उस समीकरण को इस समय दोहराना उचित न समझकर, मन को विरलता में भटकने के लिए छोड़ दिया ।

फैले हुए पांव सिकोड़ लिये, लेकिन खड़े होने पर महसूस किया कि पैरों में जूता नहीं है । इस बार तलवों को सिकोड़कर अपाहिजों की तरह चलना मुझे रुचिकर नहीं लगा । कुण्डी लगातार खटखटाई जाती रही । मेरा नौकर पीछे रसोई में खाना बना रहा था । मैंने उसे पुकारा, "देखो, कौन है ?" सिकुड़े हुए तलवे पुनः फैला दिए । उस समय कुर्सी पर बैठे रहना ठीक वैसा ही लग रहा था, जैसे हवाई जहाज में पहली बार बैठने पर उड़ान से पहले लगता है । कुण्डी खुलने की आवाज आई, वहीं बैठे-बैठे मैंने महसूस किया कुण्डी खुलकर निर्जीव-सी लटक गई है और लगातार हिल रही है ।

वह बाहर से ही चहकती हुई अन्दर आई, "मुझे थोड़ी देर हो गई—उन्हें उन्नावी रंग पसन्द है न—इस रंग की ऊन बड़ी मुश्किल से मिली ।" वह मेरे बिलकुल सामने आ खड़ी हुई, पूछा, "तुम अकेले बैठे क्या कर रहे हो ?" मुँह से अनायास निकल पड़ा, "इन्तजार ।"

मैंने देखा उसके होंठों पर छलकती हुई हँसी सहमकर ठिठक गई है । अपने उन शब्दों को मन-ही-मन दोहराकर देखा भी, ऐसा कुछ भी नहीं कहा गया था, जिससे उसकी मुस्कराहट सहम जाए ।

यह सब ठीक इसी तरह हुआ, जैसे मशीन की गड़बड़ी के कारण सिनेमा का कोई दृश्य पर्दे पर कुछ अधिक देर ठहर जाता है । वह फिर हँसने और चहकने लगी, "दरअसल मुझे रुक जाना पड़ा—वैसे मैं जल्दी भी आ सकती थी । सोचा, तुम इतनी देर में नहा-धोकर ताजा हो लोगे ।"

'ताजा' शब्द के साथ ही उसके होंठों पर एक विस्तृत मुस्कराहट फैल गई थी।

जब वह यह सब कहती जा रही थी, मैं उसके चेहरे को बड़े धैर्य के साथ देख रहा था। उसके चेहरे पर एक परछाईं और थी जिसे मैं पहचान नहीं पा रहा था। बीच-बीच में उसने कई बार अपने 'उन' का भी उल्लेख किया। उसका 'उन' कहना धूप की भाँति ही मुझे सूर्य की उपस्थिति का अहसास करा रहा था। मैं उसके हिलते हुए होंठों को बड़े गौर से देख रहा था, एक सुर्ख कागज का गुलाब कटा हुआ था। मेरे मन में एक सवाल उठा, सोचा पूछूँ, 'इन रंगों से रँगकर उसने मुस्कराहट की वास्तविकता क्यों नष्ट कर दी ?' यह मेरा विषय नहीं था। अब तो मैं सिर्फ इतना ही कह सकता था, तुम्हारी साड़ी अच्छी है, या जो सामान वह खरीदकर लाई थी, तटस्थ भाव से उसकी प्रशंसा कर सकता था। वह अपने पति के लिए लाई हुई ऊन का बण्डल खोल रही थी। वह चाहती थी, उसके पति की ऊन के बारे में मैं अपनी भी राय दूँ। लेकिन उसके पति और अपने बीच के भेद को मैं उतना ही समझ रहा था, जितना यह जानता था कि उन्नाबी रंग मैं जीवन-पर्यन्त पसन्द नहीं कर सकता। बण्डल के खुल जाने के बाद मेरे लिए दो बातें कहनी आवश्यक थीं—एक, बड़ा अच्छा रंग है और दूसरी—बनकर सुन्दर लगेगा।

ऊन की कई गुच्छियाँ उसने मेरे सामने रख दीं। मैंने बिना छुए ही पहली बात कह दी, "बड़ा अच्छा रंग है।"

"तुम्हें भी अब यह रंग पसन्द आने लगा," कहकर मेरी ओर उसने गौर से देखा। मैंने अपनी नजरें दूसरी तरफ घुमा दीं। वह फिर बोली, "लगता है अन्दर से सब मर्द एक ही रंग पसन्द करते हैं।"

मैंने जवाब देने की बात सोची। उस जवाबी हमले का कोई फायदा न समझकर चुप हो गया। मुझे खयाल आया, ऊन को छूकर देखने के बाद दूसरी बात भी कह दी जाए। एक गुच्छी छूकर कह दिया, "बनकर अच्छा लगेगा।" उसने ऊन की उन गुच्छियों को एक के ऊपर एक

लगाकर बांधना शुरू कर दिया। गांठ बांधती हुई उसकी पतली और लम्बी उंगलियों को मैं देखता रहा, वे अच्छी लग रही थीं। एक बण्डल और खोला। उस बण्डल का एक गोला मेरे हाथ में पकड़ाकर पूछा, "यह ऊन कैसा है?" वह मेरे जवाब की आंखों से प्रतीक्षा करने लगी।

"यह ऊन···!" मैंने थोड़ा सोचकर कहा। कुछ देर तक उलटता-पलटता रहा। प्रश्नवाचक रूप में ही अपनी राय दी, "उन्नाबी रंग के सामने यह रंग 'एक्स' यानी अवकाश-प्राप्त-सा नहीं लगता?" उसकी आंखें छोटी-छोटी मछलियों की तरह डुबकी लगाकर गहरे चली गई थीं। समझ नहीं सका, मेरे इस उत्तर की उस पर क्या प्रतिक्रिया हुई। बिना निगाह देखे किसी आदमी के चेहरे से कुछ जानना, मात्र शरीर के स्पर्श से तापमान (टेम्परेचर) की डिग्री का अन्दाजा लगाना है। एक उसांस मैंने जरूर सुनी। उसे सुनकर मुझे भय हो गया। मेरे इस कमरे में अब यह उसांस सदा-सदा के लिए बस जाएगी।

कुछ रुककर उसने सीधा सवाल किया, "पहले तो यह रंग तुम्हें पसन्द था।"

मैं हँस दिया। जाने क्यों मेरे मुंह से भी एक सांस निकल गई। लेकिन मेरी उसांस का अर्थ केवल इतना ही था, जैसे कई छोटी-छोटी उसांसों के बाद एक लम्बी सांस लेकर छोड़ देने से कुछ आराम मिलता है। उसने मशीनों पर सँवारे गए उन गोलों को फिर से बांध दिया और कपड़े बदलने चली गई। मैंने अपने दोनों फैले हुए पांवों को सिकोड़कर कुर्सी पर रख लिया और पैरों की उँगलियों को मलकर खून का दौरा तेज करने लगा।

●

कपड़े बदलकर जब बाहर आई तो उसने बिना बाँह के ब्लाउज की जगह बाँह वाला ब्लाउज पहना हुआ था। उसकी ढकी हुई बाँहें देखकर मुझे एक तरह की असुविधा का-सा आभास हो रहा था। उसने मेरी नजरों और अपने अन्तस् के बीच ब्लाउज की बाँहों को ला खड़ा किया था।

हालांकि पहले मैंने ही कई बार उसके बिना बाँह का ब्लाउज़ पहनने पर आपत्ति की थी।

अन्दर कमरे से निकलकर बाहर आते हुए क्षण-भर के लिए वह उस कमरे में ठिठकी, फिर मुझ पर उचटती हुई नज़र डालकर बाहर चली गई। उसके जाने के लगभग दस मिनट बाद तक गुसलखाने का नल खुला रहा। पानी की धार मेरे मन में बिना वजह एक ईर्ष्या का-सा भाव उत्पन्न करती रही। लौटकर आई तो उसका चेहरा काफ़ी साफ़ धुला हुआ था। होंठों पर बना कागज़ का सुर्ख गुलाब भी अब नहीं रहा था, लेकिन वहाँ पर एक अनपहचाने रंग की परछाईं अभी शेष थी। उसके होंठों के कोने थोड़े-से रह गए थे। वह तख्त पर आकर बैठ गई और बाकी सामान भी तख्त पर सजाने लगी। बण्डलों में बँधा बहुत-सा सामान दिखाना अभी शेष था।

मुझे अचानक ध्यान आया, ऑफ़िस से लौटने के बाद से ही मैं अपनी पैंट की बेल्ट पेट पर से ढीली किए कुर्सी पर बैठा हूँ। पाँव तक नंगे हैं। नौकर को पुकारा। फिर याद आया—काफ़ी देर पहले नौकर चाय लगाने के लिए पूछने आया था। मैंने यही कहा था, "बीबीजी को आ जाने दो।"

नौकर फिर आकर खड़ा हो गया। फिर चाय के लिए तकाज़ा करने आ गया। लेकिन मुझे ध्यान आया कि मैंने ही उसे चप्पल लाने के लिए पुकारा है, चप्पल लाने के लिए कहते समय मैंने उससे चाय लगा देने के लिए भी कह दिया। वह चप्पल रख गया और मेरे पाँव, जो कुर्सी पर सिकुड़े हुए ही रहे थे, चप्पल में आकर फँस गए।

चप्पल पहनकर उठते हुए देखा, वह तख्त पर सामान फैलाकर मेरी तरफ़ देख रही है। ज़्यादातर ज़नाना सामान था। हर चीज़ के दो-दो अदद थे। नाइट सूट के लिए दो टुकड़े, टेरिवूल सूटिंग के दो पीस, टाई और क्लिप दो-दो। मैंने आते-जाते टेरीलिन उठाकर देखा। वह चमचमा रहा था, उसके पीछे की हरी धारी झलकती थी।

"बड़ा सुन्दर है," कहकर पिन रख लिया और दोनों पैरों से लंगड़ाता हुआ-सा बाहर चला गया।

मैं भी नल के नीचे खड़ा काफ़ी देर तक हाथ-पांव धोता रहा। मैंने सोचा—इस समय शायद वह भी कमरे में बैठी मेरी ही तरह पानी का गिरना महसूस कर रही होगी। पानी की धार जमीन से टकरा-टकराकर फुलझड़ियां छोड़ रही थी। गुसलखाने से निकलने पर महसूस हुआ शरीर पर रखा थकन का पहाड़ कुछ घुला है। कमरे में लौटकर मैंने बातों को दूसरे ढंग से शुरू करने का प्रयत्न किया। उससे मजाक किया, "वाह भाई, यह तो बिलकुल उलटी रीति है। दुनिया में पत्नियों को प्रसन्न करने के लिए पति तोहफ़े लाते हैं, और यहां…" बात मैंने मुस्कराकर अधूरी छोड़ दी।

वह हँस दी। उसकी यह हँसी मुझे किसी पहली हँसी की प्रतिध्वनि-सी लगी। वह सामान को दो बण्डलों में बांध रही थी। मैंने फिर अपने पांव ऊपर रख लिए और उसके पति के बारे में पूछने लगा, "एक्जीक्यूटिव इंजीनियर होने में कितने साल लग जाएँगे ?"

"मालूम नहीं," कहकर उसने बात समाप्त कर दी।

मैंने दूसरा सवाल किया, "उनको भी साथ ले आती तो मिलना हो जाता। तुम्हारी शादी में आना चाहकर भी न आ सका।" बात का अन्तिम अंश सुनकर उसने मेरी तरफ़ कुछ इस तरह देखा, जैसे मुखबिर के ग़लत बयान देने पर पुलिस वाले देखते हैं। मुझे विश्वास हो गया, अब फूंक मारने से राख अपने ऊपर ही आएगी।

●

नौकर आकर चाय रख गया था। साबूदाने की गरम कचरियाँ अब भी चटक रही थीं। चाय उसने ही बनाई। दूध चलनी में छानकर डालने पर भी फुटकियाँ ऊपर तैर आई थीं।

"शायद दूध फट गया," मैंने चाय का प्याला उठाकर ध्यान से देखते हुए कहा।

"नहीं—अभी नहीं फटा। लेकिन इसी तरह रखा रहता तो छेना बन गया होता।" वह मुस्करा दी।

हम दोनों चुपचाप चाय पीते रहे। बीच-बीच में न जाने मुझे क्या होता था, मैं होठों को भींचकर जोर की आवाज के साथ सिप करता था। होंठों के बीच की जगह कम हो जाने के कारण एक घूंट में भी कम चाय मुँह में जाती थी। वह पूरे-पूरे घूंट भर रही थी। बीच में चाय निगलने की 'गटक' भी सुनाई पड जाती थी। मैंने उससे कचरी लेने का आग्रह किया। वह गला साफ करती हुई बोली, "शायद तुम मुझसे मेहमान के स्तर पर व्यवहार कर रहे हो।" वह हँस दी, "क्या खाना खिलाने का इरादा नहीं ?"

मैंने घड़ी में देखा, लगभग साढ़े आठ हो रहे थे। एक प्याला खत्म करके दोबारा चाय नहीं बनाई। नौकर को आवाज दी, वह आकर बर्तन ले गया। मेज खाली हो गई।

उसने एक बण्डल उठाकर, धीरे से पूछा, "इसे कहाँ रखूं ?"

"क्या तुम्हारे बक्स में नहीं आ रहा—मेरी अटैची ले जाओ।"

क्षण-भर को वह ठिठक गई जैसे उसकी बेइज्जती कर दी गई हो। मैंने पूछा "क्यों ?"

"ये कपड़े तुम्हारे लिए हैं।" कहकर उसका चेहरा फ्लैश बल्ब की तरह चमका।

लेकिन बुझने वाली प्रतिक्रिया मेरे चेहरे पर हुई, पर मुस्कराते हुए कहा, "विवाह-शादी पर बड़े घरों में पुराने आदमियों को पाग दिया जाता है..."

बिना कुछ बोले सब सामान समेटकर वह अन्दर चली गई। बड़ी जोर से बक्स का पल्ला बन्द होने की आवाज आई। उसके बाद मुझे लगता रहा, उस पूरे घर में व्याप्त शान्ति ने मुझे भी अपने में घोल लिया है। कमरे की दीवारें आईने के प्रतिबिम्बों की तरह घट-बढ़ रही थीं।

"बड़ा सुन्दर है," कहकर सिर रख दिया और दोनों पैरों से लंगड़ाता हुआ-सा बाहर चला गया ।

मैं भी नल के नीचे खड़ा काफ़ी देर तक आंख-मींच भीगता रहा । मैंने सोचा—इस समय शायद वह भी कमरे में बैठी मेरी ही तरह पानी का गिरना महसूस कर रही होगी । पानी की धार ज़मीन से टकरा-टकराकर फुलझड़ियां छोड़ रही थी । गुसलखाने से निकलने पर महसूस हुआ शरीर पर रखा थकन का पहाड़ कुछ घुला है । कमरे में लौटकर मैंने बातों को दूसरे ढंग से शुरू करने का प्रयत्न किया । उससे मज़ाक किया, "या भाई, यह तो बिल्कुल उल्टी रीति है । दुनिया में पत्नियों को प्रसन्न करने के लिए पति तोहफ़े लाते हैं, और यहां···" बात मैंने मुस्कराकर अधूरी छोड़ दी ।

वह हँस दी । उसकी यह हँसी मुझे किसी पहली हँसी की प्रतिध्वनि सी लगी । वह सामान को दो बण्डलों में बांध रही थी । मैंने फिर अप पांव ऊपर रख लिए और उसके पति के बारे में पूछने लगा, "एक्जी क्यूटिव इंजीनियर होने में कितने साल लग जाएँगे ?"

"मालूम नहीं," कहकर उसने बात समाप्त कर दी ।

मैंने दूसरा सवाल किया, "उनको भी साथ ले आती तो मिलना ह जाता । तुम्हारी शादी में आना चाहकर भी न आ सका ।" बात क अन्तिम अंश सुनकर उसने मेरी तरफ़ कुछ इस तरह देखा, जैसे मुलजि के गलत बयान देने पर पुलिस वाले देखते हैं । मुझे विश्वास हो गय अब फूंक मारने से राख अपने ऊपर ही आएगी ।

●

नौकर आकर चाय रख गया था । साबूदाने की गरम कचरियां अब भ चटक रही थीं । चाय उसने ही बनाई । दूध चलनी में छानकर डाल पर भी फुटकियां ऊपर तैर आई थीं ।

"शायद दूध फट गया," मैंने चाय का प्याला उठाकर ध्यान से देखते हुए कहा ।

"नहीं—अभी नहीं फटा। लेकिन इसी तरह रखा रहता तो छेना बन गया होता।" वह मुस्करा दी।

हम दोनों चुपचाप चाय पीते रहे। बीच-बीच में न जाने मुझे क्या होता था, मैं होंठों को भींचकर ज़ोर की आवाज़ के साथ सिप करता था। होंठों के बीच की जगह कम हो जाने के कारण एक घूंट से भी कम चाय मुँह में जाती थी। वह पूरे-पूरे घूंट भर रही थी। बीच में चाय निगलने की 'गटक' भी सुनाई पड़ जाती थी। मैंने उससे कचरी लेने का आग्रह किया। वह गला साफ करती हुई बोली, "शायद तुम मुझसे मेहमान के स्तर पर व्यवहार कर रहे हो।" वह हँस दी, "क्या खाना खिलाने का इरादा नहीं ?"

मैंने घड़ी में देखा, लगभग साढ़े आठ हो रहे थे। एक प्याला खत्म करके दोबारा चाय नहीं बनाई। नौकर को आवाज़ दी, वह आकर बर्तन ले गया। मेज खाली हो गई।

उसने एक बण्डल उठाकर, धीरे से पूछा, "इसे कहाँ रखूँ ?"

"क्या तुम्हारे बक्स में नहीं आ रहा—मेरी अटैची ले जाओ।"

क्षण-भर को वह ठिठक गई जैसे उसकी बेइज़्ज़ती कर दी गई हो। मैंने पूछा "क्यों ?"

"ये कपड़े तुम्हारे लिए हैं।" कहकर उसका चेहरा फ्लैश बल्ब की तरह चमका।

लेकिन बुझने वाली प्रतिक्रिया मेरे चेहरे पर हुई, पर मुस्कराते हुए कहा, "विवाह-शादी पर बड़े घरों में पुराने आदमियों को पाग दिया जाता है…"

बिना कुछ बोले सब सामान समेटकर वह अन्दर चली गई। बड़ी ज़ोर से बक्स का पल्ला बन्द होने की आवाज़ आई। उसके बाद मुझे लगता रहा, उस पूरे घर में व्याप्त शान्ति ने मुझे भी अपने में घोल लिया है। कमरे की दीवारें आईने के प्रतिबिम्बों की तरह घट-बढ़ रहीं

घण्टे-भर बाद जब हम लोग खाने पर बैठे, वह अधिक ताजा हो गई । उसकी आँखों में खास तरह की तरलता थी । आँखों के नीचे एक तरह का भराव नजर आ रहा था, जैसे 'ब्यूटी-स्लीप' लेकर उठी हो । उसके वस्त्र चटकीले थे, हँसी में पहाड़ों की गुफाओं तक को गुंजा देने की सामर्थ्य थी । बीच-बीच में अपने पति की कुछ आदतों के बारे में इसी तरह मजाक करती थी, जैसे किसी अपने 'बॉस' की आदतों के बारे में मातहत किया करते हैं । मैं देख रहा था, पति की बातें करते समय कभी वह पेंग बढ़ाकर उनके पास पहुँच जाती है और कभी चम्मच और प्लेटों की तरह खाने की मेज पर आ सजती है । बीच-बीच में मुझे सामने बैठा देखकर वह मुझ पर भी व्यंग्य कर देती थी, "अभी भी तुमने मिर्चें खानी शुरू नहीं की ।" फिर उसे प्याज की बात याद आ जाती थी, "वैसे-के-वैसे ही बने हो—प्याज भी नहीं ।" ऐसे मौकों पर मेरे मुँह से निकल जाता था, "हाँ, अभी तक तो वैसा ही हूँ ।"

खाना खाने के बाद हम लोग सड़क पर निकल आए । हम दोनों ही अपने को एक अजीब भूमिका में महसूस कर रहे थे । लग रहा था, हम दोनों की जगह सड़क पर दौड़ने वाली मोटरें और चलने वाले रिक्शे ही बतिया रहे हैं । पेड़ों के साये सद्यःस्नात महिलाओं के खुले सिरों की भाँति झुके हुए थे । सड़कों और सहायक सड़कों का जाल निमन्त्रण देता-सा महसूस हो रहा था : 'सब राहें खुली हैं ।' सड़कों के बारे में अपनी यह प्रतिक्रिया मैंने उससे भी कही, वह खामोश चलती रही । मैंने देखा कहीं-कहीं पर उसकी परछाईं उससे लम्बी हो जाती है और कहीं उसी के पैरों तले दब जाती है । जहाँ से हम लौटे, वहाँ काफी सूना था । लौटने के लिए घूमते समय मेरा हाथ उसके हाथ से टकरा गया । चूड़ियाँ छनक गईं । फिर हम समानान्तर लौटते रहे ।

घर के दरवाजे पर आकर मैंने देखा उसका चेहरा कुम्हलाया हुआ है । वह कमरे में जाकर बड़ी वाली कुर्सी पर बैठ गई और अपनी साड़ी को समेटकर घुटने मोड़ लिए । उसके पांवों पर अल्ता लगा हुआ था,

चलकर आने के कारण उन पर धूल बैठ गई थी। वह पीछे को सिर लटकाकर आँखें बन्द किए बैठी रही। सामने का पल्ला नीचे खिसक आया। मुझे लगा मैं फिर उसके निर्वसन अन्तस् से उसी तरह जुड़ गया हूँ, जैसे ब्लाउज़ की बाँहों के द्वारा अलग कर दिया गया था।

थोड़ी देर बाद उसने आँखें खोली, मेरी तरफ देखा और मुस्करा दी।

उसने अपने शरीर को तोड़ना शुरू कर दिया। मैंने सोचा उसे नींद आ रही है, अतः नौकर को आवाज़ देकर अन्दरवाले कमरे में बिस्तर लगा देने के लिए कहा। उस समय तो वह खामोश रही, उसका चेहरा देखकर लगा इकट्ठी की गई मुस्कराहटें एकाएक चुक गई हैं। नौकर के चले जाने के बाद उसने मुझसे पूछा, "यदि तुम्हें असुविधा हो तो मैं किसी होटल में चली जाती हूँ।" इन शब्दों के साथ ही उसकी आँखों में हार मानने से पहले वाली प्रतिक्रिया उभर आई। फिर उसने बच्चों की भाँति ज़िद करते हुए कहा, "मैं भी इसी कमरे में रहूँगी।" मैंने उसका बिस्तर भी अपने कमरे में ही लगवा लिया।

लगभग ग्यारह बजे जब लेटा तो लगा अभी भी बड़ी वाली कुर्सी पर पाँव सिकोड़े ही बैठा हुआ हूँ। वह ठोड़ी के बल मेरी तरफ चेहरा किये उलटी लेटी थी। शायद वह अब फिर बातें करने के मूड में आ गई थी।

"कभी तुम उधर आओ, तो उनसे मिलकर बहुत प्रसन्न होगे—वे भी तुमसे मिलना चाहते हैं। उन्हें मैंने तुम्हारा परिचय दे दिया है।"

अन्तिम वाक्य से मैं चौंक उठा। मेरे मुँह से निकल गया, "पूरा ?" इस बात का उसने कोई जवाब नहीं दिया।

मैं फिर अपनी निगाहों के बल कमरे की दीवारों पर चहलक़दमी करने लगा। एक-दो जगह से दीवार फूल आई थी। बचपन में इस तरह फूली हुई दीवारों पर मुक्का मारकर पटकाने में मुझे बड़ा मज़ा, था। उसी समय उठकर दीवार के फूले हुए उन स्थलों को पटकाने मन हुआ। खयाल आया, दीवारों में भद्दापन आ जाएगा।

"वे मेरे विना विल्कुल नहीं रह पाते । अगले दिन लौट आने के लिए, कई वार वचन मनवाकर आने दिया है ।"

मैंने उसकी वात पर कोई आपत्ति नहीं की वल्कि कहा, "तो फिर कल ही लौट जाना । सुवह ही रिज़र्वेशन करा दूंगा ।"

वह फिर चुप हो गई । कुछ देर वाद उसने विजली वुझाने के लिए पूछा । मैंने अनमने ढंग से 'हूं' कर दिया । उसने रोशनी वन्द कर दी । मुझे लगा कमरे की दीवारें धीरे-धीरे अन्तर्धान होती जा रही हैं ।

"उनका कहना है तुम्हें अपने व्यक्तिगत सम्वन्ध रखने की पूरी छूट है । जव मैंने उन्हें तुम्हारे वारे में वताया, वचपन से हम लोग साथ-साथ पढ़े-लिखे और वड़े हुए हैं तो वे हँसकर चुप हो गए । तुम्हारे वारे में अक्सर पूछते रहते हैं ।" वह यह सव कह रही थी, मेरी नजर आकाश पर थी ।

"वे कई वार कह चुके हैं—'लो-नेक' पहना करो । इससे फिगर वनती है । वड़ी मुश्किल से विना वांह के व्लाउज़ से समझौता कर पाई हूं । वे तो चाहते हैं स्कर्ट भी पहना करूं ।"

"हां पहनना चाहिए ।"

कुछ देर तक खामोशी रवड़ की तरह खिंची रही ।

"उन्होंने गैस ले दी है, काफी आराम हो गया ।"

"गैस ! अच्छी चीज है—वर्तन काले नहीं होते ।" लगा कहीं पास ही गैस का सिलिंडर खुल गया है और सू-सू की आवाज़ कमरे में भरती जा रही है । मैंने जल्दी से उठकर वत्ती जला दी, महसूस करना चाहा आवाज़ धीरे-धीरे वाहर निकल रही है ।

छू देने भर से दरवाजा खुल गया। विश्व-नाथ को संशय होने लगा कहीं 'समसम' की तरह यह किवाड़ों की जोड़ी भी तो स्पर्श नहीं पहचानती। कमरे के अन्दर टाइप मशीन की आवाज़ें व्याप्त थी। दरवाज़ा खुलते ही उसे एकाएक महसूस हुआ अन्दर घोड़े दौड़ रहे हैं। बाद में अपनी इस कल्पना पर उसे हँसी भी आई, छ महीने तक उसने टाइप करना सीखा था। उस जमाने में सोते हुए भी उसे टाइप-मशीन की टप-टप सुनाई दिया करती थी।

सामने ही एक व्यक्ति मेज पर झुका हुआ कुछ देख रहा था। उस व्यक्ति के ठीक सामने चार-पाँच लोग एक-दूसरे के कानों के पास मुँह किए फूँक मारने की मुद्रा में बातें कर रहे थे। अन्दर घुसने से पहले भी विश्व-नाथ ने एक बार सोचना चाहा था, कहीं अन्दर पाँव रखते ही बाहर की

घंटी न घनघनाने लगी और वह जरी की पट्टीवाला चपरासी अन्दर आकर उसे बाहर धकेल दे। पिछले दो-तीन घंटों के दौरान वह जरी की पट्टी-वाला चपरासी उसे समझाता रहा था—बिना इजाजत अन्दर जाना जुर्म है, पी० ए० साहब की इजाजत लेना जरूरी होता है। यह पूछने पर कि पी० ए० कौन होता है, पता लगा था कि वैयक्तिक सहायक को ही (हिन्दी में नरमी लगी थी) पी० ए० कहते हैं। चपरासी की बात से वह इस नतीजे पर पहुँचा था, पी० ए० वैयक्तिक सहायक का वैसा ही घरेलू नाम है जैसे उसे घर पर 'कल्लू' कहते हैं। चपरासी ने उसे और भी बातें बतलाई थीं—"मन्त्रियों का मामला है। कहीं ऊँच-नीच हो गई—अपने-आप तो फँसोगे ही, हमें भी फँसाओगे।"

लेकिन इतनी दूर से विश्वनाथ फँसने या किसी को फँसाने नहीं आया था। वह जरी की पट्टीवाले उस चपरासी को यही समझाने का बराबर प्रयत्न करता रहा था कि वह सीता बाबू का इन्तजार कर रहा है। 'सीता बाबू हमारे जिले के विधायक हैं।' मुख्यमंत्री तक उनकी बात टालने का साहस नहीं कर सकते। वे ही उसे यहाँ बैठाकर अन्दर शिक्षा मंत्री के पास गए हैं। लेकिन शिक्षा मंत्री के चले जाने के आधे घंटे बाद भी जब सीता बाबू बाहर नहीं आए तो उसे चिन्ता हो गई थी। हिम्मत करके उसने पी० ए० के कमरे का दरवाजा छू दिया था।

अनायास पूरा दरवाजा खुल जाने पर वह डरता-डरता, छोटे-छोटे कदम रखता हुआ, कमरे के अन्दर चला गया। विश्वनाथ मेज पर झुके उस आदमी के पास न जाकर, उन फुसफुसाते लोगों के पास जा खड़ा हुआ। उन चार-पांच फुसफुसाने वाले व्यक्तियों में से ही एक से पूछा, "पी० ए०—नहीं, नहीं वैयक्तिक सहायक कहाँ हैं?" उस आदमी ने कुछ इस तरह विश्वनाथ की तरफ़ देखा, जैसे किसी बाजारू गाय ने आकर उसके कुरते का कोना चबाना शुरू कर दिया है। लेकिन सामने आदमी खड़ा देखकर, रेत पर पड़ी पानी की बूँद जितनी अपनी आँखों में [illegible] मेज पर झुके उस आदमी की ओर संकेत कर दिया। विश्व-

नाथ उस आदमी की मेज के बराबर में जा खड़ा हुआ। उसका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिए ठीक वैसे ही प्रयत्न करने लगा, जैसे किसी पारसी थिएटर का 'जोकर' स्टेज नायिका को मनाने में नायक की सहायता करता है। इतने पर भी पी० ए० की गर्दन झुकी रही। उसे विश्वास होने लगा कि वास्तव में यह आदमी पत्थर का बुत है।

विश्वनाथ की नजर अचानक पी० ए० के पीठ पीछे खुले दरवाजे पर चली गई। उसे खयाल हुआ कि कहीं सीता बाबू कमरे में बैठे कुछ काम तो नहीं कर रहे हैं। उसके पाँव तुरन्त उधर बढ़ गए। पी० ए० उसकी ओर इस तरह घूमा, जैसे विश्वनाथ का पाँव किसी ऐसी कल पर पड़ गया है, जिसका सीधा सम्बन्ध पी० ए० से हो। घर्र-घर्र की तरह की आवाज भी सुनाई पड़ी, "कहिए, उधर कहाँ जा रहे हैं?"

"सीता बाबू को देखने," कुछ घबराहट में उसके मुँह से निकल गया।

"कौन सीता बाबू?" पी० ए० ने झिड़कते हुए पूछा।

"हमारे यहाँ के विधायक हैं।"

"यहाँ सीता-बीता बाबू कोई नहीं।"

पी० ए० द्वारा सीता बाबू का इस तरह नाम लिया जाना विश्वनाथ को अच्छा न लगा। उसका मन हुआ वह कह दे, 'जिस आदमी की बात मुख्यमंत्री तक नहीं टाल सकते, उसका नाम आप इस तरह ले रहे हैं?' लेकिन विश्वनाथ ने काम की बात करना ही उचित समझा। सिर्फ इतना ही कहा, "सीता बाबू मुझे बाहर बैठने के लिए कहकर शिक्षा मंत्री से मिलने अन्दर गए थे। दो घंटे से बाहर बैठा उनका इन्तजार कर रहा हूँ।"

इस बार पी० ए० ने थोड़ी सहूलियत के साथ सवाल किया, "क्या काम है?" विश्वनाथ को लगा, जैसे लोहे के गोले में उँगली गड़ गई। थोड़ा खँखारकर गला साफ करते हुए उसने बड़े सम्मानपूर्वक बताया, "हमारे जिले के सरकारी स्कूल में मास्टरी की जगह खाली है, उसी की सिफारिश के लिए सीता बाबू को लिवाकर लाया हूँ।"

पी० ए० ने चश्मा ठीक करते हुए एक कागज का

कुछ पढ़ने के बाद पूछा, "क्या नाम है ?"

"विश्वनाथ…"

लेकिन बिना जवाब दिए ही पी० ए० अपने काम में लग गया । विश्वनाथ कुछ देर तक तो उत्तर की प्रतीक्षा में खड़ा रहा, फिर हिम्मत करके कहा, "जी मेरा ही नाम विश्वनाथ है ।" पी० ए० इस बार कोलतार का गोला हो गया था । वह एकदम बिगड़ उठा, "मैं क्या करूँ, मेरे पास इतना वक्त नहीं । अपने सीना बाबू से जाकर पूछो ।" बड़बड़ाता हुआ अपनी फाइलें उलटने-पलटने लगा । उसने देखा, उन चारों-पाँचों व्यक्तियों के होंठ मुसकराने की मुद्रा में एक ही तरह से मुड़ गए हैं ।

●

विश्वनाथ ने बाहर निकलने के लिए दरवाजा खोलना चाहा तो उसे लगा खुलने के स्थान पर दरवाजा बंद होता जा रहा है । फिर उसे ध्यान आ गया, वह दरवाजा बन्द होने वाली दिशा में ही खोलने का प्रयत्न कर रहा था । बाहर गैलरी में आकर उसे अनुभव हुआ कि वह खोखले किये गए रेल के डिब्बों की एक लम्बी कतार के अन्दर दाखिल हो गया है । दाईं ओर कमरों पर लगे मंत्रियों और उनके वैयक्तिक सहायकों के नाम-पट अजीव शेखीखोरेपन के साथ अपना महत्त्व जता रहे थे । बाएँ हाथ पर पड़ी पुरानी बेंचें तीर्थस्थानों पर बैठे भिखमंगों की कतार का-सा चित्र उपस्थित कर रही थीं । किसी-किसी बेंच पर कई जरीदार पट्टीवाले चपरासी बैठे सिगरेट का धुआँ उड़ा रहे थे । विश्वनाथ को महसूस हुआ उन दो-चार चपरासियों की सिगरेटों के धुएँ से पूरी गैलरी घुटी जा रही है । उसे खाँसी आने लगी । बीच-बीच में मंत्रियों और वैयक्तिक सहायकों के कमरों में घंटियाँ बज रही थीं । उन घंटियों की टन-टन उसके दिमाग़ पर कुछ ऐसा प्रभाव उत्पन्न करती थी, जैसे किसी रोते हुए बच्चे को खुश करने के लिए खड़ी हुई कई साइकिलों की घंटियाँ एक साथ टन-ाई जा रही हैं ।

विश्वनाथ बाईं ओर घूम गया । जिस गैलरी में वह था, उसकी

चौड़ाई रेल के डिब्बों से कुछ अधिक थी। दिन का प्रकाश भी कुछ अधिक मात्रा मे आ रहा था। उसे नकारने के लिए बत्तियाँ भी जली हुई थी। उसका मन बत्तियो पर ढेला चलाने को हुआ। उसने अपनी इस भावना को तुरन्त दबा दिया। विधान भवन मे घुसते हुए सीता बाबू ने उसे बताया था, "यही है विधान भवन, जहाँ हम लोग बैठकर पूरे प्रदेश का शासन चलाते हैं। ज़रा-सी गलती तुरन्त पकड़ ली जाती है। दीवारों में आतिशी शीशे लगे हुए हैं जिनमें ज़रा-सा भी सूराख कुएँ के समान दिखाई पड़ता है।" उसका मन हो रहा था, कोई ऐसा ही शीशा उसे भी दीख जाए जिसमें वह सीता बाबू को वृहत्तर रूप मे देख सके। गैलरी में चलने-फिरते लोग उसे ठीक वैसे ही लगते हैं, दोनो आँखो को बन्द करके उँगली से दबाने पर अनेक अनपहचाने रंग-बिरंगे कण हिलने लगते है।

एक कमरे के सामने बहुत-से लोगो को चपरासियो वाली बेंचो पर बैठे देख, उसे लगा, शीरे की बूंद पर चीटे इकट्ठे हो गए है। बाद मे मुख्यमन्त्री के नाम की तख्ती पढ़कर वह थोड़ा-सा भयभीत हो गया। मुख्यमन्त्री की शक्तियों के सम्बन्ध मे बताते हुए सीता बाबू ने कबीर के दोहे की एक पक्ति पढी थी, 'राई से पर्वत करे और पर्वत राई माहि।' वह उन सब लोगों के बारे मे आश्चर्य और करुणा से भर उठा, सोचने लगा, न जाने इनमें से कौन पर्वत होने के लिए बैठा है और कौन राई।

सीता बाबू के बारे में वह सोचने लगा शायद वे भी अन्दर मौजूद हों। उसने कस्बे के कई लोगो से सुन रखा था, मुख्यमन्त्री ने अनेक बार सीता बाबू से मन्त्रीपद सँभालने का आग्रह किया है। वह एक बेंच पर बैठकर सीता बाबू के निकलने की प्रतीक्षा करने लगा। उसने चाहा कि इस बीच बराबर में बैठे लोगों से दो-चार बातें करे। लेकिन उसे वहाँ बैठे हुए सब लोग धोखा देने के लिए बनाये गए हकीम लुकमान के समरूप पुतले-से लगे। वहाँ से उठकर वह मुख्यमन्त्री के वैयक्तिक सहायक के कमरे के सामने जा खड़ा हुआ और पहले की तरह ही इस बार भी अन्दर झाँकने का प्रयत्न करने लगा। दरवाज़ा बन्द,

कारण उसे अन्दर का कुछ भी सुनाई नहीं पड़ रहा था। बाहर ही खड़ा वह सोचता रहा। अन्दर की आवाज़ किसी भारी पत्थर के नीचे दबी है। ठीक ऐसा ही आभास उसे बाहर बैठे हुए लोगों को देखकर हो रहा था। इन सबकी गरदन इन्तज़ार [illegible] लटका दी गई है। शिक्षा-मन्त्री के कमरे के सामने बैठे सीता बाबू की प्रतीक्षा करते हुए भी उसे अपने बारे में इस बात का बराबर एहसास बना रहा था। वह स्वयं भी विश्वनाथ के स्थान पर कोई और है, जिसे सिर्फ सीता बाबू के बाहर निकलकर आने का इन्तज़ार है। उनके आ जाने पर वह डोरी में बँधा हुआ-सा पीछे-पीछे हो लेगा। अब उसे इस बात का विश्वास हो गया कि सीता बाबू और उसके बीच बँधी डोर टूट गई है, वह पुनः विश्वनाथ हो गया था। उसी समय से सीता बाबू की तलाश कर रहा था।

उसने मुख्यमन्त्री के वैयक्तिक सहायक के दरवाज़े को हलका-सा धक्का देकर खोलना चाहा। वह इस नतीजे पर पहुँचा, कम-से-कम यह दरवाज़ा शिक्षामन्त्री के दरवाज़े की तरह भावुक नहीं है। उसने तनिक और ज़ोर लगाया। दरवाज़ा हिला, पुनः अपने स्थान पर आ गया। दरवाज़े की इस हरकत पर उसे हँसी आ गई, वह सोच गया कि यहाँ लकड़ी के दरवाज़े तक सीखे-पढ़े हैं।

विश्वनाथ ने अधिक ज़ोर लगाकर तनिक-सा दरवाज़ा खोल लिया। झाँककर देखा कमरे में लोग शतरंज के बिखरे हुए मोहरों की तरह इधर-उधर खड़े और बैठे हैं। उनका पी० ए० भी उसी तरह गरदन झुकाए फाइलों में व्यस्त है। उसे आश्चर्य था, लोग पी० ए० के पास जाते ही क्यों हैं, जबकि उसके मन में फाइलों की क़दर ज़्यादा है। बाद में उसने एक पढ़े-लिखे 'जंटलमैन'-से लगने वाले आदमी से इसी बात को पूछा भी। उसने बताया, "मन्त्रियों से मिलने से पहले पी० ए० से अनुमति लेनी ज़रूरी होती है।" इस बात पर उसे हँसी आ गई। वह सोचने लगा पी० ए० हनुमानजी होता है।

उसने विधायक-भवन चलकर ही सीता बाबू से मिलने

का फैसला किया ।

लौटते हुए जब वह लिफ्ट के पास से गुजरा तो उसे कुछ ऐसा लगा, सीता बाबू लिफ्ट से नीचे चले जा रहे हैं । दौड़कर वह नीचे नहीं गया । उसे जीने से ही उतरना था । लिफ्ट सीता बाबू को लेकर स्वयं उतरता चला जा रहा था । वह संगमरमर की सीढ़ियों से धीरे-धीरे उतरता रहा । उतरते समय उसे लगता रहा वह अनधिकृत रूप से किसी राजभवन में घुस आया है । सीढ़ियों से उतरकर जब वह नीचे आया तो उसने एक नजर उठाकर वहाँ के सम्पूर्ण वातावरण का जायजा लेना चाहा । उसकी दृष्टि दो मेहराबों के आकार में बने जीनों पर टिक गई । ये दोनों जीने उसे किसी उकड़ूँ बैठे विशाल राक्षस की लम्बी भुजाओं की तरह पृथ्वी पर टिके-से लगे । सब लोग उन दोनों बाँहों पर लीलीपुट-वासियों की तरह चढ़-उतर रहे थे । ऊपर का खोखला गुम्बद उस राक्षस के खोखले दिमाग का आभास दे रहा था, उस खोखलेपन में उसे अनेक सीता बाबू और वह स्वयं चूहे-बिल्ली का खेल खेलने-से प्रतीत होने लगे ।

उसकी नजर सामने वाली गैलरी पर चली गई । विश्वनाथ को वह पूरा दृश्य किसी अँधियारे सुरंग में होकर बहती नहर की याद दिलाने लगा । उसे अनुभव हुआ कि अनेक सपाट चेहरे वाले लोग उस नहर की सतह पर नाचते हुए चले जा रहे हैं । छत में लगे बल्बों की रोशनियों के घेरे उसे संगमरमरी सतह पर हिलते हुए पानी का-सा आभास दे रहे थे । उसके कदम उन रोशनियों के घेरों को नापने के लिए उसी ओर बढ़ गए । विश्वनाथ एक रोशनी के घेरे के बीचों-बीच जाकर खड़ा हो गया । वहाँ से उसने देखा, अँधेरे कोनों में लोगों की छोटी-छोटी टुकड़ियाँ रहस्यात्मक ढंग से फुसफुसा रही हैं । उन सबकी शक्लें विधायक सीता बाबू से हू-ब-हू मिल रही हैं ।

उसने सीता बाबू का नाम ले-लेकर जोर-जोर से चिल्लाना चाहा, लेकिन उसे ध्यान आया कि यह विधानसभा भवन है, जहाँ सीता बाबू अपने साथियों के साथ बैठकर पूरे प्रदेश के शासन का संचालन करते हैं ।

# संगत

लक्ष्मी रेड्डी के साथ संगत करने का आग्रह मेरे पास पहुँचा तो कुछ अजीब-सा लगा। मैं जानता था, एक जाने-माने उस्ताद के द्वारा संगत की जानी ही उसे पसन्द है। किसी कारण वे नहीं आ पाए थे। शायद इसीलिए संगीत भवन से सम्बद्ध व्यक्तियों में मुझे ही इस योग्य समझ लिया गया था। एक अनजान व्यक्ति से कहा जाना शायद उसे भी पसन्द न आया हो। उसके चेहरे पर अनिच्छा का भाव झलक आया था। वह कुछ कहे, इससे पहले ही मैंने प्रतिक्रियास्वरूप 'हाँ' कर दी थी। उसके चेहरे पर एकाएक बिजली चले जाने के बाद वाला ठहराव-सा आया था, तुरन्त बाद ही एक मुस्कान भी।

मंच पर हम दोनों साथ-ही-चढ़े। लक्ष्मी रेड्डी के सम्मान

में लोगों ने तालियाँ बजाईं। उसके होंठों पर सफेद दाँतों और चेहरे के बीच वाला विरोधाभास अधिक सजीला होकर ठहर गया। जब वह तानपूरा उठा रही थी तो आँखों से ही उसने मुझे तैयार हो जाने का संकेत किया। पहले से चिपकी हुई वह मुसकराहट भरे दूध के कटोरे की तरह तिरछी हो गई थी।

लक्ष्मी रेड्डी ने देस में ठुमरी गाई। शुरू में आँखें बन्द करके जब वह गुनगुना रही थी तो लग रहा था, बात मन-ही-मन में घूम रही है। फिर वह अपने से मुक्त होती गई। उसके पास अनेक कण्ठ थे। कभी वह किसी दूरस्थ कण्ठ से गाने लगती थी और कभी सब कण्ठ एक साथ। एक-दो बार उसने मात्र मेरे लिए ही गाया, फिर दूर जाती हुई आकृति की तरह विलीन हो गई। पूरा वातावरण एक ताल बन गया था। कभी लहरों के वृत्त एक-एक व्यक्ति के इतने निकट आ जाते थे कि उनका स्पर्श मूर्त हो उठता था और कभी पूरा ताल एक ही वृत्त में समा जाता था। स्वर के साथ-साथ वह अपने आकर्षण का संयोजन भी कर रही थी। छोटे-बड़े बल्बों के प्रकाश की तरह ही वह घट-बढ़ रहा था।

प्रोग्राम समाप्त होते ही लोगों ने उसे घेर लिया। उसके व्यवहार के बारे में भी इसी नतीजे पर पहुँचा कि वह भी स्वर की भाँति ही सधा हुआ है। जब वह चाहती थी उत्तर देने का उपक्रम करते-करते पुरानी फाइल-सी सवालों के नीचे दब जाती थी, और चाहने पर ही सब बातें कागज के कबूतरों की तरह फर-फर उड़ने लगती थीं। बातों के दौरान में दो-चार लोगों ने उससे मेरी प्रशंसा भी की। उत्तर में मात्र उसकी दोनों आँखें ऊँची-नीची होकर मेरी ओर देखने लगी, हालाँकि मैं अपेक्षा करता था, कुछ कहेगी।

छोड़ने के लिए लोग लिफ्ट तक गए थे। मैं भी उन्हीं में था। लिफ्ट के पास पहुँचकर जब उसने होंठों पर चिपके उस खिलेपन को और अधिक विस्तृत करके आज्ञा लेनी चाही, तो भी वे लोग खड़े ही रहे थे। केवल मैं ही चलने के लिए घूम गया था। लेकिन उसने सहज ही

पास लेटी रही।

'आपका रियाज़...' कहकर वह रुकी, फिर मुस्कराते हुए धीरे से उसने वाक्य पूरा किया, 'अच्छा है।' दीवारों के मोल लिये जाने के बाद भी वे शब्द मुझे कई स्थलों पर छूते रहे।

मेरी नज़र तानपूरे के पास रखे उसके हाथ पर थी। वह बार-बार जाता था और लौट आता था। उसने अनायास ही, सम्भवतः बात शुरू करने के लिए कहा—"कौन-सा राग आपको ज़्यादा पसन्द है?" क्षण-भर दोनों के बीच निस्तब्धता ठहरी रही। मेरे मुँह से उसी तरह अनायास निकल गया—"हम तो मात्र मनन करते हैं।" उसकी उपस्थिति में पहली बार मेरे होठों पर मुसकराहट आई थी। लेकिन उसकी खिलखिलाहट—फानूस गिरकर टूट गया।

उसे उन्हीं कपड़ों में बैठे देखकर मैंने समय जानना चाहा। 'दो।' उसके द्वारा कहा गया 'दो' काफी देर तक टिका रहा। मैंने उससे कहना चाहा, अब आप अपने कपड़े बदलकर आराम करें। लेकिन वह मेरे बिना कुछ कहे उठ खड़ी हुई। उसका सिर दो दीवारों के बीच वाले कोने में मुड़े हुए कागज़ की तरह बिखर गया। फिर दीवार पर से खिसककर उसके पीछे-पीछे सिमटने लगा।

दरवाज़े के अचानक खुल जाने पर लगा कि बाहर के अँधेरे में छुपी सुरंगों के बन्द दरवाज़े खोल दिये गए हैं। लेकिन तुरन्त ही दूसरे कोने में भटकता हुआ कुमकुमा जल जाने से पूरा कमरा अन्धकारमय घेरे में सिमट गया। रोशनी उसके नीचे घेरे में बैठकर अटकन-अटकन लेने लगी।

कुमकुमा जलाकर लम्बी देहरी मेरी ओर ही आ रही थी। मैंने खड़े होकर चलने के लिए आज्ञा लेनी चाही, लेकिन मुझे खड़ा देखकर वह मुस्करा दी—"आपकी यह बेचैनी मुझे अच्छी लग रही है।" उसकी निर्निमेष आँखों से मासूमता झाँक गई और पुतलियों के किनारे से उसका पूरा चेहरा ढक लिया। मुझे उसी तरह खड़े देखकर उसने अपने

को नई नजर से देखा—'दो ही तीन घण्टे तो और हैं'…कुछ रुककर घड़ी देखते हुए उसने कहा, 'तीन तो बज ही रहे हैं', हालांकि उसने अपना तानपूरा बिल्कुल नहीं छुआ था, आभास होता रहा था उसके तारों को बार-बार छुआ गया है।

मैं बैठ गया। बाद में बैरी वातावरण की तलवार सिर पर लटकने लगी।

लक्ष्मी मेहरी कुछ देर बाद फिर उठी और मेरी कुर्सी के पास आ खड़ी हुई। कान के पास मुँह लगाकर धीरे से बोली…, 'आती हूँ।' इस तरह झुककर यह कहना कोई बहुत महत्वपूर्ण बात नहीं थी, लेकिन पैरों के पास लेटी मेरी और उसकी परछाइयाँ बहुत पास आ गई थीं, उसका हटना भी, परछाइयों का ही एक-दूसरे से अलग होना अधिक था।

वहाँ से उठकर वह वार्डरोब के पास जा खड़ी हुई थी, वार्डरोब का दाहिना पल्ला सिन्दबाद जहाजी की चिड़िया के पंख-सा फैलता गया। कमरा पालों में बँटा हुआ था। अँधियारे का पाला अधिक बड़ा था, पर उसमें प्रकाश की भी थोड़ी-थोड़ी मिलावट थी। हम दोनों उसी पाले में थे।

अनायास उसकी साड़ी का पल्ला खिसककर लम्बी बाँह-सा जमीन पर गिर पड़ा। फिर दोनों हाथ पीछे को फैलाकर ब्लाउज उतारने लगी। चोली का बाँध शरीर को अधिक उजागर कर रहा था। पूरा-का-पूरा वातावरण अपनी जगहों पर बैठा-बैठा काँपता-सा महसूस होने लगा। मैंने अपना ध्यान सामने रखे उसी तानपूरे पर केन्द्रित करना चाहा, जो पूरे समय अपनी ही जगह पर बना रहा था। लेकिन नजरें चक्कर काटने वाली सर्च लाइट-सी घूम-घूमकर वहीं पहुँचती रहीं। वस्त्रों को वह एक के बाद एक नहीं बदल रही थी। शरीर पर अब अन्तिम वस्त्र रह गया

के दूसरी ओर लटकने वाले कुमकुम के चारों ओर अनेक साथ पंख फड़फड़ाने लगीं। अँधेरा धू-धू करके कमरे में

भर गया। फड़फड़ाती गौरैया और लटकन के नीचे अटकन-बटकन खेलने वाली रोशनी, सब उस सैलाब मे डूब गए। उस अँधेरे के साथ ही कमरो की सब दीवारें भी एक-दूसरे से सटती महसूस हुईं।

●

आँखें खुली, तो कमरे का भरा-भरापन नही था, रोशनी के कारण खाली-पन नज़र आ रहा था। तानपूरा रात-भर सगत करने के बाद, अपने खोल में बन्द होकर दीवार के सहारे खड़ा था। लक्ष्मी रेड्डी सफ़ेद साड़ी मे थी, उसका चेहरा मिट्टी मे खेलने के बाद धुले-पुंछे बच्चों का-सा लग रहा था।

मेरे समय पूछने पर उसने बताया, 'साढ़े पाँच।'

'रात…?' मेरे वाक्य को बीच मे ही काटकर कहा—'गुजर गई।' फिर वह सधे हुए कदमों से मेरे पास आकर बोली—'अब मुझे जाना है।' हूँ-हूँ करता हुआ मैं उठ खड़ा हुआ। वह कमरे से बाहर चली गई।

बाथरूम से निकला, तो चौकीदार सामान लेकर बाहर आ रहा था। वह दरवाजे के पास खड़ी मेरे आने का इन्तज़ार कर रही थी। मैं उसके पीछे पीछे चल दिया। लिफ्ट अभी नही चला था। हम लोग सीढ़ियों से उतरने लगे। जब रोशनी सामने आ जाती थी तो परछाइयाँ पीछे चली जाती थी और रोशनी पीछे हो जाने पर वे हमसे आगे-आगे उतरती रहती थी।

संगीत भवन की कार पोर्टिको मे लक्ष्मी रेड्डी की प्रतीक्षा कर रही थी। मैं अभी तक निश्चय नहीं कर पाया था, स्टेशन छोड़ने जाना उचित होगा या नहीं।

मेरे बराबर के खम्भे पर चढ़े मनीप्लान्ट के चौड़े-चौड़े पत्तों पर ओस की बूँदें कालान्तर से टपक जाती थीं। एक पत्ते मे फिसलकर दूसरे पत्ते पर आने वाली बूँद टपकने से पहले मोटी हो जाती थी। फिर उस बूँद का टपकना निस्तब्धता में कंकर की भाँति बैठता रहता था।

चौकीदार को इनाम देने के बाद लक्ष्मी रेड्डी कार में जाकर बैठ गई। मेरा एक हाथ उसी दरवाज़े की हत्थी पर था जिस ओर वह

थी। ड्राइवर एक बार घूम चुका था, अब अपनी सीट पर बैठा आज्ञा की प्रतीक्षा कर रहा था। लक्ष्मी रेड्डी ने झुककर मेरी ओर देखा—सम्भवत यह जानने के लिए कि मैं चल रहा हूँ या नहीं। शायद मुझे भी इसी की प्रतीक्षा थी। दरवाजा खोलकर अन्दर चला गया। लक्ष्मी रेड्डी पहले ही दूसरी ओर खिसक गई थी।

अपनी तरफ का शीशा गिराकर मैंने कोहनी खिड़की में रख ली। कभी-कभी गरदन बाहर निकालकर भी देख लेता था। बाहर अभी अंधेरा था और हवा नमी लिये हुए बर्फ की तरह चेहरे पर लगती थी। ख्याल आया, खिड़की के खुले रहने से लक्ष्मी रेड्डी को असुविधा हो रही होगी। मुझे शीशा चढ़ाते देखकर उसने धीरे से कहा, 'खुली हवा मुझे भी पसन्द है।'

जैसे-जैसे अंधेरे में प्रकाश की मात्रा बढ़ती जा रही थी, सड़क का एक-एक कण दौड़कर हमारी ओर आता-सा लग रहा था। लेकिन पास आने पर, पूरी सड़क आवाज की तरह फट जाती थी। सड़क पर चलने वाले इक्के-दुक्के लोग दूर से चलते हुए दिखाई पड़ते थे, लेकिन कार के पास से गुजरते समय वे खड़े-के-खड़े रह जाते थे। स्टेशन पहुँचते-पहुँचते काफी निखार आ गया था। अँधियारे का ढेर इधर-उधर कोनों में लग गया था।

प्लेटफार्म पर बहुत लोग नही थे, ओछा प्याला नजर आ रहा था। जब गाड़ी आई तो मुसाफिरों की भी ज्यादा हलचल नही मची। वेण्डर्स की आवाज़ें चीख के स्तर पर उठकर भिनभिनाहट में डूबती गई।

डिब्बे में सामान लगा दिया गया था। लक्ष्मी रेड्डी दरवाज़े पर आकर खड़ी हो गई थी। सामने से गुज़रने वाला हर व्यक्ति उसकी पुतलियों में हल्का-सा अक्स छोड़ जाता था। चार-पाँच डिब्बों के आगे खड़ा इंजन तेज़ आवाज के साथ बीच-बीच में भाप भी छोड़ देता था, और आस-पास के डिब्बों को ढक लेती थी। उसका स्वाद आस-हम लोगों के मुंह में भी घुल जाता था।

'···शाम को छः बजे सनातन धर्म कालिज का वार्षिक अधिवेशन। उद्‌घाटन प्रमुख उद्योगपति लाला रामदीन करेंगे···' मानिकटाला ने पाइप भरते हुए उसकी ओर बिना देखे पूछा, "अंग्रेजी में भी 'प्रमुख' ही लिखा है?"

"जी···" कहकर वह अगले समाचार पर आ गया। 'हँडिया महल्ले की समाज कल्याण समिति का चुनाव जिला हरिजन एवं कल्याण अधिकारी की देख-रेख में आज दोपहर को तीन बजे होगा···।'

'···एक सभा में कलक्टर साहब ने भाषण देते हुए काला-बाजारी बन्द करने की अपील की और उन्होंने साफ-साफ शब्दों में चेतावनी दी, ऐसा न करने पर कानूनी कार्यवाही की जाएगी, सरकार का रुख इस बारे में बड़ा सख्त है।' मानिकटाला सुनकर मुस्कराये और शब्दों को खींचते हुए बोले—'अच्छाऽऽ' फिर रुककर पूछा, "और कोई खास बात···?"

पी० ए० ने पूरे पृष्ठ को जल्दी-जल्दी देखकर बताया, "आज शाम को छ: बजे उद्योगमन्त्री इंजीनियरिंग कालिज में नई वर्कशाप का उद्‌घाटन करेंगे।"

मानिकटाला पाइप को जलाते-जलाते रुक गये, उसकी ओर देखते हुए, बोले, "उद्योग मंत्री···तुम्हारा मतलब इन्डस्ट्री मिनिस्टर···।"

"जी···" कहकर पढ़ने के लिए वह अगली पंक्तियाँ खोजने लगा।

"स्टेट···या···?" उसने अखबार पर ही गर्दन झुकाये उत्तर दिया, "सेन्ट्रल"। मानिकटाला झटके के साथ कुर्सी से उठ खड़े हुए और 'ऑफिस चेयर' पर जा बैठे। पी० ए० खिसककर उनकी मेज के पास चला गया। मानिकटाला स्वयं ही बड़बड़ाए, 'सेन्ट्रल मिनिस्टर ऑफ इन्डस्ट्रीज़··· मिस्टर थमय्या', लेकिन पी० ए० को अपनी ओर देखते हुए पाकर बोले, 'थमय्या अपना दोस्त है···खैर···कब आएँगे?"

वह उद्योगमंत्री का प्रोग्राम पढ़ने लगा, "पाँच बजे हवाई अड्डे पर स्वागत···वहाँ से सीधे सर्किट हाउस···आधा घण्टे ठहरकर इंजीनियरिंग

# निमंत्रण

मानिकटाला 'साहब' का पी० ए० (यानी वैयक्तिक सहायक) अखबार पढ़कर सुना रहा था। पहले अंग्रेजी में पढ़ता फिर उसका हिन्दी में अनुवाद करता था। मानिकटाला ऑफ़िस में ही आरामकुर्सी (रिटायरिंग चेयर) पर बैठे समयान्तर से पाइप का धुआं छोड़ रहे थे। धुआं उनके चेहरे पर से पारदर्शक कपड़े-सा फिसलकर पी० ए० के सिर पर से गुजरते-गुजरते और अधिक पारदर्शक हो जाता था।

मानिकटाला ने पाईप हाथ में लेकर भीगे हुए कोओं वाली आंखों से उसकी ओर देखते हुए कहा, "लोकल न्यूज वाला पेज पढ़ो।" पी० ए० धीरे से 'जी' कहकर स्थानीय-समाचार वाला पृष्ठ निकालने लगा। मानिकटाला मुँह में पाइप लगाकर पुनः फूंकने लगे, वह बुझ गया था। इस बीच समाचार वाला पृष्ठ निकाल ० ने पढ़ना शुरू कर दिया था।

कहा, "थमय्या ने मुझे नही लिखा। वैसे जब मैं दिल्ली जाता हूँ ··कई बार मैं भी उसे सूचित नही कर पाता। उसको भी मुझसे यही शिकायत रहती है।" वह चुपचाप खड़ा सुनता रहा।

"अच्छा डी० एम० को फोन करो—थमय्या साहब से भेंट हो सकेगी।" वह फिर फोन करने के लिए चल दिया, लेकिन मानिकटाला साहब ने बीच ही मे से बुलाकर कहा, "डी० एम० को नही···। सेतान के बारे में पूछो—जब आये मुझसे फौरन बात करे···।" पी० ए० सेतान के बारे में मालूम करने चला गया। मानिकटाला ने अन्तरग फोन का बजर दबाकर पुन: कहा, "सेतान न आया हो तो पोद्दार मे बात कराओ।"

जब पोद्दार फोन पर आए तो मानिकटाला ने पहले ही पूछा, "सेतान वहाँ है ?" और बिना उसका जवाब सुने कहते गये, "मीटिंग में तुम नही जा सकते थे। जब देखो शायद, आये तो मुझसे फौरन बात करे।" रिसीवर रख दिया। रखने के तुरन्त बाद ही उन्होंने फिर पोद्दार से बात कराने के लिए पी० ए० को कहा। लेकिन बात करते समय पी० ए० का वहाँ खड़ा रहना उन्हे सभवतः ठीक नही लगा। उन्होंने कुछ इसी तरह उसकी ओर देखा था। वह चुपचाप अपने कमरे मे चला गया और मेन फोन का रिसीवर उठाकर उनकी बातें सुनने लगा। मानिकटाला ने छूटते ही पोद्दार को डाँटना शुरू कर दिया था, "तुम लोग क्या करते हो··· हजार दो-दो हजार इसीलिए मिलता है। कुर्सियाँ तोडो और गाड़ियो पर दौड़ो। इंजीनियरिंग कालिज तक ने सेन्ट्रल मिनिस्टर ऑफ़ इण्डस्ट्रीज़ को बुला लिया···तुम लोग उन्हें फैक्ट्री मे बुलाकर चाय भी नही पिला सकते···।" कुछ रुककर उन्होंने फिर कहना शुरू किया—

"···सेतान को इसी समय मीटिंग में जाना था ? तुम जाओ डी० एम० के पास। मिनिस्टर 'एयरोड्राम' से आकर सीधे हमारी फैक्टरी मे चाय पी सकते हैं···हमारा गेस्ट हाउस उनके सर्किट हाउस से 'फार बेटर' होगा। वैसे थमय्या मेरे दोस्त है। मैं बिना किसीसे कहे-सुने भी उन्हें एयरोड्राम से सीधे पकड़कर ला सकता हूँ। लेकिन फैक्ट्री का मामला है

कालेज । नाम तो नहीं आस्ट्रेलिया से आएगी ।"

"डिपार्चर किस समय ?" पी० ए० ने मानिकटाला की ओर देखा, अपनी बात धीरे से दोहरा दी, 'आस्ट्रेलिया से आएगी ...?' अन्त में 'यानी डिपार्चर' और जोड़ दिया ।

मानिकटाला ने इधर-उधर देखा । उनका पाइप आगन्तुकों के हत्थे पर रखा गया । उसने हाथ से उठाकर उनके सामने रख दिया । वे उसे पिन से कुरेदने लगे । दियासलाई जलाई और तम्बाकू जलाने के लिए छोटे-छोटे कश खींचने लगे । दियासलाई की रोशनी में उनका चेहरा थोड़ा विकृत हो गया, उनकी नाक के नथुने तक खिंचकर लम्बे हो गए । इतनी देर तक की खामोशी के बाद, कमरे में सिगार का धुआँ हिलता हुआ नजर आया ।

पाइप में दम लगाकर उन्होंने फिर 'हूँ' की और पी० ए० से पूछा, "इंजीनियरिंग कालिज से कोई 'इनवीटेशन' आया ?"

"जी नहीं ।"

"आया जरूर होगा । तुम लोगों को कुछ पता नहीं रहता···खेतान को टेलीफोन करो ।" मानिकटाला ये सब एक साँस में कह गए थे ।

"जनरल मैनेजर साहब को ?"

"हाँ भई और क्या मालिक साहब को ! तुम बात को जल्दी क्यों नहीं समझते ?"

टेलीफोन पी० ए० के कमरे में था और 'एक्सटेंशन' मानिकटाला साहब की मेज़ पर । मात्र वे बात करते थे । फोन करने के लिए पी० ए० अपने कमरे में चला गया । मानिकटाला ने अपनी कुर्सी पर बैठे-बैठे चारों तरफ घूमना शुरू कर दिया । सामने की रोशनी दीवार पर उनके भिन्न-भिन्न पोज़ बनाने लगी । जब 'साइड पोज़' आता था, व्यक्ति का आभास ने लगता था । पीठ आते ही आकृति सपाट हो जाती थी ।

पी० ए० ने आकर बताया, "खेतान साहब उद्योग-निदेशालय किसी टिंग में गए हैं ।" मानिकटाला ने कुर्सी का आधा चक्कर पूरा करते हुए

कहा, "थमय्या ने मुझे नहीं लिखा। वैसे जब मैं दिल्ली जाता हूँ ···कई बार मैं भी उन्हें सूचित नहीं कर पाता। उसको भी मुझसे यही शिकायत रहती है।" वह चुपचाप खड़ा सुनता रहा।

"अच्छा डी० एम० को फोन करो—थमय्या साहब से भेंट हो सकेगी।" वह फिर फोन करने के लिए चल दिया, लेकिन मानिकटाला साहब ने बीच ही में से बुलाकर कहा, "डी० एम० को नहीं···। सेतान के बारे में पूछो—जब आये मुझसे फौरन बात करे···।" पी० ए० सेतान के बारे में मालूम करने चला गया। मानिकटाला ने अन्तरंग फोन का बजर दबाकर पुनः कहा, "सेतान न आया हो तो पोद्दार से बात कराओ।"

जब पोद्दार फोन पर आए तो मानिकटाला ने पहले ही पूछा, "सेतान कहाँ है?" और बिना उसका जवाब सुने कहते गये, "मीटिंग में तुम नहीं जा सकते थे। जब देखो शायद, आये तो मुझसे फौरन बात करे।" रिसीवर रख दिया। रखने के तुरन्त बाद ही उन्होंने फिर पोद्दार से बात कराने के लिए पी० ए० को कहा। लेकिन बात करते समय पी० ए० का वहाँ खड़ा रहना उन्हें संभवतः ठीक नहीं लगा। उन्होंने कुछ इसी तरह उसको ओर देखा था। वह चुपचाप अपने कमरे में चला गया और मेन फोन का रिसीवर उठाकर उनकी बातें सुनने लगा। मानिकटाला ने छूटते ही पोद्दार को डाँटना शुरू कर दिया था, "तुम लोग क्या करते हो··· हजार दो-दो हजार इसीलिए मिलता है। कुर्सियाँ तोड़ो और गाड़ियों पर दौड़ो। इंजीनियरिंग कालिज तक ने सेन्ट्रल मिनिस्टर ऑफ इण्डस्ट्रीज को बुला लिया···तुम लोग उन्हें फैक्ट्री में बुलाकर चाय भी नहीं पिला सकते···।" कुछ रुककर उन्होंने फिर कहना शुरू किया—

"···सेतान को इसी समय मीटिंग में जाना था? तुम जाओ डी० एम० के पास। मिनिस्टर 'एयरोड्राम' से आकर सीधे हमारी फैक्टरी में चाय पी सकते हैं···हमारा गेस्ट हाऊस उनके सर्किट हाऊस से 'फार बेटर' होगा। वैसे थमय्या मेरे दोस्त हैं। मैं बिना किसी से कहे-सुने भी उन्हें एयरोड्राम से सीधे पकड़कर ला सकता हूँ। लेकिन फैक्ट्री का

कालेज । नाम तो नहीं आरटलिंगटन से मांगी ।"

"स्पिनर किस मशीन ?" पी० ए० ने मानिकटाला की ओर देखा, अपनी बात धीरे से दोहरा दी, 'आर टलिंग से मांगी ···?' अन्त में 'यानी स्पिनर' और जोड़ दिया ।

मानिकटाला ने इधर-उधर देखा । उनका पाइप आरामकुर्सी के हत्थे पर रखा गया । उसने झट से उठाकर उनके सामने रख दिया । वे उसे पिन से कुरेदने लगे । दियासलाई जलाई और तम्बाकू जलाने के लिए छोटे-छोटे कश खींचने लगे । दियासलाई की रोशनी में उनका चेहरा थोड़ा विकृत हो गया, उनकी नाक के नथुने तक खिंचकर लम्बे हो गए । इतनी देर तक की खामोशी के बाद, कमरे में सिगार का धुआं हिलता हुआ नज़र आया ।

पाइप में दम लगाकर उन्होंने फिर 'हूँ' की और पी० ए० से पूछा, "इंजीनियरिंग कालिज से कोई 'इनवीटेशन' आया ?"

"जी नहीं ।"

"आया जरूर होगा । तुम लोगों को कुछ पता नहीं रहता···खेतान को टेलीफोन करो ।" मानिकटाला ये सब एक सांस में कह गए थे ।

"जनरल मैनेजर साहब को ?"

"हाँ भई और क्या मालिक साहब को ! तुम बात को जल्दी क्यों नहीं समझते ?"

टेलीफोन पी० ए० के कमरे में था और 'एक्सटेंशन' मानिकटाला साहब की मेज़ पर। मात्र वे बात करते थे । फोन करने के लिए पी० ए० अपने कमरे में चला गया । मानिकटाला ने अपनी कुर्सी पर बैठे-बैठे चारों तरफ घूमना शुरू कर दिया । सामने की रोशनी दीवार पर उनके भिन्न-
-पोज बनाने लगी । जब 'साइड पोज' आता था, व्यक्ति का आभास
था । पीठ आते ही आकृति सपाट हो जाती थी ।

ए० ने आकर बताया, "खेतान साहब उद्योग-निदेशालय किसी
ए हैं ।" मानिकटाला ने कुर्सी का आधा चक्कर पूरा करते हुए

"नहीं, मैंने तो माफ़ी माँग ली। बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स की मीटिंग है।"

......

"हाँ-आँ अगर कैंसिल हो गई तो शायद आ जाऊँ···सुबह प्रिंसिपल भी कह रहे थे।"

......

"देखिए ! अच्छा नमस्कार !"

फोन रखकर मानिकटाला साहब का चेहरा खिंची प्रत्यंचा-सा हो गया था। उन्होंने केडिया फ्लोर मिल्स से भी बात की, "कहिए क्या हाल-चाल है केडियाजी···मुलाकात ही नहीं होती ?"

......

"क्या बताऊँ, आजकल इन मिनिस्टरों के मारे भी नाकों दम है। रोज कोई-न-कोई आया रहता है। आने से पहले फोन कर देते हैं, आज धर्मैया आ रहे हैं, उनसे पहले साहब बहादुर का फोन आ गया···।"

......

"वहाँ पर भेंट होनी तो मुश्किल है। शाम को हमारे यहाँ भी बोर्ड की मीटिंग है···फिर भी कोशिश करूँगा।"

......

"अच्छा।" मानिकटाला ने जल्दी से रिसीवर रख दिया।

इन दोनों से बात करने के बाद उन्होंने फिर खेतान को दिखवाया। उस समय उनका चेहरा टूटे प्याले-सा लग रहा था। खेतान तब तक भी नहीं लौटे थे। मानिकटाला ने नाराज़ होकर अपने पी० ए० से कहा, "वहीं पर टेलीफोन करो और कहो फौरन चला आए···भाड़ में गई मीटिंग-शीटिंग !"

लेकिन उसने आकर बताया, "वे वहाँ से घंटा-भर पहले चल दिये।" मानिकटाला साहब एकाएक नाराज़ हो उठे, "अपनी बीवी के पास गया होगा···दफ्तर में मन नहीं लगता। तनख्वाह कम्पनी देती है, नौकरी अपनी बीवियों की करते हैं···स्सा···" पी० ए० को सामने देखकर

मानिवार

। यानी

पढ़ना

पढ़ना

करना

आगाग

बैठे न

रहे थे

पारद

के ।

अधि

भीगे

ओ

वा

उ

पृ

म

ह

देना कि हम इस तरह नहीं जाते। चक्कीवालों तक को तो इन्वीटेशन गया है। तुम लोग कुछ नहीं कर सकते···बस बातें बनाना जानते हो। प्रिंसपिल को यह भी बता देना, थमय्या मेरे 'पर्सनल' दोस्त हैं।" मानिकटाला झटके के साथ उठ खड़े हुए। उनके उठने के बाद कुर्सी लगभग चौथाई वृत्त घूमकर रुक गई। उन्होंने कमर पर हाथ रखकर कमरे की लम्बाई के दो चक्कर लगाये और स्वयं पी० ए० के कमरे में जा कर प्रिंसिपल का नम्बर मिलाया।

······

"गुड मार्निंग प्रिंसपिल साहब! मानिकटाला मानिकटाला'ज़ का चेयरमैन। सुबह थमय्या ने फोन किया था, मैंने सोचा आपसे पूछ लूँ। सब ठीक है न?"

······

"पहले तो यही सोचा था थमय्या से कह दूँ, प्रिंसपिल साहब ने मुझे तो याद किया ही नहीं, लेकिन फिर यही ध्यान आया, आपसे बाद में निबट लेंगे, एक शहर का मामला है···बाहर वालों को क्यों बताया जाए?"

······

"कोई बात नहीं···यह तो होता ही रहता है। मैं बुरा मानता तो आपको फोन क्यों करता?"

······

"आपने तो मेरे साथ एक और ज़्यादती की है! मैं बच्चों के लिए डोनेशन देना चाहता था, आपने इन्कार कर दिया···।"

······

"समझता हूँ, समझता हूँ। इसीलिए तो चुप हो गया। लेकिन थमय्या से आपको कहना होगा, डोनेशन के लिए आपने ही मना किया है···नहीं तो मैं उनसे झूठा बनूँगा, दोस्ती का मामला है।"

······

एकाएक तेज आवाज में कहा, "प्रिंसिपल को फोन करो...कहना, आगे मानिकटाला ग्रुप के चेयरमैन बात करना चाहते हैं..."

कुछ रुककर फिर कहा, "नहीं ठीक समय बता देना।"

उन्होंने फिर उसे वापस बुला लिया, "अच्छा रहने दो, मैं खुद बात कर लूँगा।"

पी० ए० अगले आदेश की प्रतीक्षा में खड़ा रहा। मानिकटाला पहले तो चुप रहे, फिर एकदम डाँटते हुए बोले, "जाओ...अरे भाई जाओ भी!" उसने धीरे से पूछा, "और फाइलें?"

"फाइलें..." उन्होंने अधीनता के साथ दोहराया, फिर कहा, "अच्छा फाइलें...हूँ...ले जाओ।" लेकिन उसे फाइलें लिए जाते हुए देखकर आप-ही-आप कहने लगे, "किसने कहा फाइलें लाने को, तुम्हें खुद नहीं सूझता...मैं कितना बिजी हूँ?...सेतान को फोन करो।"

पी० ए० के कमरे में पहुँचने के पहले से ही घंटी बज रही थी। उसने रिसीवर उठाया, "ओह सेतान साहब, साहब को बताइए...मैं देता हूँ, होल्ड कीजिए।"

रिसीवर हाथ में लेते ही मानिकटाला साहब ने कई सवाल कर दिए, "कितना डोनेशन तय हुआ...एनाउन्स करेंगे या मेरे हाथ से दिलवायेंगे?"

......

"सरकारी इन्टीट्यूशन (इन्स्टीट्यूशन) होने से डोनेशन क्यों नहीं लेंगे? इलेक्शन के दिनों में सरकार वाले चन्दा खुद नहीं माँगने जाते। मैं यमय्या से ही बात करूँगा...इन्वीटेशन का क्या हुआ?"

......

"निमंत्रण-निमंत्रण क्या लगा रखा है, सीधा 'इन्वीटेशन' कहो।"

......

"क्या खत्म हो गए...कम छपवाए थे?"

......

...न्वीटेशन भी कोई इन्वीटेशन होता है? प्रिंसपिल से कह

देना कि हम इस तरह नहीं जाते। चक्कीवालों तक को तो इन्वीटेशन गया है। तुम लोग कुछ नहीं कर सकते…बस बातें बनाना जानते हो। प्रिंसपिल को यह भी बता देना, थमय्या मेरे 'पर्सनल' दोस्त हैं।" मानिकटाला झटके के साथ उठ खड़े हुए। उनके उठने के बाद कुर्सी लगभग चौथाई वृत्त घूमकर रुक गई। उन्होंने कमर पर हाथ रखकर कमरे की लम्बाई के दो चक्कर लगाये और स्वयं पी० ए० के कमरे में जा कर प्रिंसिपल का नम्बर मिलाया।

……

"गुड मार्निंग प्रिंसपिल साहब! मानिकटाला मानिकटालाज का चेयरमैन। सुबह थमय्या ने फोन किया था, मैंने सोचा आपसे पूछ लूं। सब ठीक है न?"

……

"पहले तो यही सोचा था थमय्या से कह दूं, प्रिंसपिल साहब ने मुझे तो याद किया ही नहीं, लेकिन फिर यही ध्यान आया, आपसे बाद में निबट लेंगे, एक शहर का मामला है…बाहर वालों को क्यों बताया जाए?"

……

"कोई बात नहीं…यह तो होता ही रहता है। मैं बुरा मानता तो आपको फोन क्यों करता?"

……

"आपने तो मेरे साथ एक और ज्यादती की है! मैं बच्चों के लिए डोनेशन देना चाहता था, आपने इन्कार कर दिया…।"

……

"समझता हूँ, समझता हूँ। इसीलिए तो चुप हो गया। लेकिन थमय्या से आपको कहना होगा, डोनेशन के लिए आपने ही मना किया है…नहीं तो मैं उनमें झूठा बनूंगा, दोस्ती का मामला है।"

……

"[illegible] । [illegible] मुझे [illegible] की [illegible] मिल जायेगी, लेकिन [illegible] ! आप अपना वादा याद रखियेगा ।"

......

"थैंक्यू," [illegible] कहा ।

रिहर्सल करते समय मानिकबाला की नज़र पी० ए० की नज़रों से टकराई, उसकी आँखों में एक मुस्कराहट उभर आई थी । उसे देखकर मानिकबाला की नज़रें पश्चिमी आसमान की तरफ़ [illegible] गई ।

# फ्रॉक वाला घोड़ा, निकर वाला साईस

"उर्रं…"

"उर्रं…"

"डट्…हट्…"

"बच के…! बाएँ से…!"

नजर उठ जाती है। दो बच्चे घोड़े का खेल, खेल रहे हैं। फ्रॉकवाला घोड़ा है निकरवाला साईस। घोड़े की बग़ल में से रस्सी निकालकर साईस ने रास बना ली है।

मुझे यह दृश्य कुछ विचित्र-सा लगता है…शायद विशेष मानसिक स्थिति के कारण। मैं रेलिंग पकड़कर खड़ा हो जाता हूँ।

"वैसे यह खेल हमने भी खेला है। अब बच्चे खेल रहे हैं। शायद बुजुर्गों ने भी खेला होगा…"

"भला या बुरा ?" कुछ निश्चित नहीं कर पाता। अचानक रीता को दिखाने के लिए आतुर हो

मुझे सुनाने के लिए वह इस घटना में भी कुछ-न-कुछ खोज निका-लेगी । मुस्कराते-मुस्कराते रह जाता हूँ ।

●

चल बे घोड़े दे पुत्तर···राजा की सवारी में राजा की चाल चलना है ।" वह पंजाबी ठीक नहीं बोल पाता ।

फिर 'डुर्र···डुर्र···' और टिटकारियाँ ।

कॉपीवाले घोड़े पर इस सबका कोई असर नहीं । वह बिना ध्यान दिए उसी चाल से चलता रहता है । शायद निकरवाले साईस को यह पसन्द नहीं आता । वह रास फटकार देता है । सुनना उसको भी पसन्द नहीं । दरअसल तेज और अच्छे घोड़े की पहचान भी यही है 'गैरत' । कहते हैं अच्छे आदमी और अच्छे घोड़े में एक यह भी अन्तर होता है ।

घोड़ा दोनों हाथ ऊपर उठाकर अलिफ होने की मुद्रा में खड़ा हो जाता है । घोड़ा बने बच्चे की यह मुद्रा असली घोड़े की उसी असहिष्णुता की प्रतीक है ।

उसके इस अभिमान से मुझे प्रसन्नता होती है । लेकिन पुनर्विचार इस प्रसन्नता का सर्वथा विरोधी है । जिस बात से मैं प्रसन्न हूँ, वह गम्भीरतापूर्वक सोचने का विषय अधिक है । मैं सोचने लगता हूँ । 'साईस घोड़े से चाल बदलने के लिए कह रहा है तो इसमें अलिफ होने की क्या बात है ? यह खुल्लमखुल्ला साथ-साथ न चलने की धमकी नहीं तो और क्या है ?"

'असहयोग···अनुशासनहीनता ।' ज़ोर से गाली की तरह बकने लगता हूँ । लेकिन बक लेने के बाद भी मेरा आक्रोश खत्म नहीं होता ।

"जानवर, आदमी थोड़े ही है ! सहयोग और असहयोग क्या जाने ? और फिर यह तो बच्चों का खेल है ।" मेरा दिमाग़ बच्चों की बातें सोचने लगता है—'बच्चे क़ाबिल-ए-तारीफ़ होते हैं, कितना सूक्ष्म अध्ययन होता है ! जब अभिनय करते हैं तो समझते रहते हैं सब-कुछ अभिनय मात्र ही है ! लेकिन हम लोग···' और तारीफ करते-[illegible]ने फिर गुस्सा आ

जाता है—"यह भी कोई बात है ! नक़ल करने के लिए और कुछ नहीं··· घोड़ा ही रह गया। मनुष्य जाति में ही हीन भावना है।"

"लेकिन यह तो बच्चे खेल रहे हैं, इसमें नाराज़ होने की ऐसी क्या बात ?" मेरी कुछ आदत है बच्चों के खेल को भी गम्भीर मसला समझ बैठता हूँ। फिर उसे न्यायसंगत ठहराने का प्रयत्न करता हूँ।

सीतू और नीतू मेरे ही बेटा-बेटी हैं। बड़े शैतान। मेरी इस असहनशीलता के शिकार वे भी हो चुके हैं। रीता का और मेरा ऑफिस अलग-अलग है। दिशाएँ भी। नहीं तो मैं उसके साथ ही कार में जा सकता था। साथ-साथ इसलिए नहीं जाते। हम लोगों में सेक्स की भिन्नता है, हालाँकि यह कोई ऐसा कारण नहीं, आखिरकार वह मेरी पत्नी है। वैसे उस रोज़ साथ गये ही थे (हम लोगों के एक-दो कॉमन सम्बन्ध भी हैं, जहाँ साथ-ही-साथ जाना पड़ता है)। लौटने पर देखा नीतू और सीतू एक खेल खेल रहे हैं। उन्होंने उसे खेल ही बताया था। दरअसल वे हम लोगों की नकल कर रहे थे।

रीता की भूमिका में नीतू और मेरी भूमिका में सीतू।

नीतू यानी रीता ने डायलाग बोला, "आप यह कैसे समझते हैं कि मैं दिन-भर आपसे बँधी-बँधी डोलूँ ! मेरी सोसाइटी में आप फिट नहीं हो पाते और आपकी सोसाइटी में···मेरा तो कोई सवाल ही नहीं उठता। आप चाहते हैं अन्य क्लर्कों की पत्नियों की तरह मैं भी आपकी सेवा में हाथ बाँधे खड़ी रहूँ।···पति के रुष्ट हो जाने पर मुझे नरक मिलेगा, इसका मुझे कोई डर नहीं···" नीतू ने ठीक उसी तरह नथने फुलाए और झटके के साथ 'हूँ' किया, जैसे रीता किया करती है।

अब मैं, यानी सीतू बोला, "लेकिन यह तो तुम्हें पहले सोचना चाहिए था···। तुम···तुम···यू आर ऑन ए हायर पोज़ीशन···" अन्तिम वाक्य को उसने ठीक उसी तरह तोड़-तोड़कर बोला जैसे भावावेश में बोला जाता है।

"मैं कोई ग़लती करती हूँ तो सुधारना भी जानती हूँ।···पछताती

सीतू रीता की नरम बाहों को पीछे छोड़ती हुई कमरे में चली गई। गुस्से में रीता ठीक इसी तरह बाल पीछे फेंका करती है।

सीतू हाथ मलता खड़ा रह गया। मुझे क्षण-भर को लगा सीतू को ऐसे नहीं करना चाहिए।

रीता जोर से हँस पड़ी और सीतू को गोद में उठाकर प्यार से बोली—'हाय, मेरी एक्ट्रेस!' जोर की आवाज के साथ उसे चूम लिया। लेकिन मुझे इतनी जोर का गुस्सा आ गया था कि सीतू के चपत रसीद किये बिना नहीं रह सका। उसका सिसियाकर रोना भी मुझे पसन्द नहीं आया। एक और चपत रसीद कर दिया। मेरे चपतों और रीता के चूमने की भिन्न आवाजों में कहीं समानता-सी लगी।

मैंने रीता की आँखों में देखना चाहा, क्योंकि शरीर में एकमात्र आँखें ही पारदर्शक (ट्रांसपेरेंट) होती हैं। उस समय मैं नहीं समझ सका, रीता यह कहने के बजाय 'तुम दिन-दिन पूरी तरह क्लर्क बनते जा रहे हो' अपने दोनों बच्चों की उँगली पकड़कर वहाँ से चुपचाप कैसे चली गई। लेकिन मैं बख्शा नहीं गया। शाम को उससे भी ज्यादा सुनना पड़ा, "तुम बिल्कुल गँवारों की तरह व्यवहार करते हो। सीतू को इस तरह पीटकर तुमने उसका एक 'टेलेन्ट' हमेशा के लिए दबा दिया। इन बच्चों को पीटने का तुम्हें कोई अधिकार नहीं।"

मैंने कहना चाहा—"यह सब तो मैं उसी समय सुनना चाहता था, बारह घण्टे देर क्यों कर दी?" लेकिन मैं जानता था उसकी बातें अक्षरशः सत्य हैं, इसलिए चुप लगा गया।

●

"बस···बस।"

मेरा ध्यान सड़क पर दौड़ते हुए उस फ्रॉक वाले घोड़े और निकर वाले साईस पर फिर चला गया। मुझे आश्चर्य होता है वह अभी भी उसी तरह दौड़ रहा है—मैं कितनी बड़ी-बड़ी बातें सोच गया।

साईस घोड़े की खुशामद में लगा है···"मेरे शेर···अपने सिकन्दर को

चने का रातब दूंगा।"

घोड़ा पाँव पटककर सिर हिलाता है। साईस उसकी कमर और गर्दन पर हाथ फेरने लगता है। घोड़ा धुड़धुड़ी लेकर अपनी रजामन्दी प्रकट कर देता है। साईस भी 'वाह राजा, हब् मेरे शेरा···' कहकर उसकी एल टी लगाने की कोशिश करता है। मैं मुस्करा देता हूँ। मुझे अचानक एक बात याद आ जाती है, हम अपने सुपरिन्टेन्डेन्ट को 'व्हाइट फाइव' (हार्स-पावर) कहते हैं। भला जब व्हाइट फाइव को एल टी लगाने की जरूरत पड़ती है वह तो पूरे हार्सपावर का प्रतिनिधित्व कर रहा है।

मेरी नजर सामने ताँगा स्टैंड पर खड़े एक ताँगे पर चली जाती है। ताँगेवाला जुते घोड़े के पाँवों को मल रहा है। मैं सोचने लगता हूँ, चलते घोड़े के पाँव सब मलते हैं।

●

वह फ्रॉकवाला घोड़ा, और निकरवाला साईस एक गली में मुड़ गए हैं। मेरा मन हो आता है मैं रीता के पास जाकर कुछ देर बैठूँ और प्यार के साथ यह सब किस्सा सुनाऊँ। मैं भी तो उससे बचता फिरता हूँ। रेलिंग से हटकर अन्दर की ओर चल देता हूँ। लेकिन···नहीं जाता। साधारण-तया हम लोग अनुपयुक्त क्षणों (ऑड ऑवर्स) में एक-दूसरे को डिस्टर्ब नहीं करते। यह बात हम लोग किसीसे कहते-वहते नहीं। लोग-बाग इस बात को समझ तो पाते नहीं, पूछने लगते हैं—"पति-पत्नी के लिए क्या 'आड आवर्स' ?"

हमारे यहाँ बड़ी जनतन्त्रात्मकता है। सब अपना-अपना पथ चलते हैं। वैसे रीता दफ्तर का काम घर भी लाती है। हालाँकि हम लोगों को नोटिंग-ड्राफ्टिंग भी करनी होती है। अफ़सरान तो बस चिड़िया मात्र बैठाते हैं। फ़ाइलें, बिना अफ़सर की चिड़िया के अर्थहीन वाक्यों-सी रहती हैं। यद्यपि उन लोगों के पास हमसे अधिक समय होना चाहिए, लेकिन वे लोग हर समय व्यस्त दिखते हैं। फिर रीता तो बड़ी 'कॉनशस्टाइप' है। डरती है, कहीं उसके हस्ताक्षर कर देने से अर्थ का अनर्थ न हो जाए।

इसलिए भी उसका नाम बढ़ रहा है।

शादी के बाद की ही बात है, मैंने उससे कहा था, "तुम इतना काम करती हो, दो मिनट साथ बैठने का भी समय नहीं मिलता... मैं मदद कर दिया करूँगा।" रीता को यह बात पसन्द नहीं आई। हालाँकि उसका यह जवाब नहीं था, इसमें मेरी आप क्या मदद करेंगे—नोटिंग-ड्राफ्टिंग का काम तो है नहीं। लेकिन ठीक मुझे उसी तरह असहनीय लगा, किसी जगत्प्रसिद्ध अहमक को घर वालों के मुँह से अहमक सुनना बुरा लगता है।

जब वह काम करती होती है, मैं उसके कमरे में नहीं जाता। व्यवधान पड़ता है। नीति-सम्बन्धी मसले (पॉलिसी मैटर्स) होते हैं। ऐसे मामले सबके सामने तय करना ठीक नहीं होता। किसीके सामने मुँह से ही निकल जाए। ऐसे मामलों में वह नागरथ से मदद लेती है। वह भी डिप्टी सेक्रेटरी है। किसी और विभाग में। शुरू दिन से ही उसको रीता की मदद करते देखा है।

शादी के बाद जब नागरथ से परिचय कराया था, तो रीता ने कहा था—"ये मेरे बड़े भाई की तरह हैं। आज तक जितने अहसान इन्होंने मुझ पर किये हैं शायद हम दोनों भी मिलकर न उतार सकें।" बात इतने भाव-भरे ढंग से कही गई थी, मेरे पास सिवाय कृतकृत्य हो जाने के और दूसरा रास्ता ही नहीं था।

उसके बाद नागरथ ने मुझे भी अपने अहसानों से लाद दिया। संकटकालीन स्थिति (इमरजैन्सी) के समय छँटनी होने लगी तो लिस्ट में मेरा भी नाम आ गया था। लेकिन उसका ही दम था कि आज मैं उसी पोस्ट पर बरकरार हूँ। अब तो स्थायी हो गया, हालाँकि रीता की मर्ज़ी नहीं थी। नागरथ ने भी मुझे यही राय दी थी, "आपके डेढ़ सौ, दो सौ से तो घर में कोई विशेष सहारा लगता नहीं, आप आराम से रहें। आखिर रीता किसके लिए कमाती है!" जब नागरथ समझा रहे थे, रीता मुस्करा रही थी।

'एक नौजवान पढ़े-लिखे आदमी को आराम करने की सलाह देना···!' उन दोनों का यह सुझाव आज तक मेरे गले नहीं उतरा। जब मैंने उन्हें समझाना चाहा—"महत्त्व इस बात का नहीं, मैं कितना कमाता हूँ—कमाना तो मेरे समय के उपयोग की रायल्टी-मात्र है। मुख्य प्रश्न समय के उपयोग का है। अपने जहर को भी नाली में बहाकर वैसे ही समाप्त नहीं कर देता—यह तो मेरी इतनी बड़ी जिन्दगी की बात है।' नागरथ मुझे समझदार आदमी मालूम पड़ा। मेरे रुख को देखकर न चाहते हुए भी, उसने अपनी बात तुरन्त बदल दी। रीता नाराज़ हो गई,"आप पुरुष लोग समझते हैं, जो कुछ आप कमाकर लाते हैं उसके कारण हम लोग आप लोगों का सम्मान करते हैं और इसी कारण आप लोग अपने-आपको स्वतन्त्र रख पाने में समर्थ हैं। लेकिन आज व्यक्तिगत सम्बन्धों का भी आर्थिक महत्त्व अधिक है। अगर मैं आपसे छ गुना कमाती हूँ, तो छः गुना ही बड़ी भी हूँ···'

मेरे अन्दर उस पर बिगड़ उठने वाली प्रतिक्रिया हुई, लेकिन नागरथ ने पहले ही डाँटकर परिस्थिति सँभाल ली, "रीता, तुम्हें मालूम है—क्या कह रही हो? भारतीय सभ्यता यही है, घर का पुरुष चाहे एक आना कमाकर लाए, उससे परिवार का एक धर्म बनता है, परम्पराएँ और संस्कार बनते हैं। स्त्री का कमाया धन अपूज्य है। उसमें परिवार में कुसंस्कार जन्म लेते हैं, जीवन दूषित हो जाता है और सन्तान···।" पुरुष भौतिक शक्ति और सत्ता का प्रतीक है, इसलिए स्त्री उसमें विवाह करती है। शारीरिक आवश्यकता तो दासों में पूर्ण हो सकती है। "बिगड़ उठने के बजाय रीता की गर्दन पश्चात्ताप से लटक गई।

•

मैं रीता को फ्रॉकवाले घोड़े और निकरवाले साईस का किस्सा सुनाने के उतावलेपन को ज़रा रोक लेता हूँ। मेरा दिमाग अपने अन्दर दौड़ते हुए किसी काल्पनिक घोड़े की टापों को महसूस करने लगता है। न ··· मन में संचार होने लगता है। कहीं फ्रॉकवाले घोड़े ने

कुर्सियाँ न आपकी शुरू कर दी हों, क्योंकि जिसके पीछे और जिसकी पत्नी की एक ही गति होती है। फिर सोचता हूँ निकम्मापन शायद खुशामद करना आसान है।

o

कहकहा···

"शायद नागरथ आ गया है।"

छुट्टी के रोज दोपहर को वह यहीं आ जाता है। मैं सोचता हूँ पीछेवाली बात नागरथ को ही सुनाई जाए, वह अधिक समझदार है। मैं गैलरी पार करके रीता के कमरे तक पहुँच जाता हूँ। लेकिन अन्दर नहीं जाता। जब कोई अन्दर होता है—विशेषकर नागरथ—तो मैं टाल जाता हूँ। जाता हूँ तो नॉक करके। और यह तो साधारण शिष्टाचार की बात है।

मैं नॉक नहीं करता। खड़ा-खड़ा सोचने लगता हूँ, नॉक किया जाए या नहीं। अन्दर नागरथ रीता को समझा रहा है, देखो, तुम अफसर चाहे जितनी काबिल हो, लेकिन वैसे ही निरीह बुद्धि। छुट्टी के दिन वह अकेला बाहर बैठा है। आखिर तुम्हारा वैध पति है। इस तरह से तो तुम सब चौपट कर दोगी। लोग उस पेड़ तक को सींचते हैं, जिसकी छाँह में बैठते हैं।"

"ठीक है, लेकिन तुम मुझसे क्या चाहते हो? तुम्हारे कहने से मैंने इस व्यक्ति से शादी की। रात-रात-भर उस आदमी के साथ पड़ी रहती हूँ, उसके शरीर की दम घोटने वाली गन्ध सिर्फ तुम्हारे लिए बर्दाश्त करती हूँ। हीन है, हीनता उसमें कूट-कूटकर भरी है। मुझे उससे घृणा है।"

मुझे हट जाना चाहिए। हट नहीं पाता।

किसीकी व्यक्तिगत बातें सुनना ठीक नहीं होता। लेकिन मैं भी उन बातों में का ही व्यक्ति हूँ।

नागरथ ने शायद उसको निकट खींच लिया। हल्का-सा विरोध सुनाई पड़ा, "दरवाज़ा खुला है।"

दरवाज़े से हट जाता हूँ। दरवाजा बन्द हो जाता है। मुझे लगता है, यह दरवाज़ा न जाने कब से इसी तरह बन्द है। मैं सूराख से झाँक-कर देखता हूँ। साथ-साथ नागरथ उसे समझाता जा रहा है, "मैंने तो चाहा था कि यह बिलकुल तुम्हारा नौकर बनकर रहे, लेकिन इसने नौकरी नहीं छोड़ी। हाथ-पाँव वाले आदमी में थोड़ा-बहुत स्वाभिमान तो रहता ही है।"

शायद वे लोग बोल पाने की स्थिति में नहीं रहे। रीता के टूटते हुए शब्द सुनाई पड़े, "दरवाज़ा बन्द है…न !"

उत्तर में अलसाया-सा 'हूँ' बस !

रेलिंग के पास वापस आ गया हूँ। 'उर्र…उर्र…' फिर सुनाई पड़ता है। इस बार आवाज़ बदली हुई है।

घोड़ा गली से निकल रहा है।

शायद घोड़े और साईस ने स्थान परिवर्तन कर लिए। इस बार फाँकवाला साईस है। घोड़ा छूटने के लिए बड़ा ज़ोर लगा रहा है।

# पेपरवेट

भेड़ों के रेवड़ के पीछे गड़रिये को लाठी लिए चलते देखकर मृणाल बाबू को हँसी आ रही थी। गड़रिया उनको इकट्ठा करने के लिए मुंह से अजीब-अजीब बोलियां निकाल रहा था। कभी अपनी लाठी को जमीन पर दे मारता था, भेड़ें बेचारी डर के मारे एक-दूसरे से सट जाती थीं।

जमादार (चपरासी) ने आकर बताया, "हुजूर, साहब दफ़्तर आ गए हैं।" हालांकि वे शिवनाथ बाबू से ही मिलने आये थे, लेकिन इस सूचना ने उन्हें क्षण-भर के लिए अव्यवस्थित कर दिया। तुरन्त ही ध्यान आ गया, 'जमादार' उनके चेहरे के बदलते रँगों को बराबर देख रहा है। वे शिवनाथ बाबू के कमरे की तरफ़ तेज़ी से बढ़ गए। कमरे के बाहर 'लुकिंग-ग्लास' लगा

हुआ था। एक नज़र उधर डालने पर उन्हें मालूम हुआ, कि वे खामखाह परेशान थे कि उनके चेहरे पर घबराहट है। धीरे से पर्दा हटाकर पायदान पर पाँव रगड़े, और खँखारते हुए वे अन्दर चले गए।

शिवनाथ बाबू फ़ाइलें देखने में व्यस्त थे। उनके काम में व्यवधान न डालने के खयाल से हाथ जोड़कर चुपचाप कुर्सी पर बैठ गए। बैठने के दो-चार क्षण बाद ही उन्हें खयाल हुआ, आराम से न बैठकर उठंगे बैठे हैं। इस तरह बैठना घबराहट का द्योतक है। मृणाल बाबू ने पीठ कुर्सी के तकिये से लगा ली और पाँव फैला दिए। उनके पाँव आफिस-टेबल के नीचे रखे लकड़ी के खोखले पायदान से टकराए। चेहरा एकदम उतर गया और नज़रें शिवनाथ बाबू के चेहरे की ओर चली गईं। शिवनाथ बाबू पर पायदान से पाँव टकराने की उस आवाज़ का कोई असर नहीं हुआ था। वे बदस्तूर अपनी फ़ाइलें देख रहे थे। मृणाल बाबू उनकी कार्य-कुशलता को गौर से देखने का अभिनय करने लगे, जैसे कुछ सीखने का प्रयत्न कर रहे हों।

शिवनाथ बाबू फ़ाइल उठाते लाल फीता खोलते, फिर 'फ्लैग' लगे स्थान पर से उलटकर पढ़ने लगते थे। बीच-बीच में पीछे के पृष्ठ भी उलटने की आवश्यकता पड़ जाती थी। पढ़ते समय उनके होंठ भी व्यस्त नज़र आते थे। फिर या तो उस पर नोट लिखकर या प्रश्नचिह्न बनाकर फ़ाइल नीचे डाल देते थे। बहुत ही कम ऐसी फ़ाइलें थीं जिन पर उन्होंने उसी रूप में हस्ताक्षर किए हों। इस क्रिया को देखते रहने के कारण मृणाल बाबू को ऊब आने लगी। अतः इधर-उधर ताक-झाँक करने लगे। चारों तरफ से बन्द वह कमरा, जलता हुआ लैंप और लैंप के प्रकाश का फ़ाइलों पर पड़ता घेरा''' किसी दार्शनिक के अन्तस्तल-सा महसूस हुआ। बाकी कमरे में उस प्रकाश का आभास-मात्र था। बैठे-बैठे मृणाल बाबू को एक पुठ में दुखन महसूस होने लगी है, दूसरी पुठ बदल ली।

शिवनाथ बाबू ने फाइलों पर से जब गर्दन उठाई तो मृणाल बाबू सकपका-से गए। शायद उनका खयाल था शिवनाथ बाबू गर्दन उठाने से पूर्व

कोई तो आभास देंगे। जबरदस्ती उनके अपने होंठों पर मुस्कान लानी पड़ी, उनके सूखे होंठ चौगीता रबड़ की तरह खिंच गए। शिवनाथ बाबू ने मूँछों की सघनता में छिपी स्वाभाविक मुस्कान के साथ पूछा, "कहिए, विभाग का काम ठीक चल रहा है ?"

मृणाल बाबू यही सब बताने के लिए आये थे। दरअसल शिवनाथ बाबू के विदेश से लौटने के बाद से उन्होंने कई बार उनसे मिलने का प्रयत्न किया था, लेकिन अत्यधिक व्यस्तता के कारण समय नहीं दे पाए थे। विदेश जाते समय शिवनाथ बाबू उन्हें मन्त्री-पद की शपथ दिलवाकर गए थे। उस समय उनसे यह भी कहा था, "मैं चाहता हूँ आप अपनी उसी तेजी और अक्लमन्दी का यहाँ भी परिचय दें, आपकी अतिरिक्त तत्परता के कारण ही तो शान्तिशरण को त्याग-पत्र देना पड़ा था। मैं समझता हूँ···आप उन सब परिस्थितियों को भली प्रकार समझ सकेंगे।" फिर धीरे से मुस्कराकर पुनः कहा था, "मैं इस बारे में सचेत हूँ···आप जैसे मेहनती और ईमानदार व्यक्ति कम ही हैं···" वे हवाई जहाज में बैठ गए थे। लगभग सभी लोग हवाई जहाज के उड़ने तक खड़े देखते रहे थे। शिवनाथ बाबू के चले जाने के कई दिन बाद तक उन्हें लगता रहा, पिता जैसे बच्चे को स्कूल में भरती कराकर चला गया है।

मृणाल बाबू ने उनकी उस बात की गिरह बांध ली और इस बात की पूरी कोशिश की थी कि शिवनाथ बाबू के लौटकर आने तक विभाग को पूरी तरह बदल डालें। हर फ़ाइल को वह स्वयं देखते थे। कोई भी फ़ाइल पन्द्रह दिन से अधिक न रुके, इस बात के लिए विभाग को सख्त आदेश थे।

शिवनाथ बाबू के विदेश से लौटने के बाद उन्होंने इस बात को महसूस किया, केबिनेट की मीटिंग में उन्होंने सब मंत्रियों के काम की किसी-न-किसी रूप में सराहना की है। मृणाल बाबू के विभाग के बारे में उन्होंने एक शब्द नहीं कहा था। विभाग के काम में भी एक अजीब तरह का परिवर्तन आ रहा था। जो भी फ़ाइल विभाग से माँगी जाती थी, पता चलता था मुख्यमंत्री के पास है। सचिव को पूछते थे, वह भी

मुख्यमंत्री के यहाँ गया हुआ होता था। मृणाल बाबू के मन में यह निश्चय हो गया था, सचिव की बदमाशी है। मुख्यमंत्री को बात करनी होगी, तो विभाग के मंत्री को बुलाकर बात करेंगे। वे यह भी सुन चुके थे, कि वह व्यक्ति मुख्यमंत्री के मुँह लगा है।

शिवनाथ बाबू ने गर्दन उठाकर कॉल-बेल बजाते हुए उनकी ओर मुखातिब होकर कहा, "आपने कुछ बताया नहीं···क्या बात थी?" घंटी सुनकर वही जमादार आ गया, उसने एक नजर मृणाल बाबू पर भी डाली। शिवनाथ बाबू ने मृणालबाबू की ओर इशारा करते हुए जमादार से कहा, "जरा आपके सचिव···मिस्टर राय से टेलीफोन मिलाओ···हम बात करेंगे।"

उनके बैठे हुए, विभाग के सचिव को बुलाया जाना उन्हें अच्छा नहीं लगा। लेकिन चुप रहे। शिवनाथ बाबू के अपनी तरफ़ आँखों का इशारा करके, हूँ, करने पर मृणाल बाबू ने पूछा, "मिस्टर राय से···कोई विभाग का काम है?" शिवनाथ बाबू कुछ इस तरह अपनी फ़ाइलें देखते रहे, जैसे उन्होंने सुना ही न हो। क्षण-भर के लिए मृणाल बाबू का चेहरा सिटपिटाया-सा हो गया। कुछ देर के बाद फिर हिम्मत करके बोले, "इधर मैंने अपने विभाग में···यानी विभाग को काफ़ी चमकाने की कोशिश की है···कई स्कीमें मेरे दिमाग में हैं···।"

उनका वाक्य समाप्त होने के बाद शिवनाथ बाबू ने बड़ी-सी 'हूँ' की। मृणाल बाबू समझ नहीं पाए यह 'हूँ' उनकी बात पर की गई है, या फ़ाइल देखकर मुँह से निकल गई। फ़ाइल बाँधते हुए वे मुस्कराए और बोले, "अच्छा···।"

'अच्छा' सुनकर मृणाल बाबू जरा उत्साहित हो गए, कहने लगे, "मिस्टर राय बिल्कुल सहयोग नहीं दे रहे। कोई भी फ़ाइल मेरे सामने नहीं आती। माँगने पर यही उत्तर मिलता है मुख्यमंत्री के यहाँ गई हुई ···पूरा फ़ाइलें मँगाकर क्या करेंगे? आखिर करने ही तो मुझे ···आपका विश्वासपात्र हूँ। लेकिन मिस्टर राय···बात

तो जानते ही हैं बड़े पहुँचे हुए व्यक्ति हैं…" फिर रुककर सकुचाते हुए कहा, "मिस्टर राय समझते हैं, मुझे यह सब आगमें करते डर होगा… नया-नया आदमी हूँ…"

शिवनाथ बाबू को पुनः फाइलों में व्यस्त देखकर मृणाल बाबू को अपने प्रति ज्यादती-सी होती मालूम हुई। जब जमादार ने आकर बताया कि राय साहब कोठी पर नहीं हैं…मन्दिर गए हैं, शिवनाथ बाबू बिना कुछ कहे कुर्सी पर से उठ खड़े हुए। मृणाल बाबू की ओर हाथ जोड़कर बोले, "अच्छा…।"

मृणाल बाबू को लगा, कि उन्हें कोठी से धक्के देकर निकलवा दिया गया है। तेजी के साथ कमरे से बाहर निकल आए। बाहर निकलते ही उनकी नजर जमादार पर गई। वह बड़े हाव-भाव के साथ उनके ड्राइवर को कुछ बता रहा था। उसके चेहरे पर कुछ इस प्रकार की हँसी थी, जैसे किसीकी नकल उतार कर मजा ले रहा हो। उसका इस तरह करना मृणाल बाबू को अच्छा नहीं लगा। कार में बैठने पर ड्राइवर से पूछा, "जमादार क्या कह रहा था ?"

ड्राइवर इस प्रश्न के लिए तैयार नहीं था। वह घबरा-सा गया और उसके मुँह से यही निकला, "जी, कुछ नहीं।"

"कुछ कैसे नहीं…" मृणाल बाबू ने जरा सख्त आवाज़ से उसी का वाक्य दोहराया।

ड्राइवर ने यह कहकर जान बचानी चाही, "कुछ आपस की ही बातें थीं।"

मृणाल बाबू को इस सबसे सन्तोष नहीं हुआ, ज़रा खुलकर पूछा, "हमारे बारे में कुछ कह रहा था !"

ड्राइवर ने उनकी तरफ़ देखने के लिए ज़रा-सी गर्दन घुमाई, वे पिछली सीट पर बाएँ कोने में थे। सामने ऊपर का शीशा भी दूसरे कोण पर था। ड्राइवर को सामने की तरफ़ ही देखते हुए कहना पड़ा, "हजूर, और तो कुछ नहीं…बस यही पूछ रहा था, मुख्यमंत्री जी तुम्हारे

साहब से क्यों नाराज हैं…अभी-अभी तो तुम्हारे साहब मंत्री बने हैं।"

मृणाल बाबू को बड़े जोर से गुस्सा आया। उन्होंने कहना चाहा, 'शिवनाथ बाबू, मुझसे क्या नाराज होगा…मैं ही उससे नाराज हूँ…' उन्होंने कहा नहीं। केवल आँखें बन्द करके पीछे की ओर लुढ़क गए। आँखें बन्द कर लेने पर भी उनके मन का आक्रोश कम नहीं हुआ, नाक के नथने फूल गए और वह सोचने का प्रयत्न करने लगे, घर जाकर त्यागपत्र दे देंगे। मंत्री बनने से पूर्व शिवनाथ बाबू का जो उनके साथ व्यवहार था, अब एकदम उससे भिन्न है। उन्हें एकाएक आभास हुआ वे आप-ही-आप कुछ बोल रहे हैं। सीधे बैठ गए और ड्राइवर की तरफ देखने लगे, उसने देखा तो नहीं लिया। लेकिन जब उनकी नजर सामने वाले शीशे पर पड़ी, तो शीशे का कोण बदला हुआ था। सब स्थितियाँ उन्हें ऐसी लगीं, जैसे बन्दी बना दिये गए हों।

आज की परिस्थिति पहले से एकदम भिन्न हो गई थी। जब शिवनाथ बाबू उन्हें मंत्री-पद के लिए आमंत्रित करने गए थे, तो कितने मधुर, स्नेहशील नजर आ रहे थे। मृणाल बाबू को उनका वह वाक्यांश शब्दशः याद हो आया, उस समय उनसे कहा गया था, "मैं जानता हूँ आप स्पष्टवादी और ईमानदार हैं…पार्टी-सचेतक के होते हुए भी आपने मेरी सरकार का विरोध किया। शान्तिशरण को आपके ही कारण त्याग-पत्र देना पड़ गया…" यह कहते हुए वह शायराना-सा हँस दिये थे। फिर गम्भीर होकर कहा था, "यदि मैं चाहता तो आपको पार्टी और सदन से निष्कासित करा सकता था। लेकिन मैं जानता हूँ, अपने विधायकों में आप-जैसा सूझ-बूझ वाला व्यक्ति कोई भी नहीं…" शपथ वाले दिन भी राज्यपाल से परिचय कराते समय उन्होंने उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा की थी। शपथ वाले दिन राजभवन तक ले जाने के लिए सेक्रेटेरियेट ने अपनी गाड़ी भेजी थी। मृणाल बाबू सोचने लगे, 'उस समय उनके चेहरे पर बालक-जैसी सरलता और निस्पृहता थी, लेकिन आज का चेहरा…'

ड्राइवर ने इतनी जोर से ब्रेक लगाया कि मृणाल बाबू को लगा—

एक्सीडेंट हो गया है। कोई बकरी का बच्चा कार के नीचे से बच गया था। मृणाल बाबू को बकरी के बच्चे पर बड़ी दया आई।

उनकी कार पोर्टिको में जाकर रुकी, बरांडे में बहुत-से लोग जमा थे। उनका मन हुआ, कार से उतरकर वापस लौट चला जाए। वे लोग पहले रोज भी मिल चुके थे। मृणाल बाबू ने उन्हें अगले दिन उत्तर देने का आश्वासन दिया था। उनका ख़याल था कि वे सरकार को उन लोगों की शर्तें मानने के लिए रजामन्द कर लेंगे। एक औद्योगिक बस्ती का मसला था। सरकार जिन झोंपड़ियों को लेना चाहती थी, उनमें रहने वाले मुआवज़े में फ़ैक्टरी की पक्की नौकरी और रहने के लिए औद्योगिक बस्ती में कम किराये पर घर माँगते थे। सरकार को इस बात पर आपत्ति थी। मात्र मुआवजा देकर पीछा छुड़ा लेना चाहती थी। यही मसला शान्तिशरण के जमाने में उठा था, आज भी उसी रूप में मौजूद था। इसी मामले पर बातचीत करने के लिए वे मुख्यमंत्री के पास गए भी थे। प्रतिनिधि-मंडल के चले जाने पर भी उन्होंने सचिव को फोन किया था कि उस मामले की फ़ाइल लेकर चले आएँ। सचिव ने यह कहकर पीछा छुड़ा लिया था, फ़ाइल मुख्यमंत्री के पास है। मृणाल बाबू को उत्तर सुनकर इतने जोर का गुस्सा आ गया था कि सचिव को फोन पर ही डाँटने लगे थे। कोई भी फाइल बिना उनकी मर्जी के मुख्यमंत्री के पास न भेजी जाए। उनकी इस बात का कोई भी उत्तर देना सचिव ने उचित नहीं समझा था।

लेकिन मुख्यमंत्री के व्यवहार से मृणाल बाबू काफ़ी त्रसित थे। औद्योगिक बस्ती के बारे में बात न कर पाने से वे अपने-आपको एक बड़ी अजीब स्थिति में फँसा महसूस कर रहे थे। उन्होंने यही निश्चय किया कि उन लोगों को मुख्यमंत्री के पास भेज देना उचित होगा। बिना शिवनाथ बाबू से सलाह किए किसी बात का आश्वासन देने का अर्थ यही था, कि वे अपने को भी शान्तिशरण वाली उलझन (कॉन्ट्रावर्सी) में डाल लें।

मृणाल बाबू ने जब उन लोगों को मुख्यमंत्री से मिलने का सुझाव दिया तो उनमें से एक विरोधी पार्टी के विधायक और डेपुटेशन के नेता बिगड़ उठे, "आप भी शान्तिशरण-जैसी ही बातें कर रहे हैं। आखिर विभाग आपके पास है या मुख्यमंत्री के! मुख्यमंत्री कहते हैं, आप लोग शान्तिशरण को तो बेईमान और कमअक्ल समझते थे। अब तो मैंने विधानसभा के सबसे ईमानदार और आप लोगों के विश्वासपात्र को उसी विभाग का मन्त्री बना दिया। अब भी आप मेरे पास ही दौड़ते हैं···" मृणाल बाबू खामोश-से खड़े रह गए। उनको लगा दरवाजा खोलते हुए किवाड़ की चूल निकल गई है। मन हुआ साफ कह दें, 'मैं तो नाम का मिनिस्टर हूँ···' लेकिन सबके सामने अपने मुँह से यह स्वीकार करना उन्हें अपमानजनक-सा लगा। अतः यही उत्तर देना उचित समझा, "अच्छा, आप निश्चिन्त रहें···अगर मैं कुछ भी कर सकूँगा तो जरूर करूँगा···" नमस्कार करके अन्दर चले गए।

मृणाल बाबू को ऐसा अनुभव हो रहा था कि उन्हें किसी खासतौर से तैयार की गई स्थिति में फिट कर दिया गया है। एक बार फिर त्यागपत्र देने की बात दिमाग में आई। 'लेकिन···' यह लेकिन उन्हें पहाड़ की ऊँचाई-जैसा लगा। वह उस सम्पूर्ण स्थिति की कल्पना कर गए जो त्यागपत्र देने से उत्पन्न हो सकती है। अगर शिवनाथ बाबू ने उनके लिए किसी भी स्थिति-विशेष का निर्माण किया है तो भी त्यागपत्र देना उन्हींके पक्ष में होगा। लोग कहेंगे विधान-भवन में तो बड़ा शोर मचाता था···काम करने का वक्त आया तो दुम कटाकर लौंडा शेर बन गया। इस बात का प्रचार इस रूप में भी किया जा सकता है···'त्यागपत्र माँगा गया है।'

उन्होंने मेज पर रखे पेपरवेट को उठा लिया और जोर से घुमाने लगे। अपनी उँगलियों के जरा-से 'ट्विस्ट' पर पेपरवेट का घूमते रहना देखकर वे समझ नहीं पाए कि इस क्रिया को क्या संज्ञा दी जाए।

टेलीफोन-एक्सटेंशन मधुमक्खी की तरह भिनभिनाने लगा। उन्हें

अपने पी० ए० पर गुस्सा आया, क्यों नहीं उसने मना कर दिया। मुझे सूचित करने की क्या जरूरत थी? अब देखिए 'बजर' दबा देना है। लोग समझते हैं 'मिनिस्टर हैं'···मेरी सिफारिश से न जाने क्या से क्या हो सकता है।' उनका मन हुआ वे रिसीवर को उठाकर बिना सुने ही रख दें। लेकिन चपरासी ने आकर बताया, "सरकार, पी० ए० साहब ने कहलवाया है, मुख्यमंत्रीजी बात करना चाहते हैं···" रिसीवर उठाना मृणाल बाबू को मनों वजनी वस्तु उठाने के समान लगा। उधर से शिवनाथ बाबू स्वयं बोल रहे थे। उन्होंने दो ही वाक्य कहे, "जरा चले आइए, जरूरी बातें करनी हैं···" रिसीवर रख दिया। स्वर अपेक्षाकृत नरम था।

मृणाल बाबू ने आक्रोश के साथ दोहराया, 'जरूरी काम है···।'

कमरे से बाहर आए। सामने पी० ए० वाले कमरे में ड्राइवर, चपरासी, शैडो (सुरक्षा-अधिकारी) सब जमा थे, कहकहे लगा-लगाकर बातें कर रहे थे। मृणाल बाबू गुस्से से काँप उठे, सीधे पी० ए० के कमरे में पहुँचकर पी० ए० पर बिगड़ने लगे, "आपको शर्म नहीं आती···इन लोगों के साथ बैठकर हँसी-ठट्ठा करते हैं। अपनी पोजीशन का खयाल रखना चाहिए।" पी० ए० साहब पर डाँट पड़ती देखकर सब लोग दूसरे दरवाज से निकलकर अपनी-अपनी जगह पर पहुँचकर मुस्तैदी से खड़े हो गए। ड्राइवर कार पोंछने लगा, शैडो बैंच पर जा बैठा, चपरासी अन्दर चला गया।

कार चलाते हुए ड्राइवर को बराबर लग रहा था कि अब मृणाल बाबू की डाँट पड़ी। ड्राइवर के बराबर में बैठा शैडो भी थोड़ा आतंकित था। लेकिन मृणाल बाबू का मन शिवनाथ बाबू के कुछ देर पहले वाले व्यवहार को लेकर अत्यधिक त्रसित था। वे सोच रहे थे, अगर शिवनाथ बाबू इस समय ठीक मूड में होंगे तो वे जरूर इस बात को कहेंगे।

मुख्यमंत्री की कोठी पर पहुँचकर वे बरांडे में ही ठिठक गए, ए० तुरन्त दौड़ा हुआ आया और बड़े सम्मान के साथ ड्राइंग

गया। क्षणभर को मृणाल बाबू ने इस आवभगत का और सुबह आधा घण्टे तक लॉन में टहलने वाली स्थिति के साथ मिलान किया। लेकिन सामने ही दीवान पर शिवनाथ बाबू बायीं कोहनी गाव-तकिये से टिकाए तिरछे बैठे हुए थे। बायाँ घुटना पट लेटा हुआ था और दाहिना घुटना नब्बे डिग्री के कोण पर खड़ा था। उन्होंने विस्तृत-सी मुस्कान के साथ कहा, "आइए।" दायें हाथ से सोफे की तरफ इशारा कर दिया। मृणाल बाबू चुपचाप बैठ गए।

"आपने अभी भोजन तो नहीं किया होगा?" शिवनाथ बाबू ने मुस्कराते हुए स्नेहपूर्वक पूछा।

"जी नहीं, लौटकर ही करूँगा।"

"आज मेरे साथ ही भोजन कीजिए…जब से विदेश से लौटा हूँ, पल-भर की फुरसत नहीं मिली। सुबह भी आपसे बात नहीं कर पाया। बाद में मुझे बहुत बुरा लगा। दरअसल एक फाइल देखकर मेरा दिमाग इतना खराब हो गया कि…आप बुरा न मानें। कभी-कभी मानसिक तनाव की स्थिति में बड़ी अजीब-अजीब हरकतें कर बैठता हूँ।" अन्तिम वाक्य पर उन्होंने अधिक ज़ोर दिया और मुस्कराए भी।

मृणाल बाबू को उस समय उनके साथ भोजन करना उचित नहीं लगा। बहाना बना दिया। "मैंने कुछ लोगों को घर पर आमन्त्रित किया है…।"

शिवनाथ बाबू ने और भी सरल होकर कहा, "ठीक है, आपकी दावत हम पर ड्यू रही।" उस समय उनके चेहरे पर ठीक वैसा ही भाव आ गया था जैसा उस समय था, जब वे उन्हें मन्त्री-पद के लिए आमन्त्रित करने उनके फ्लैट पर ही गए थे।

"हाँ, शायद आप शाम के बारे में कुछ कह रहे थे…सुबह। मैं उसे खूब जानता हूँ…" शिवनाथ बाबू बड़ी ज़ोर से हँस दिए।

"आपने एक कहानी सुनी है—एक चालाक भेड़िया नदी के किनारे बैठा अपनी डींग मार रहा था—मैंने तरबूजे का पूरा खेत खा डाला।

मगरमच्छ को यह बात निहायत बेईमानी की लगी। जब भेड़िया पानी पीने के लिए झुका तो मगरमच्छ ने झट भेड़िये का मुंह पकड़ लिया और बोला, "निकाल खरबूजे का खेत, अकेला खा गया?"

"भेड़िया जोर से हँस दिया और बोला, निकल वे खरबूजे के खेत! पीछे के रास्ते से। मगरमच्छ पीछे की तरफ़ लपका तो भेड़िया गायब था।"

शिवनाथ बाबू द्वारा सुनाई गई इस कहानी पर मृणाल बाबू को हँसी आ गई। लेकिन शिवनाथ बाबू गम्भीर होकर बोले, "आप नए-नए आदमी हैं, धीरे-धीरे समझने की कोशिश कीजिए···आप इन अफ़सरों के रास्ते नहीं जानते···"

अपने लिए 'नए-नए' विशेषण का प्रयोग उन्हें पसन्द नहीं आया। दबी आवाज में बोले, "बाबूजी, आखिर मेरा नयापन कब तक बना रहेगा। आपके अफ़सर भी मुझे नौसिखिया ही समझते हैं।" कहकर मृणाल बाबू को लगा उन्होंने अपनी बिसात से ज्यादा बात कह दी है। अतः मुस्कराकर बात को हल्का करने का प्रयत्न किया।

शिवनाथ बाबू के चेहरे पर सुबह वाली कठोरता फिर उद्भासित हो गई।

"मृणाल बाबू, आपको मैं राजनीतिज्ञ मान बैठा था। लेकिन आप तो भावुक बालक निकले, मिठाई पाकर हँस देते हैं जरा-सी चाट खाकर रोने लगते हैं। राजनीतिज्ञ लोहे के समानधर्मा होते हैं।···लोहा जब तक ठंडा रहता है चोट करने की स्थिति में रहता है···।"

शिवनाथ बाबू कुछ और भी कहते, परन्तु मिस्टर राय के एकाएक अन्दर चले आने के कारण खामोश हो गए। मृणाल बाबू को अपने-आपको उस तनाव की स्थिति से वापस लाने में कुछ समय लगा लेकिन वे सोचने लगे, 'मंत्री होकर भी शिवनाथ बाबू से मिलने के लिए मुझे आज्ञा लेनी पड़ती है। मिस्टर राय सचिव होकर भी, अपने मन्त्री के बैठे हुए, बेहिचक चले आते हैं···"

शिवनाथ बाबू मिस्टर राय से डाँटते हुए बोले, "मिस्टर राय, मैं आदेशों के पालन को अधिक महत्त्व देता हूँ। मेरे द्वारा नियुक्त किया गया सभा-सचिव भी मुख्यमंत्री है। जनता का प्रत्येक प्रतिनिधि सरकार का अभिन्न अंग है। जो शिकायतें मैंने सुनी हैं, भविष्य में उनको दोहराया जाना मुझे पसन्द नहीं होगा। शासन के मामले में भी किसी तरह का हस्तक्षेप मेरे लिए असहनीय है...।"

अन्तिम वाक्य कहते समय मुख्यमन्त्री ने मृणाल बाबू की ओर देख लिया था। कुछ रुककर पुन. कहा, "जनता के अधिकारों का दायित्व मुख्यमंत्री पर है—वह अपने अधिकारों को ही मन्त्रियों, सचिवों यानी पूरी सरकार के अंगों में आवश्यकतानुसार बाँटता है। लेकिन किसी की भी जरा-सी चूक की जवाबदेही मुख्यमन्त्री से होती है..."

शिवनाथ बाबू बोलते-बोलते रुक गए। मृणाल बाबू और मिस्टर राय पर बारी-बारी से नज़र डाली। दोनों नज़रों में अन्तर ज़रूर था, परन्तु मृणाल बाबू को लगा जैसे मिस्टर राय पर पड़ने वाली उस डाँट में उनका भी बराबर का हिस्सा है। अन्तर उतना ही था कि मिस्टर राय गर्दन झुकाए खड़े थे और मृणाल बाबू उनके बराबर वाले सोफे पर बैठे थे।

शिवनाथ बाबू ने मिस्टर राय से उसी टोन में पूछा "आप फाइल लाए ?"

मिस्टर राय ने अपनी बगल से फाइल निकालकर उनकी ओर सादर बढ़ा दी। हाथ में लेते हुए बिना उसकी ओर देखे मुख्यमन्त्री ने कहा "अब आप जा सकते हैं, लेकिन मेरी बात का ध्यान रखिए।"

मृणाल बाबू ने देखा, मिस्टर राय ड्राइंगरूम के दरवाज़े से निकलते हुए हल्का-सा मुस्कराए हैं। उनके बाहर चले जाने पर शिवनाथ बाबू ने वही फ़ाइल मृणाल बाबू की ओर बढ़ा दी और कहा, "कल आपको ही विधान सभा में उत्तर देना है।" उनके कथन में आज्ञा का स्वर भी था।

मृणाल बाबू गर्दन नीची करके फ़ाइल को उलट-पुलट कर देखने

लगे। उनको लग रहा था कि शिवनाथ बाबू उनके चेहरे पर होने वाली हर प्रतिक्रिया को नोट कर रहे हैं। लेकिन जब शिवनाथ बाबू बोले, "वैसे तो घर भी जाकर इस फ़ाइल को देखा जा सकता है पर आप मेरे सामने ही देख लें। मैं अभी बाहर जा रहा हूँ और सुबह सीधा विधान-सभा पहुँचूंगा—आप भावुक और आदर्शवादी व्यक्ति हैं। कभी बाद में फ़ाइल देखकर आपको लगे, आपके आदर्श टूट रहे हैं—यह मैं पसन्द नहीं करूँगा।"

मृणाल बाबू को लगा कि दूसरे शब्दों में उनसे भी यही कहा जा रहा है—"मैं आदेशों के पालन को अधिक महत्त्व देता हूँ···।"

शिवनाथ बाबू उठ गए, अन्दर जाते हुए पूछा, "आप समझ गए ?"

मृणाल बाबू को नमस्कार करने का अवसर भी नहीं मिल सका।

मृणाल बाबू ने कार में बैठते हुए सोचा—'तनाव की स्थिति में शिवनाथ बाबू अजीब-अजीब हरकतें कर बैठते हैं···।'

घर जाकर जब उन्होंने फ़ाइल खोली, वही औद्योगिक बस्ती वाला मामला था। शब्दों में थोड़े से परिवर्तन के साथ वही उत्तर लिखा था जो शान्तिशरणजी ने विधान-भवन में दिया था।

मृणाल बाबू को लगा, विधान सभा का प्रत्येक सदस्य वही वाक्य दोहरा रहा है जो उन्होंने शान्तिशरण के लिए कहा था कि 'हड्डी चिचोड़ने वाले कुत्ते हमें नहीं चाहिए।'

शिवनाथ बाबू मुस्कराते हुए कह रहे हैं, "शान्तिशरण तो कमअक्ल और बेईमान थे—अब तो विधान सभा का सबसे ईमानदार और आपका विश्वासपात्र मिनिस्टर भी वही बात कह रहा है···।"

• • •

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

• • •